डाली... मोगरे की (ग़ज़लें)

नीरज गोस्वामी

DAALI MOGRE KI, ISBN: 978-93-81520-05-5
Neeraj Goswamy, B-44, Prabhu Marg, Tilak Nagar, Jaipur -302004, Rajasthan
Phone: 141-2621417, Mobile: 9860211911 E-mail: neeraj1950@gmail.com
Blog: http://ngoswami.blogspot.com
प्रकाशक / लेखक की अनुमति के बिना इस पुस्तक को या इसके किसी अंश को संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना या फ़िल्म आदि बनाना कानूनी अपराध है।

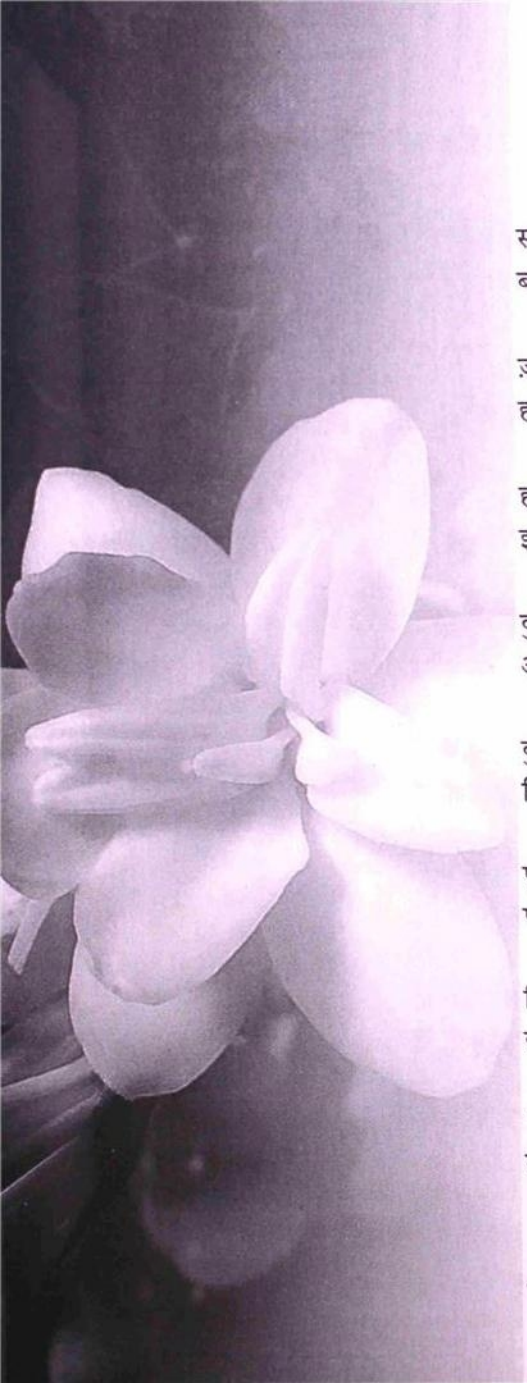

समझेगा दीवाना क्या
बस्ती क्या वीराना क्या

ज़ब्त करो तो बात बने
हर पल बस छलकाना क्या

हार गए तो हार गए
इतना भी झल्लाना क्या

दुश्मन को पहचानोगे ?
अपनों को पहचाना क्या ?

दु:ख से सुख में लज़्ज़त है
बिन दु:ख के सुख पाना क्या

फूलों की सूरत झरिये
पत्तों सा झड़ जाना क्या

किसने कितने घाव दिए
छोड़ो भी, गिनवाना क्या

'नीरज' सुलझाना सीखो
मुद्दों को उलझाना क्या

ooo

होगी तलाश-ए-इत्र ये मछली बज़ार में
निकले तलाशने जो वफ़ा आप प्यार में

चल तो रहा है फिर भी मुझे ये गुमाँ हुआ
थम सा गया है वक़्त तेरे इन्तज़ार में

जब भी तुम्हारी याद ने हौले से आ छुआ
कुछ राग छिड़ गये मेरे मन के सितार में

दुश्वारियाँ हयात[1] की सब भूल भाल कर
मुमकिन नहीं है डूबना तेरे ख़ुमार में

ये तितलियों के रक्स ये महकी हुई हवा
लगता है तुम भी साथ हो अबके बहार में

वो जानते हैं खेल में होता है लुत्फ़ क्या
जिनको न कोई फ़र्क़ हुआ जीत हार में

अपनी तरफ से भी सदा पड़ताल कीजिये
यूँ ही यक़ीं करें न किसी इश्तिहार में

'*नीरज*' किसी के वास्ते ख़ुद को निसार कर
खोया हुआ है किसलिये तू इफ़्तिख़ार[2] में

ooo

हयात=ज़िन्दगी, इफ़्तिख़ार=मान, कीर्ति

हाल बेताब हों रुलाने को
तू मचल क़हक़हे लगाने को

मुश्किलों का गणित ये कैसा है
बढ़ गयीं जब चला घटाने को

दौड़ हम हारते नहीं लेकिन
थम गये थे तुझे उठाने को

साँस लेना मुहाल कर देगा
सर चढ़ाया अगर ज़माने को

हाथ काँधे पे रख दिया तुमने
ग़म गए भाग मुँह छुपाने को

बिजलियों का है ख़ौफ़ गर तारी
भूल जा आशियाँ बनाने को

हमसे दम भर रहे थे रिश्ते का
चल दिए जब कहा निभाने को

सबसे बहतर है चुप रहें *'नीरज'*
जब नया कुछ न हो सुनाने को

ooo

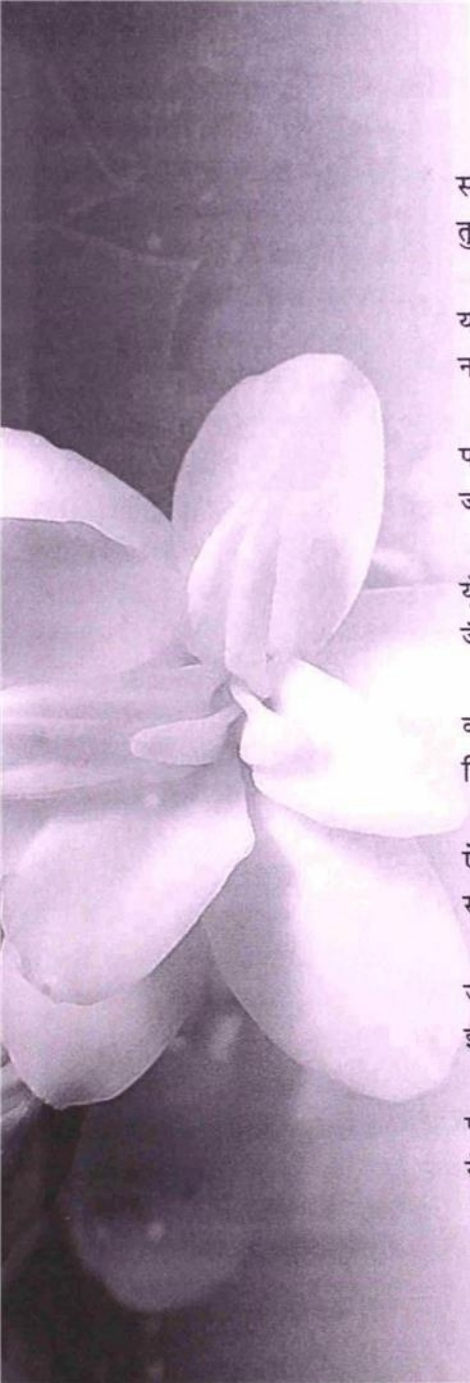

साल दर साल ये ही हाल रहा
तुझसे मिलना बड़ा सवाल रहा

याद करना ख़ुदा को भूल गए
नाम पर उसके बस बवाल रहा

पास था जो नहीं सँभाला वो
जो नहीं उसका ही मलाल रहा

यूँ जहाँ से निकाल सच फेंका
जैसे सालन में कोई बाल रहा

क्या ज़रूरत उन्हें इबादत की
जिनके दिल में तेरा ख़याल रहा

ऐंठता भर के जेब में सिक्के
सोच में जो भी तंगहाल रहा

जान देता जो ग़ैर की ख़ातिर
इस जहाँ में वो लाज़वाल रहा

फूल देखूँ जिधर खिलें *'नीरज'*
ये तेरे साथ का कमाल रहा

ooo

आप आँखों में बस गए जब से
नींद से दुश्मनी हुई तब से

आग पानी हवा ज़मीन फ़लक
और क्या चाहिए बता रब से

पहले लगता था वो भी औरों सा
दिल मिला तो लगा जुदा सब से

जो न समझे नज़र की भाषा को
क्या कहा जाये फिर उसे लब से

हो गया इश्क़ आप से जानम
जब कहा, पूछने लगे कब से

शाम होते ही जाम ढलने लगे
होश में भी मिला करो शब से

शुभ मुहूरत की राह मत देखो
मन में ठानी है तो करो अब से

तुम अकेले तो हो नहीं *'नीरज'*
ज़िन्दगी किसकी कट सकी ढब से

ooo

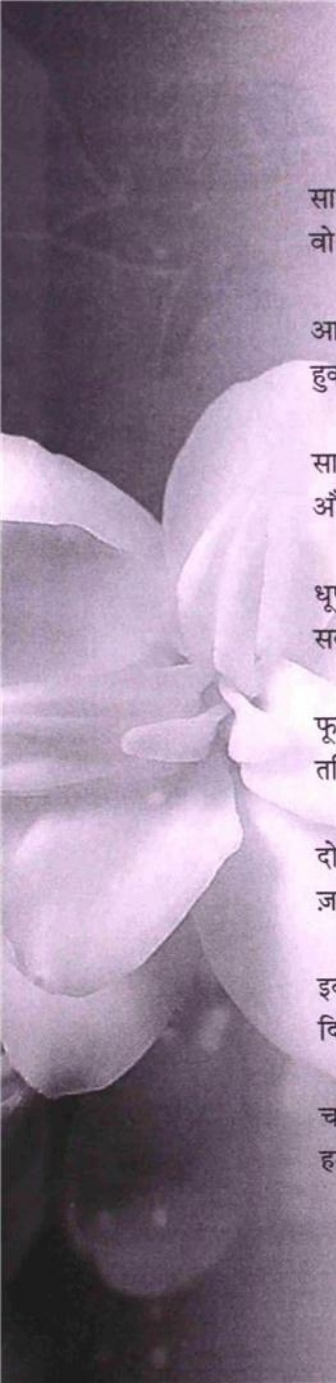

साथ सच के ही जियेंगे जो कहा करते हैं
वो सलीबों को उठा कर ही चला करते हैं

आ पलट देते हैं हम मिल के सियासत जिसमें
हुक्मराँ अपनी रिआया से दग़ा करते हैं

साथ जाता ही नहीं कुछ भी पता है फिर क्यूँ
और मिल जाये हमें रब से दुआ करते हैं

धूप भी आये हवाओं को लिए साथ जहाँ
सब उसी घर की तमन्ना में जिया करते हैं

फूल हाथों में, तबस्सुम को खिला होंठों पर
तल्ख़ियाँ सबसे छुपाया यूँ सदा करते हैं

दोष आँधी को भले तुमने दिये हैं लेकिन
ज़र्द पत्ते तो यूँ ही टूट गिरा करते हैं

इक ग़ुज़ारिश है कि तुम इनको सँभाले रखना
दिल के रिश्ते हैं ये मुश्किल से बना करते हैं

चाह मंज़िल की हमें क्यूँ हो बताओ *'नीरज'*
हमसफ़र बन के मेरे जब वो चला करते हैं

ooo

मिल गए हैं रहज़नों से लूटने के वास्ते
मुल्क के चुनकर्ये कैसे आपने रहबर दिए

जिस शजर[1] ने डालियों पर देखिए फल भर दिए
हर बशर[2] ने आते-जाते उसको बस पत्थर दिए

रब की नज़रों में सभी इक हैं तो उसने क्यों भला
एक को पत्थर दिए और एक को गौहर दिए

गुल हमेशा चाहता हमसे रहा बदले में वो
जिसने हमको हर क़दम पर बेवजह नश्तर दिए

खो रहे हैं क्यूँ अदावत[3] में उन्हें, ये सोचिये
प्यार करने के ख़ुदा ने जो हमें अवसर दिए

मिल गए हैं रहज़नों[4] से लूटने के वास्ते
मुल्क को चुनकर ये कैसे आपने रहबर दिए

कुछ नहीं देती है ये दुनिया किसी को मुफ़्त में
नींद ली बदले में जिसको रेशमी बिस्तर दिए

ज़िन्दगी बख़्शी ख़ुदा ने माना के *'नीरज'* हमें
पर लगा हमको कि जैसे खीर में कंकर दिए

ooo

1 शजर= पेड़, 2 बशर =इंसान, 3 अदावत = दुश्मनी, 4 रेहज़नो =लुटेरों

गुफ़्तगू भी कभी करा कीजे
दोस्त है दिल न यूँ डरा कीजे

बात दिल की कहो ज़माने से
बेवजह घुट के मत मरा कीजे

जब सुकूँ सा ज़रा लगे दिल में
तब दबी चोट को हरा कीजे

इक ग़ुज़ारिश है याद जब आओ
आँख से मत मेरी झरा कीजे

इल्तिजा बस यही करूँ रब से
मैं हूँ खोटा मुझे खरा कीजे

थाम लेगा यक़ीं नहीं फिर भी
हाथ उसकी तरफ ज़रा कीजे

वो है ख़ुशबू न बाँधिए 'नीरज'
उसको साँसों में बस भरा कीजे

ooo

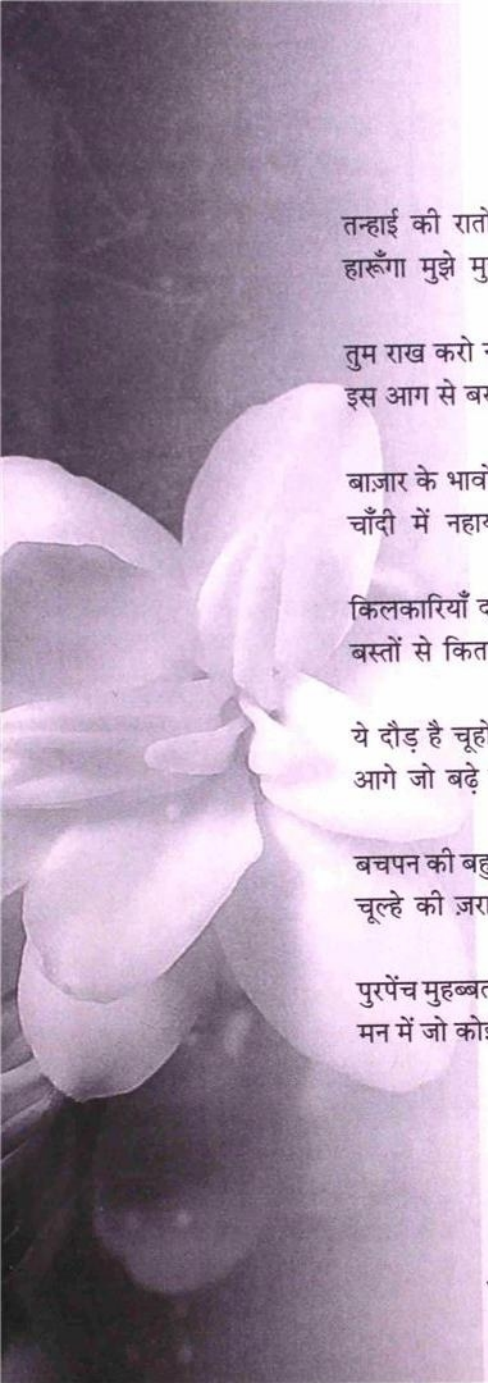

तन्हाई की रातों में कभी याद न आओ
हारूँगा मुझे मुझसे ही देखो न लड़ाओ

तुम राख करो नफ़रतें जो दिल में बसी हैं
इस आग से बस्ती के घरों को न जलाओ

बाज़ार के भावों पे नज़र जिसकी टिकी है
चाँदी में नहाया न उसे ताज दिखाओ

किलकारियाँ दबती हैं कभी ग़ौर से देखो
बस्तों से किताबों का ज़रा बोझ घटाओ

ये दौड़ है चूहों की यही इसका नियम है
आगे जो बढ़े सारे उसे मिल के गिराओ

बचपन की बहुत याद तुम्हें आएगी फिर से
चूल्हे की ज़रा आंच पे रोटी तो पकाओ

पुरपेंच मुहब्बत की हैं गलियाँ बड़ी *'नीरज'*
मन में जो कोई डर है तो मत पाँव बढ़ाओ

ooo

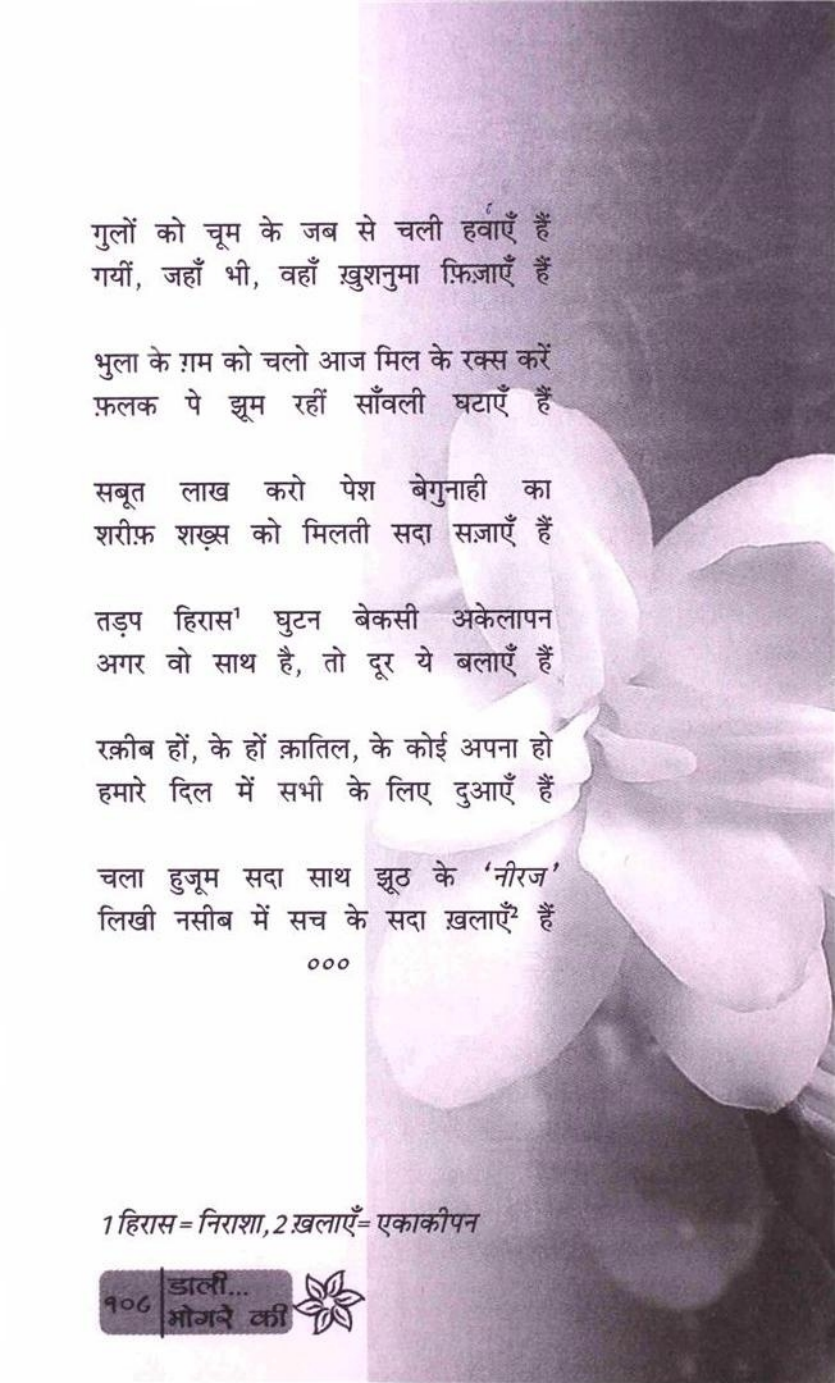

गुलों को चूम के जब से चली हवाएँ हैं
गयीं, जहाँ भी, वहाँ ख़ुशनुमा फ़िज़ाएँ हैं

भुला के ग़म को चलो आज मिल के रक्स करें
फ़लक पे झूम रहीं साँवली घटाएँ हैं

सबूत लाख करो पेश बेगुनाही का
शरीफ़ शख़्स को मिलती सदा सज़ाएँ हैं

तड़प हिरास[1] घुटन बेकसी अकेलापन
अगर वो साथ है, तो दूर ये बलाएँ हैं

रक़ीब हों, के हों क़ातिल, के कोई अपना हो
हमारे दिल में सभी के लिए दुआएँ हैं

चला हुजूम सदा साथ झूठ के *'नीरज'*
लिखी नसीब में सच के सदा ख़लाएँ[2] हैं

ooo

1 हिरास = निराशा, 2 ख़लाएँ = एकाकीपन

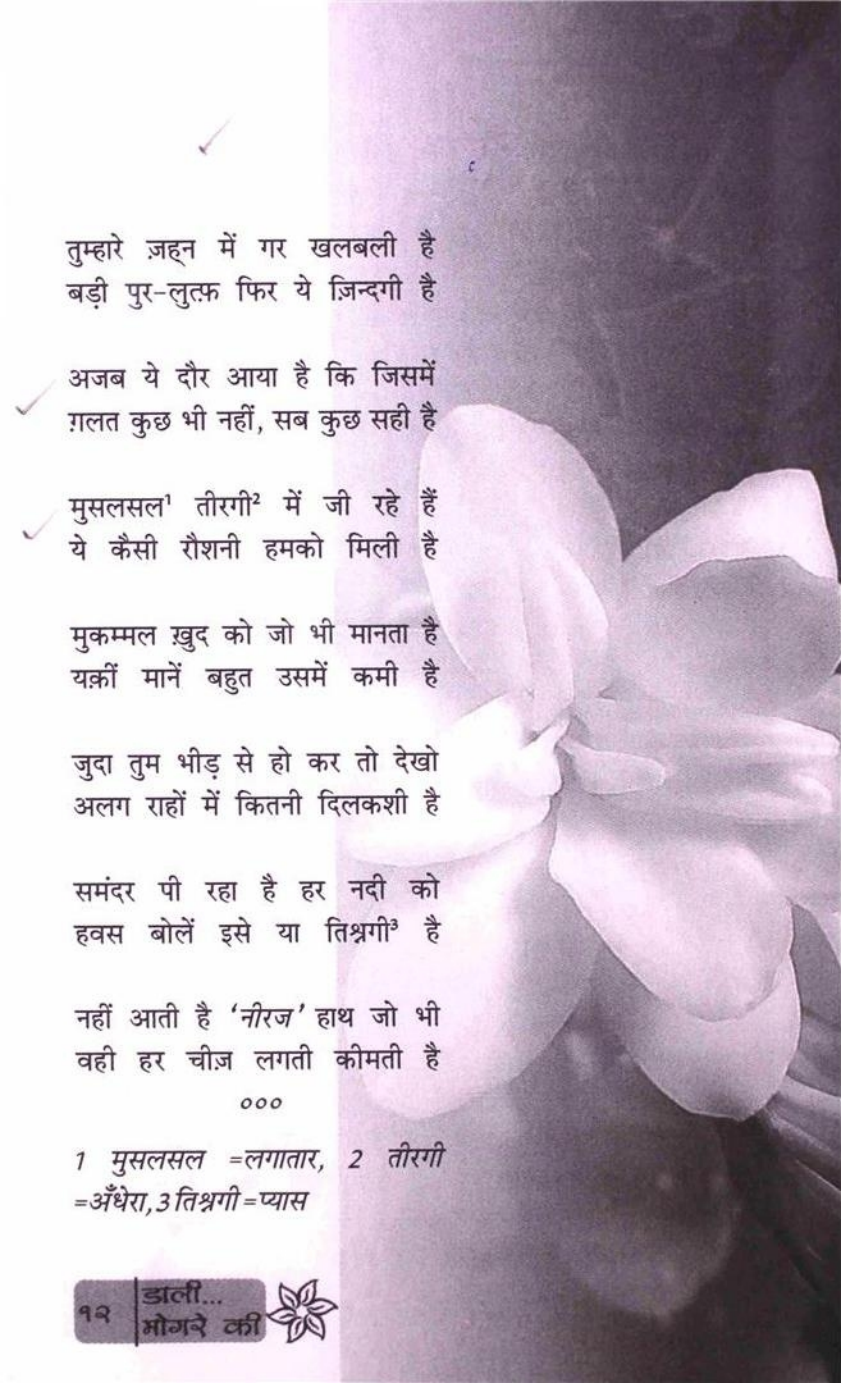

तुम्हारे ज़हन में गर खलबली है
बड़ी पुर-लुत्फ़ फिर ये ज़िन्दगी है

अजब ये दौर आया है कि जिसमें
ग़लत कुछ भी नहीं, सब कुछ सही है

मुसलसल[1] तीरगी[2] में जी रहे हैं
ये कैसी रौशनी हमको मिली है

मुकम्मल ख़ुद को जो भी मानता है
यक़ीं मानें बहुत उसमें कमी है

जुदा तुम भीड़ से हो कर तो देखो
अलग राहों में कितनी दिलकशी है

समंदर पी रहा है हर नदी को
हवस बोलें इसे या तिश्नगी[3] है

नहीं आती है *'नीरज'* हाथ जो भी
वही हर चीज़ लगती कीमती है

ooo

1 मुसलसल =लगातार, 2 तीरगी =अँधेरा, 3 तिश्नगी =प्यास

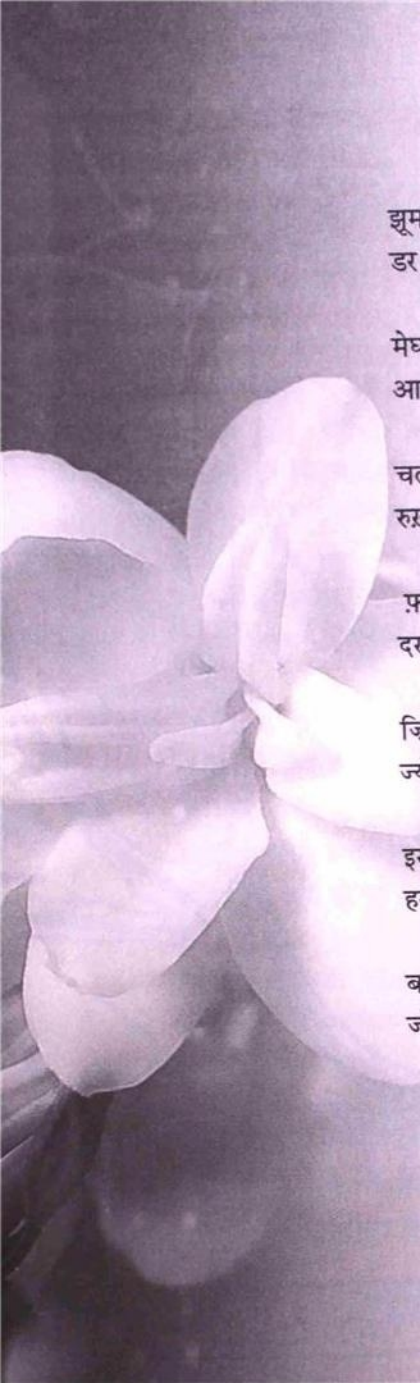

झूम कर आई घटा घनघोर है
डर रहा हूँ घर मेरा कमज़ोर है

मेघ छाएँ तो मगन हो नाचता
आज के इन्साँ से बेहतर मोर है

चल दिया करते हैं बुजदिल उस तरफ
रुख़ हवाओं का जिधर की ओर है

फ़ासलों से क्यों डरें हम जब तलक
दरमियाँ यादों की पुख़्ता डोर है

ज़िन्दगी में आप आये इस तरह
ज्यूँ अमावस बाद आती भोर है

इस जहाँ में तुम अकेले ही नहीं
हर किसी के दिल बसा इक चोर है

बात नज़रों से ही होती है मियाँ
जो ज़बाँ से हो वो *'नीरज'* शोर है

ooo

झाँक लें इक बार पहले अपने अंदर भी अगर
फिर नहीं आयें नज़र शायद किसी में ख़ामियाँ

दिल मिले दिल से फ़क़त इतना ज़रूरी है मियाँ
क्यूँ मिलाते फिर रहे हो प्यार में तुम राशियाँ

बारिशों का है तक़ाज़ा, सब तकल्लुफ़ छोड़कर
दें सदा बचपन को हम, फिर से करें अठखेलियाँ

घर तुम्हारा भी उड़ा कर साथ में ले जाएँगीं
मत अदावत की चलाओ, मुल्क में तुम आँधियाँ

किसलिए मग़रूर इतने आप हैं, मत भूलिए
ख़ाक में इक दिन मिलेंगी आप जैसी हस्तियाँ

आ गए वो सैर को, गुलशन में नंगे पाँव जब
झुक गयीं लेने को बोसा, मोगरे की डालियाँ

ख़ुशबुएँ लेकर हवाएँ ख़ुद-ब-ख़ुद आ जाएँगी
खोल कर देखो तो घर की बंद सारी खिड़कियाँ

झाँक लें इक बार पहले अपने अंदर भी अगर
फिर नहीं आयें नज़र, शायद किसी में खामियाँ

चाहते हैं सब, मिले फ़ौरन सिला *'नीरज'* यहाँ
डालता है कौन अब, दरिया में करके नेकियाँ

ooo

तन्हाई में गाया कर
ख़ुद से भी बतियाया कर

हर राही उस से गुज़रे
ऐसी राह बनाया कर

रिश्तों में गर्माहट ला
मुद्दे मत गरमाया कर

चाँद छुपे जब बदली में
तब छत पर आ जाया कर

ज़िन्दा गर रहना है तो
हर ग़म में मुस्काया कर

नाजायज़ जब बात लगे
तब आवाज़ उठाया कर

मीठी बातें याद रहें
कड़वी बात भुलाया कर

'*नीरज*' सुन कर सब झूमें
ऐसा गीत सुनाया कर

ooo

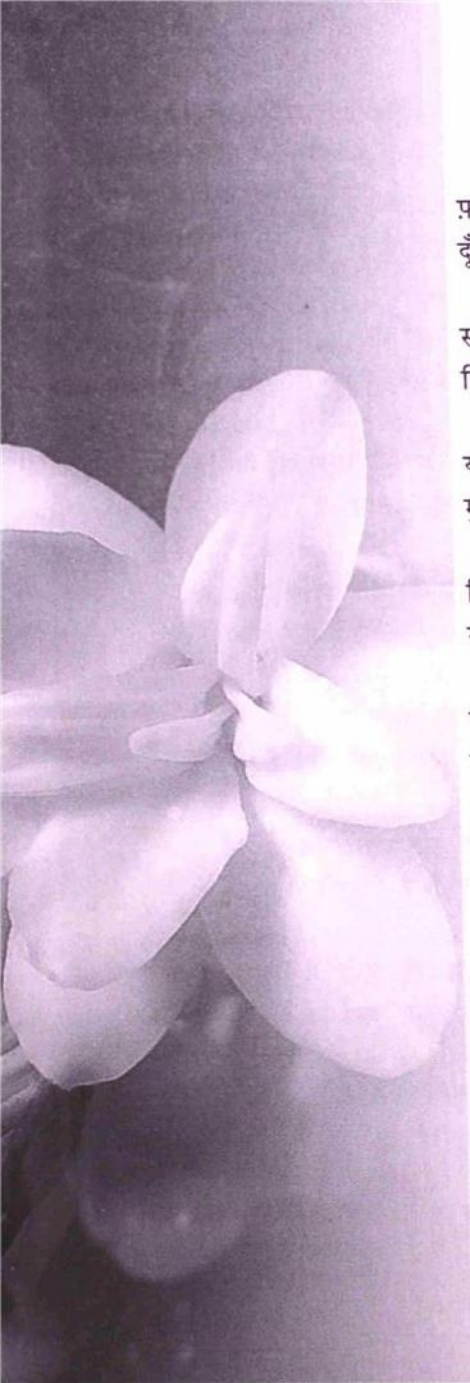

फ़ासले मत बढ़ा इस क़दर
दूँ सदाएँ तो हों बेअसर

सोच मत, ठान ले, कर गुज़र
जिंदगी है बड़ी मुख़्तसर

याद उनकी हमें आ गयी
मुस्कुराए, गयी आँख भर

बिन डरे सच कहें किस तरह
सीखिए आईनों से हुनर

गर सभी के रहें सुर अलग
टूटने से बचेगा न घर

राह, मंज़िल हुई उस घड़ी
तुम हुए जिस घड़ी हमसफ़र

घर जला कर मेरा झूमते
दोस्तों की तरह ये शरर

हैं सभी पास *'नीरज'* किसे
ढूँढ़ती है मेरी ये नज़र

ooo

संजीदगी, वाबस्तगी[1], शाइस्तगी[2], ख़ुद-आगही[3]
आसूदगी[4], इंसानियत, जिसमें नहीं, क्या आदमी

ये खीरगी[5], ये दिलबरी, ये कमसिनी, ये नाज़ुकी
दो चार दिन का खेल है, सब कुछ यहाँ पर आरिज़ी[6]

हैवानियत हमको कभी मज़हब ने सिखलाई नहीं
हमको लड़ाता कौन है? ये सोचना है लाज़िमी

हर बार जब दस्तक हुई उठ कर गया, कोई न था
तुझको क़सम, मत कर हवा, आशिक़ से ऐसी दिल्लगी

हो तम घना अवसाद का तब कर दुआ उम्मीद की
जलते रहें दीपक सदा क़ायम रहे ये रौशनी

पहरे ज़ुबानों पर लगें, हों सोच पर जब बंदिशें
जम्हूरियत की बात तब लगती है कितनी खोखली

फ़ाक़ाज़दा इन्सान को तुम ले चले दैरो-हरम
पर सोचिये कर पायेगा *'नीरज'* वहाँ वो बंदगी

ooo

1 वाबस्तगी =सम्बन्ध, 2 शाइस्तगी=सभ्यता, 3 ख़ुद-आगही=आत्मज्ञान, 4 आसूदगी = संतोष, 5 खीरगी =चमक, 6 आरिज़ी=क्षणिक

दोस्त सब जान से भी प्यारे हैं
जब तलक दूर वो हमारे हैं

जो भी चाहूँ वहीं से मिलता है
माँ के हाथों में वो पिटारे हैं

मुस्कुराते हैं हम तो पी के इन्हें
आप कहते हैं अश्क खारे हैं

जीत का मोल पूछिए उनसे
बाज़ियाँ जो हमेशा हारे हैं

बाज़ुओं पर यक़ीन है जिनको
दूर उनसे कहाँ किनारे हैं

जिनमें शामिल नहीं हो तुम हमदम
वो नज़ारे भी क्या नज़ारे हैं

ज़िन्दगी नाम उन पलों का है
तेरे सिमरन में जो गुज़ारे हैं

दिन अकेले ही काट लो *'नीरज'*
रात में चाँद है सितारे हैं

ooo

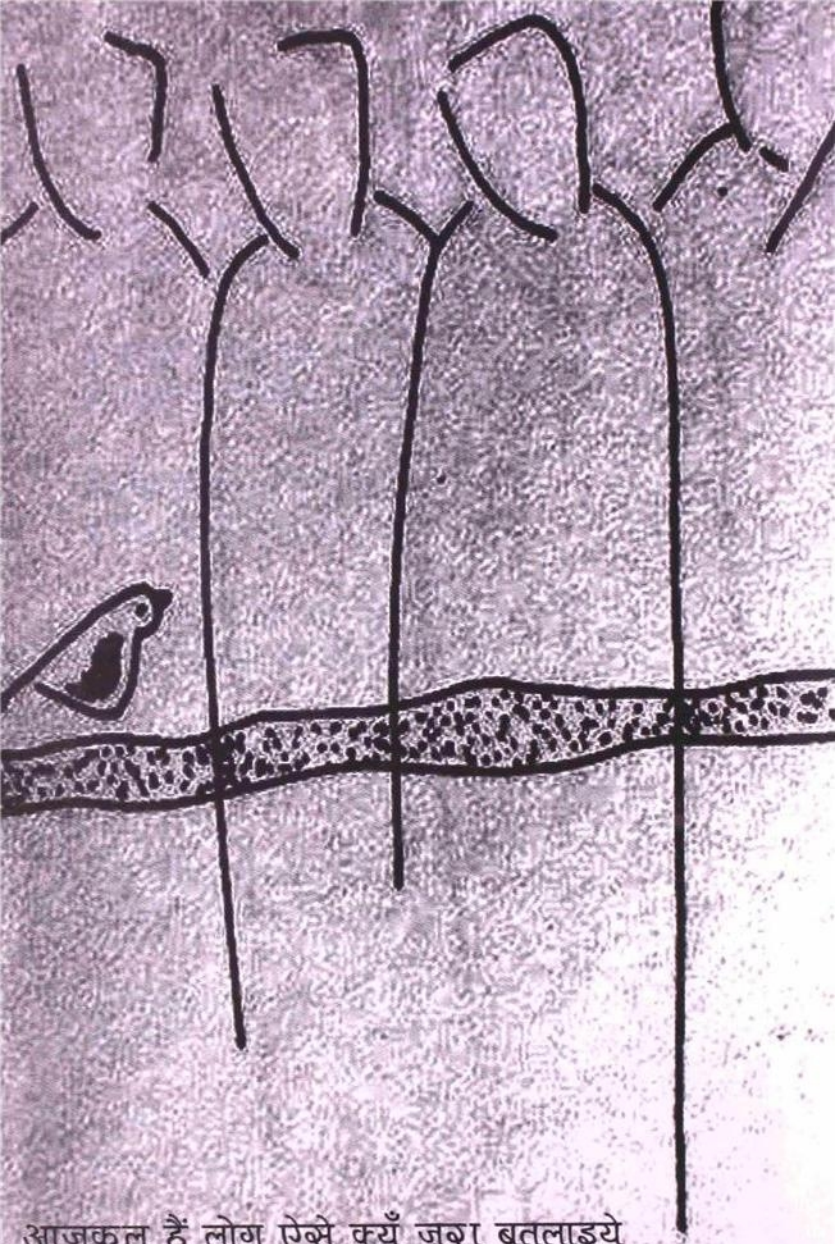

आजकल हैं लोग ऐसे क्यूँ ज़रा बतलाइये
साँस तो लेते हैं पर लगते हैं बस बेजान से

चाहते हैं लौ लगाना आप गर भगवान से
प्यार करना सीखिये पहले हर इक इंसान से

ख़ार के बदले में यारो ख़ार देना सीख लो
गुल दिया करते हैं जो, वो लोग हैं नादान से

आजकल हैं लोग ऐसे क्यूँ ज़रा बतलाइये
साँस तो लेते हैं पर लगते हैं बस बेजान से

एक दिन तन्हा वही पछताएँगे तुम देखना
तौलते रिश्तों को हैं जो फ़ायदे नुकसान से

आप बेहतर है कि मेरे काम ही आएँ नहीं
गर दबाना चाहते हैं बाद में एहसान से

बढ़ के कोई पाँव छूता है बुज़ुर्गों के अगर
लोग रह जाते हैं उसको देख कर हैरान से

ढूँढ़ते ही हल रहे हम उन सवालों का सदा
जो हमें लगते रहे हरदम बड़े आसान से

खेलने के गुर सिखाना तब तलक आसान है
जब तलक हो दूर *'नीरज'* खेल के मैदान से

ooo

नया गीत हो, नया साज़ हो, नया जोश और उमंग हो
नए साल में नए गुल खिलें, नई हो महक नया रंग हो

है जो मस्त अपने ही हाल में, कोई फ़िक्र कल की न हो जिसे
उसे रास आती है ज़िन्दगी, जो कबीर जैसा मलंग हो

वही रंज़िशें वही दुश्मनी, मिला क्या हमें बता जीत से
तेरी हार में मेरी हार है, यही सोच लें तो न जंग हो

करें जो सभी वही हम करें, तो है बेसबब सी ये ज़िन्दगी
है मज़ा अगर करें कुछ नया, जिसे देख ये जहाँ दंग हो

तुझे देख कर मुझे यूँ लगा, कोई संदली सी है शाख़ तू
जो न रह सके तुझे छोड़ कर, मेरा दिल ये जैसे भुजंग हो

हो न लिजलिजा बिना रीढ़ का, है यही दुआ ऐ मेरे ख़ुदा
दे वतन को ऐसा तू रहनुमा, जो दिलेर और दबंग हो

ooo

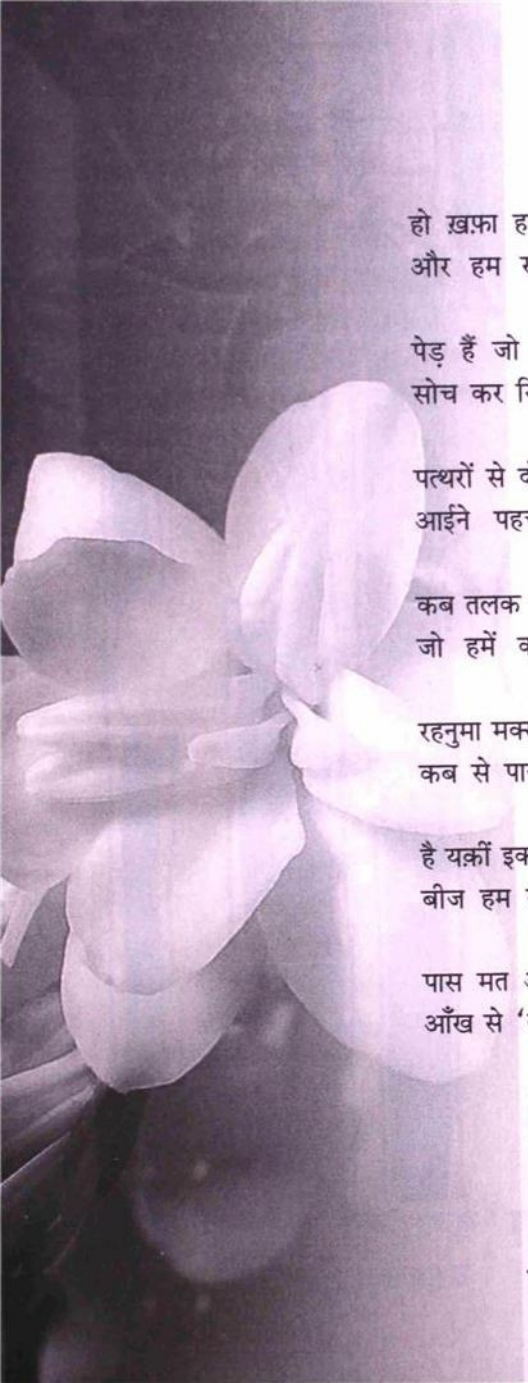

हो ख़फ़ा हमसे वो रोते जा रहे हैं
और हम रूमाल होते जा रहे हैं

पेड़ हैं जो नीम के वो आम देंगे
सोच कर रिश्तों को ढोते जा रहे हैं

पत्थरों से दोस्ती कर ली है जब से
आईने पहचान खोते जा रहे हैं

कब तलक दें फूल उनको ये बताओ
जो हमें काँटे चुभोते जा रहे हैं

रहनुमा मक्खन का वादा करके देखो
कब से पानी ही बिलोते जा रहे हैं

है यक़ीं इक दिन यहीं गुलशन बनेगा
बीज हम बंजर में बोते जा रहे हैं

पास मत आना हमारे, कह रहे जो
आँख से *'नीरज'* वो न्योते जा रहे हैं

ooo

देश के हालात बदतर हैं, सभी ने ये कहा
पर नहीं बतला सका, कोई भी अपनी भूमिका

झूठ, मक्कारी, फ़रेबी हरकतें अख़बार में
रोज पढ़ते सुब्ह हैं, पर शाम को देते भुला

बस गया शहरों में इन्साँ, फ़र्क़ लेकिन क्या पड़ा
आदतें अब भी हैं वैसी, जब बसेरा थी गुफा

इस क़दर धीमा, हमारे मुल्क का क़ानून है
फ़ैसला आने तलक, मुजरिम की भूलें हम ख़ता

छोड़िये फ़ितरत समझना, दूसरे इंसान की
ख़ुद हमें अपनी समझ आती कहाँ है, सच बता

दौड़ता तितली के पीछे, अब कोई बच्चा नहीं
लुत्फ़ बचपन का वो सारा, होड़ में है खो दिया

दूसरों के दुःख से *'नीरज'* जो बशर अनजान है
उसको अपना दुःख हमेशा ही लगा सबसे बड़ा

ooo

जियें ख़ुद के लिये गर हम, मज़ा तब क्या है जीने में
बहे औरों की ख़ातिर जो, है ख़ुशबू उस पसीने में

है जिनके बाज़ुओं में दम, वो दरिया पार कर लेंगे
बहुत मुमकिन है डूबें वो, जो बैठे हैं सफ़ीने[1] में

ये कैसा दौर आया है, सरों पर ताज है उनके
नहीं मालूम जिनको फ़र्क़, पत्थर औ' नगीने में

हमारे दोस्तों की मुस्कुराहट इक छलावा है
है पाया ज़हर अक्सर ख़ूबसूरत आबगीने[2] में

गए तुम दूर जब से, दिल ये कहता है करो तौबा
मज़ा आता नहीं, ख़ुद ही उठा कर ज़ाम पीने में

लगाये टकटकी हम राह पर बैठे रहे सदियों
सुना था लौट आएगा, वो ज़ालिम इक महीने में

सितम सहने की आदत, इस कदर हम को पड़ी *'नीरज'*
कहीं कुछ हो, नहीं अब खौलता है, ख़ून सीने मे

ooo

1 सफ़ीने = नाव , 2 आबगीने = रंगीन काँच की शीशीयाँ

कौन कहता है छुप के होता है
क़त्ल अब दिन दहाड़े होता है

गर पता है तुम्हें तो बतलाओ
इश्क़ कब क्यों किसी से होता है

ढूँढ़ते हो सदा वहाँ उसको
जो हमेशा यहाँ पे होता है

धड़कनें घुँघरुओं सी बजती हैं
दिल जब उसके हवाले होता है

आरज़ू क्यों करें सहारे की
आसमाँ किस सहारे होता है ?

चीख कर क्यों सदायें देते हो
जब असर बिन पुकारे होता है

उम्र ढलने लगी समझ *'नीरज'*
दर्द अब बिन बहाने होता है

ooo

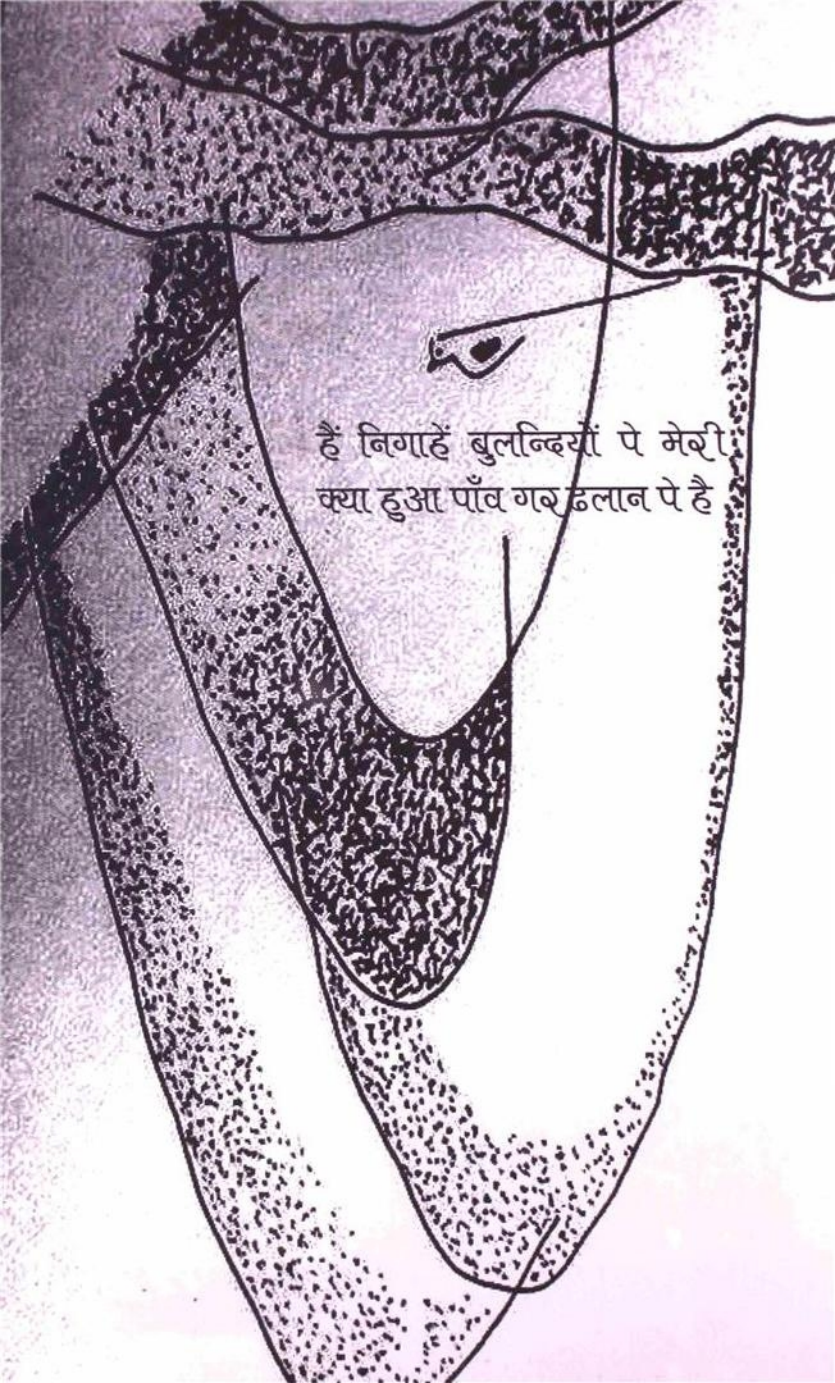
हैं निगाहें बुलन्दियों पे मेरी
क्या हुआ पाँव गर ढलान पे है

फिर परिंदा चला उड़ान पे है
तीर हर शख़्स की कमान पे है

फ़स्ल की अब ख़ुदा ही ख़ैर करे
पासबाँ आजकल मचान पे है

तब बदलना नहीं ग़लत उसको
जब लगे रहनुमा थकान पे है

हैं निगाहें बुलन्दियों पे मेरी
क्या हुआ पाँव गर ढलान पे है

धार शमशीर पर करो अपनी
ज़ुल्म का दौर फिर उठान पे है

शहर के घर में यूँ तो सब कुछ है
पर सुकूँ, गाँव के मकान पे है

बात *'नीरज'* तेरी सुनेंगे सभी
जब तलक चाशनी ज़बान पे है

ooo

ज़बान पर सभी की बात है फ़क़त सवार की
कभी तो बात भी हो पालकी लिए कहार की

गुलों को, तितलियों को किस तरह करेगा याद वो
कि जिसको फ़िक्र रात दिन लगी हो रोज़गार की

बिगड़ के जिसने पा लिया तमाम लुफ़्ते ज़िन्दगी
नहीं सुनेगा फिर वो बात कोई भी सुधार की

वो ख़ुश रहे ये सोच कर सदा मैं हारता गया
किसी के साथ जब लड़ी लड़ाई आरपार की

जिसे भी देखिये इसे वो तोड़ कर के ही बढ़ा
कहाँ रहीं हैं देश में ज़रूरतें कतार की

तुझे पढ़ा हमेशा मैंने अपनी बंद आँखों से
ये दास्तान है नज़र पे रौशनी के वार की

चढ़े जो इस क़दर कि फिर कभी उतर नहीं सके
तलाश ज़िन्दगी में है मुझे उसी ख़ुमार की

ooo

नहीं है अरे ये बग़ावत नहीं है
हमें सर झुकाने की आदत नहीं है

छुपाये हुए हैं वही लोग ख़ंजर
जो कहते किसी से अदावत नहीं है

करूँ क्या परों का अगर इनसे मुझको
फ़लक़ नापने की इजाज़त नहीं है

उठा कर गिराना गिरा कर मिटाना
हमारे यहाँ की रवायत नहीं है

मिला कर निगाहें, झुकाते जो गर्दन
वही कह रहे हैं मुहब्बत नहीं है

बहुत कर लीं पहले ज़माने से हमने
हमें अब किसी से शिकायत नहीं है

करोगे घटाओं का क्या यार *'नीरज'*
अगर भीग जाने की चाहत नहीं है

ooo

मिलेंगी तब हमें सच्ची दुआएँ
किसी के साथ जब आँसू बहाएँ

बहुत बातें छुपी हैं दिल में अपने
कभी तुम पास बैठो तो सुनाएँ

फ़क़ीरों का नहीं घर बार होता
कहाँ इक गाँव ठहरी हैं हवाएँ

हमेंशा जीतता है यार सच ही
बुर्जुगों से सुनी ऐसी कथाएँ

बना लें दोस्त चाहे आप जितने
मगर हरगिज़ न उनको आज़माएँ

बिछड़ कर घर से हम भटके हैं जैसे
गिरे पत्ते शजर से धूल खाएँ

लगा गलने ये चमड़े का लबादा
चलो बदलें, रफ़ू कब तक कराएँ

अजब रिश्ता है अपना तुमसे *'नीरज'*
करें जब याद तुमको मुस्कुराएँ

ooo

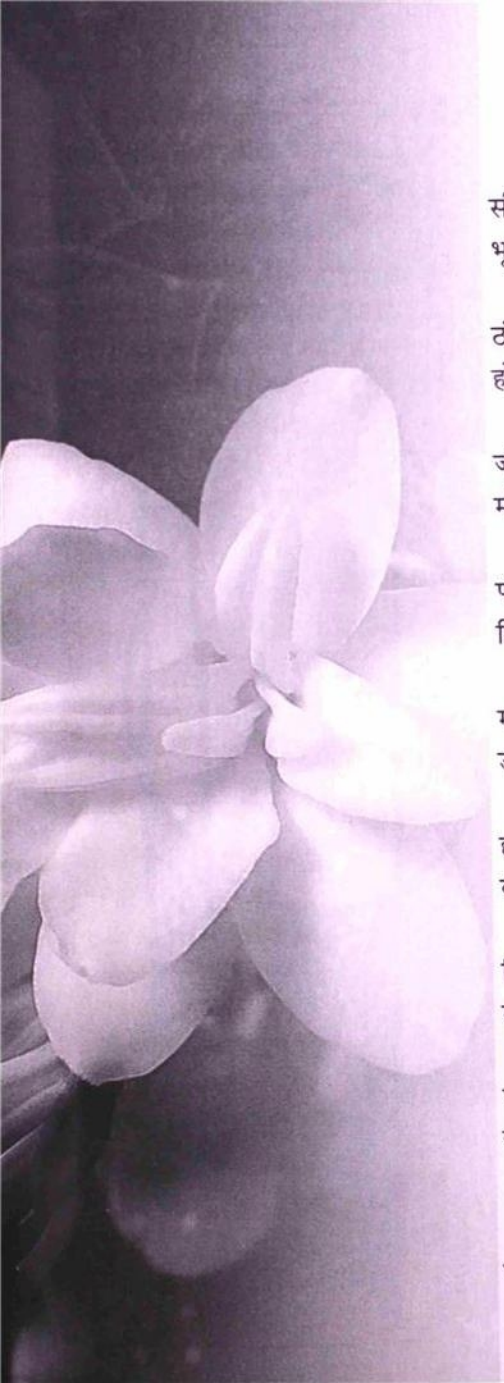

सीधी बातें, सच्ची बातें
भूले सारे अच्छी बातें

ठंडे मन से गर कर लो तो
हो जाती सब नक्की बातें

जीवन में लज्जत ले आतीं
मीठी, तीखी, खट्टी बातें

पीड़ा बढ़ जाती है उसकी
दिल में जिसने रक्खी बातें

मत ले लेना दिल पर अपने
उसकी पक्की कच्ची बातें

हासिल क्या होता है करके
बे मतलब की रद्दी बातें

सिखलाती हैं जीवन जीना
मां की लोरी, पप्पी, बातें

उलझें तो कब सुलझें *'नीरज'*
ज्यों धागे की लच्छी बातें

ooo

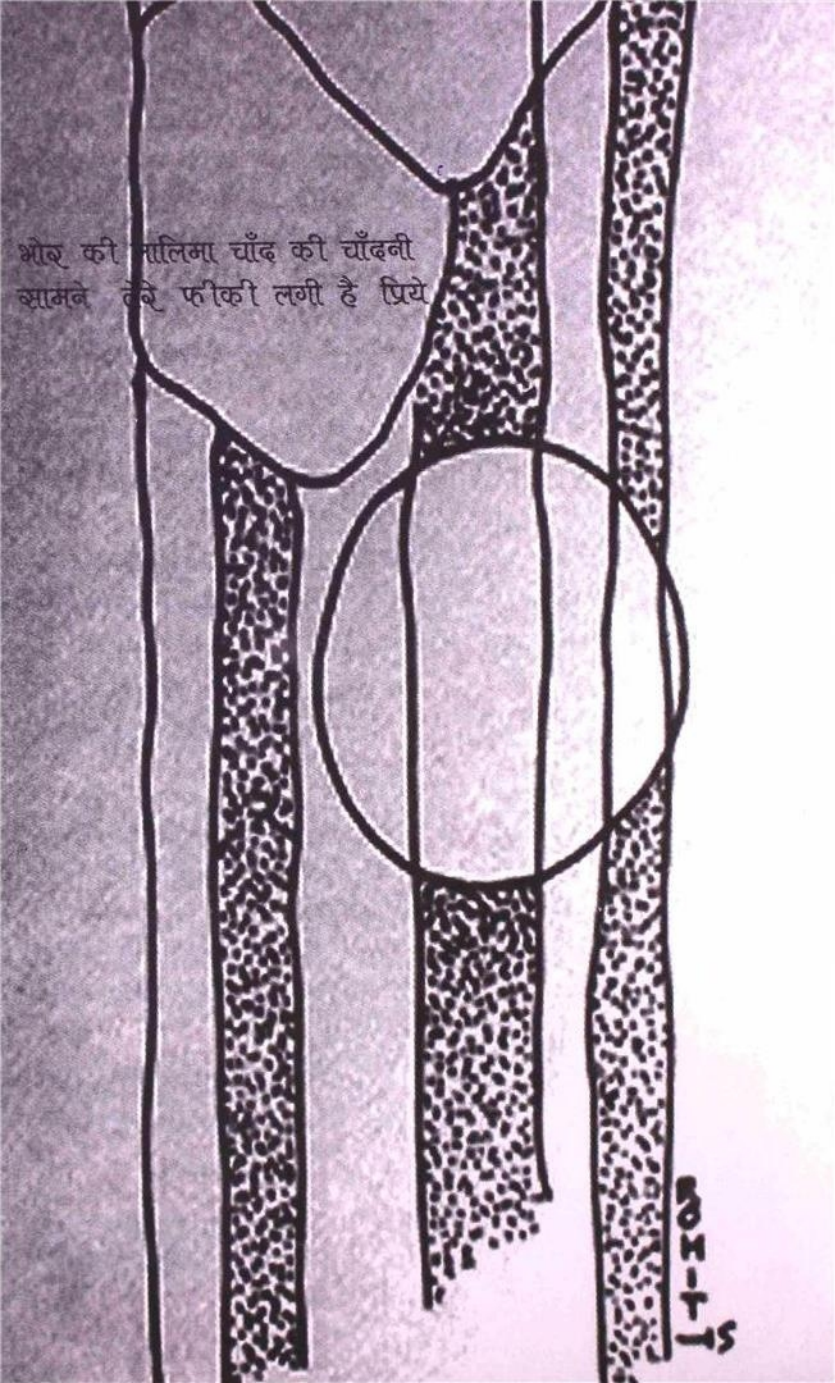
भोर की लालिमा चाँद की चाँदनी
सामने तेरे फीकी लगी है प्रिये

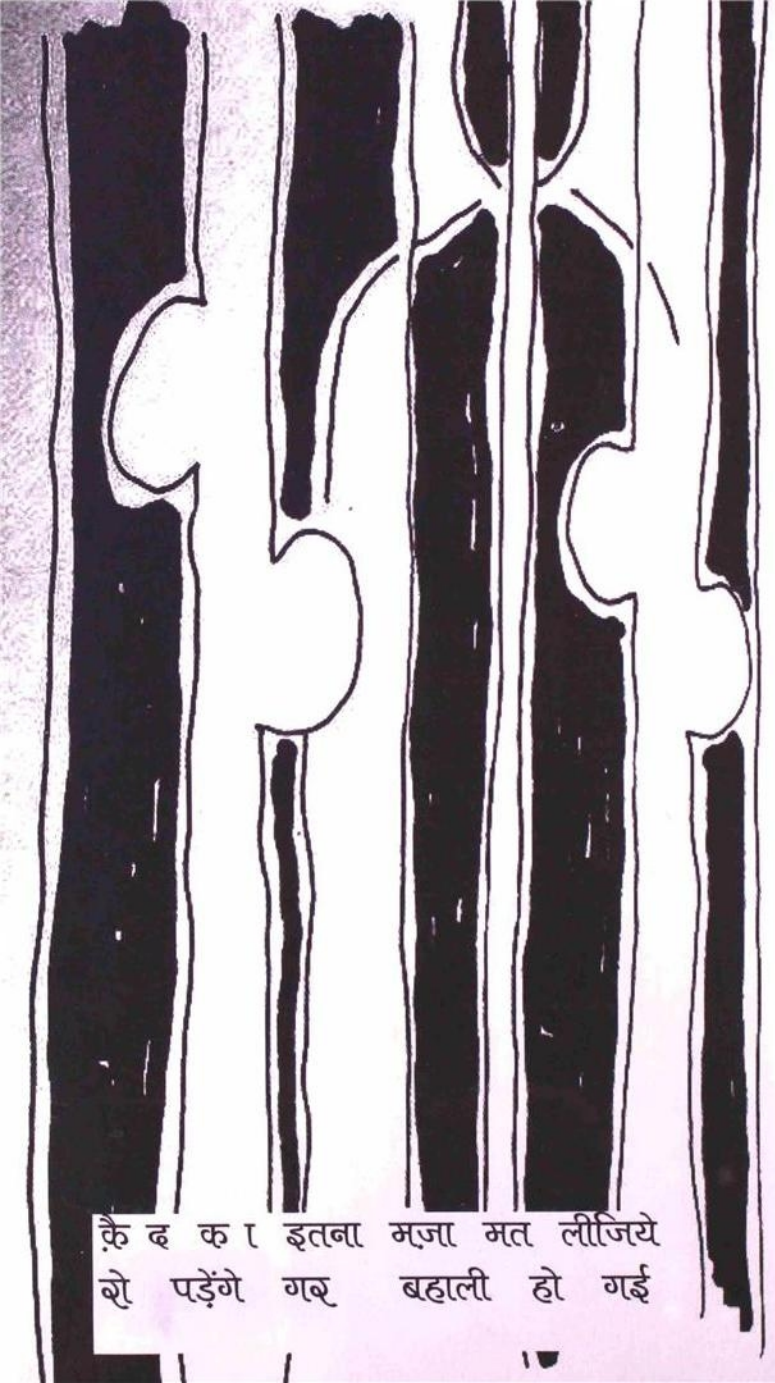
क़ैद का इतना मज़ा मत लीजिये
रो पड़ेंगे गर बहाली हो गई

हर अदा में तेरी दिलकशी है प्रिये
जानलेवा मगर सादगी है प्रिये

भोर की लालिमा चाँद की चाँदनी
सामने तेरे फीकी लगी है प्रिये

लू भरी हो भले या भले सर्द हो
साथ तेरे हवा फागुनी है प्रिये

बिन तेरे बैठ आफिस में सोचा किया
ये सज़ा सी, भी क्या नौकरी है प्रिये

मुस्कुराती हो जब देख कर प्यार से
एक सिहरन सी तब दौड़ती है प्रिये

फूल चाहत के देखो खिले चार सू
प्रीत की अल्पना भी सजी है प्रिये

पड़ गयी तेरी आदत सी अब तो मुझे
और आदत कहीं छूटती है प्रिये ?

मन सरोवर में खुशियों के '*नीरज*' खिले
पास आहट तेरी आ रही है प्रिये

ooo

कोयल की कूक मोर का नर्तन कहाँ गया
पत्थर कहाँ से आये हैं गुलशन कहाँ गया

दड़बों में क़ैद हो गये, शहरों के आदमी
दहलीज़ खो गयी कहाँ, आँगन कहाँ गया

रखता था बाँध कर हमें जो एक डोर से
आपस के वो ख़ुलूस का बंधन कहाँ गया

होती थी फ़िक्र दाग़ न जिस पर कहीं लगे
ढँकता था जो हया को, वो दामन कहाँ गया

बेख़ौफ़ हो के बोलना जब से शुरू किया
सच सुन के मारता था जो संगजन कहाँ गया

फल फूल क्यों रहें हैं चमन में बबूल अब
चंपा गुलाब मोगरा चन्दन कहाँ गया

डूबो किसी के प्यार में इतना कि डूब कर
अहसास तक न हो कभी तन मन कहाँ गया

जो सच नहीं है अब वो दिखाने लगा हमें
बेख़ौफ़ बोलता हुआ दर्पण कहाँ गया

ooo

मेरे बचपन का वो साथी है अभी तक गाँव में
इक पुराना पेड़ बाकी है अभी तक गाँव में

फूल कर कुप्पा हुआ करती थीं जिस पर रोटियाँ
माँ की प्यारी वो अँगीठी, है अभी तक गाँव में

ज़हर सी कड़वी बहुत हैं इस नगर में बोलियाँ
हर ज़बाँ पर गुड़ की भेली, है अभी तक गाँव में

शहर में देखो जवानी में बुढ़ापा आ गया
पर बुढ़ापे में जवानी, है अभी तक गाँव में

कोशिशें उसको उठाने की सभी ज़ाया हुईं
इक अजब सी नातवानी, है अभी तक गाँव में

सारे त्योहारों पे मिल कर मौज मस्ती नाचना
रोज़ पनघट पे ठिठौली, है अभी तक गाँव में

पेट भरता था जिसे खा कर, मगर ये मन नहीं
दूध वाली वो जलेबी, है अभी तक गाँव में

जिस्म की पुरपेंच गलियों में कभी खोया नहीं
प्यार तो *'नीरज'* रुहानी है अभी तक गाँव में

०००

जड़ जिसने थी काटी प्यारे
था अपना ही साथी प्यारे

सच्चा तो सूली पर लटके
लुच्चे को है माफ़ी प्यारे

उल्टी सीधी सब मनवा ले
रख हाथों में लाठी प्यारे

सोचो क्या होगा गुलशन का
माली रखते आरी प्यारे

भोला कहने से अच्छा है
दे दो मुझको गाली प्यारे

मन अमराई याद है कोयल
जब जी चाहे गाती प्यारे

तेरी पीड़ा से वो तड़पे
तब है सच्ची यारी प्यारे

तन्हा जीना ऐसा *'नीरज'*
ज्यों बादल बिन पानी प्यारे

ooo

मुम्बइया जुबान की ग़ज़ल

मुझे क्या सोच कर तू यूँ डराता है, बता ढक्कन,
डरूँगी मैं धमाकों से ? हुआ पागल है क्या ढक्कन

ऐ हलकट सुन, अगर है नाज़ ताक़त पर तुझे तो फिर,
हमेशा वार छुपछुप के ही क्यूँ तूने किया ढक्कन

बहुत लफड़े किये हैं अब लगेगी वाट वो तेरी
करेगा ज़िन्दगी भर फिर नहीं कोई ख़ता ढक्कन

जला करता है क्यों तू आग में हरदम अदावत की
कभी तो प्यार के दरिया में भी डुबकी लगा ढक्कन

बड़ी ही रापचिक सी ज़िन्दगी रब ने अता की है
इसे बर्बाद करने पर भला तू क्यूँ तुला ढक्कन

किसी के काम आने के लिए ही ज़िंदगानी है
किसी की जान ले लो ये कहाँ तूने पढ़ा ढक्कन

लगा कलटी बदी की तू अँधेरी सर्द राहों से
नहीं कुछ हाथ आएगा अगर इन पर चला ढक्कन

ooo

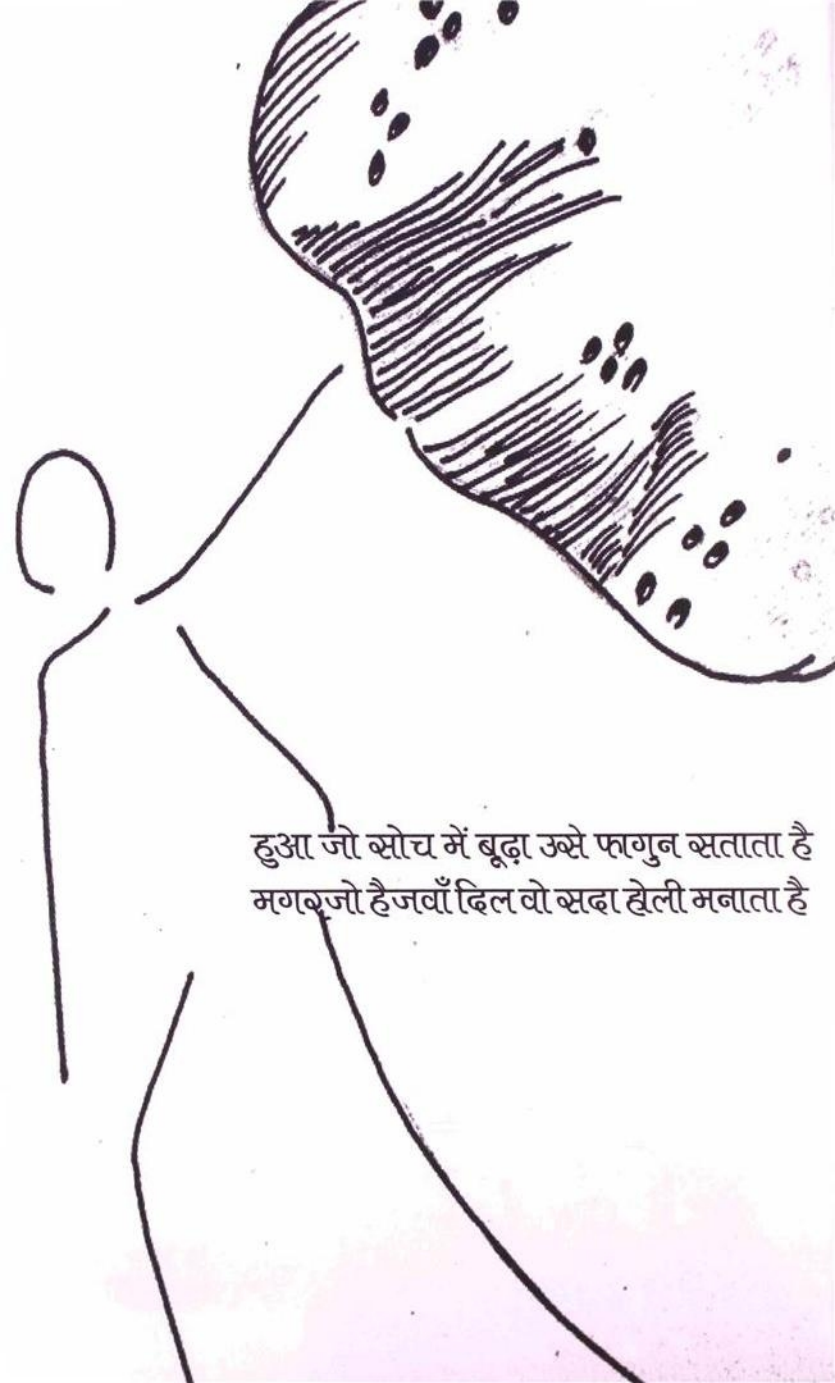

हुआ जो सोच में बूढ़ा उसे फागुन सताता है
मगर जो है जवाँ दिल वो सदा होली मनाता है

होली

उसे बाज़ार के रंगों से रँगने की ज़रूरत क्या
फ़क़त छूते ही मेरे जो गुलाबी होता जाता है

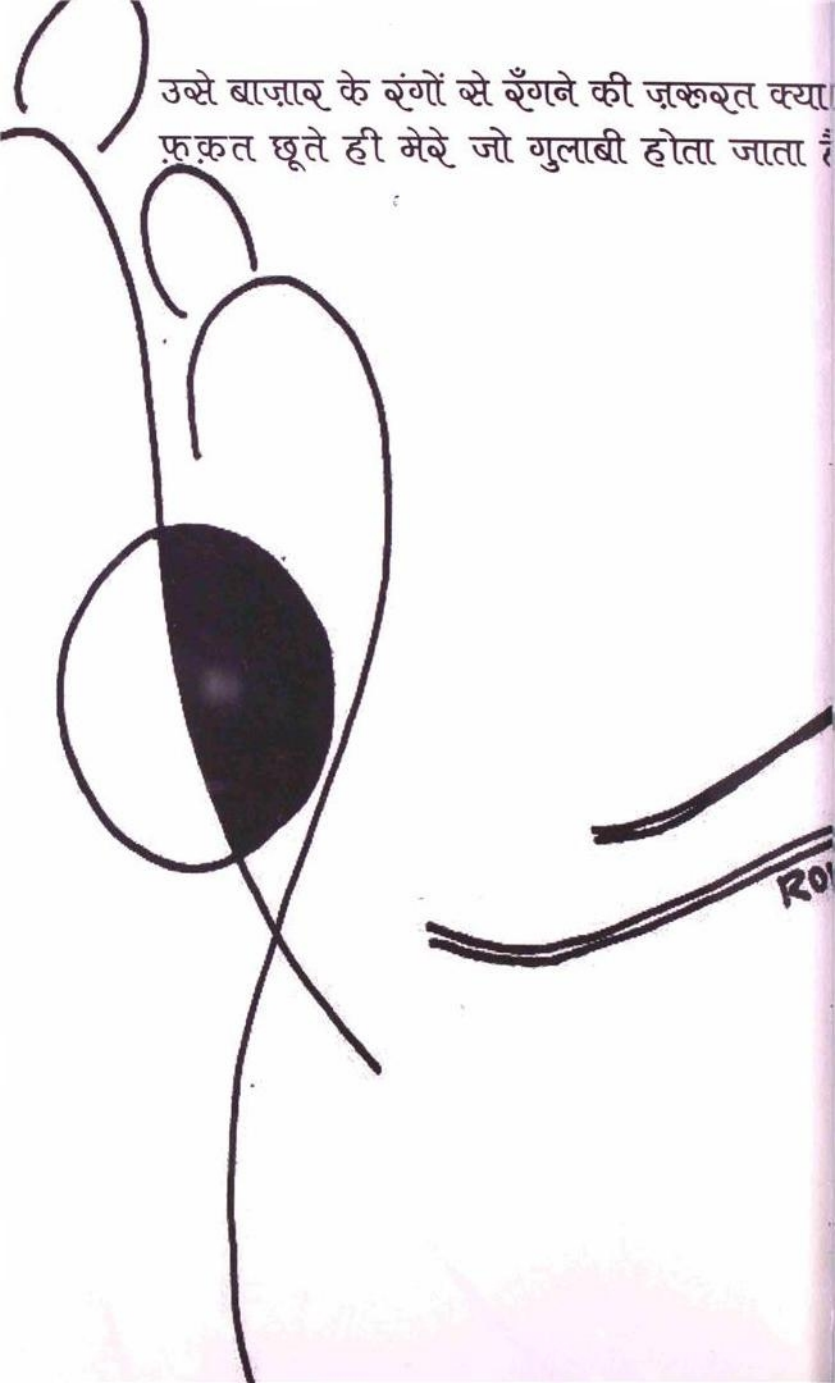

हुआ जो सोच में बूढ़ा उसे फागुन सताता है
मगर जो है जवाँ दिल वो सदा होली मनाता है

अपुन तो टुन्न हो जाते भिड़ू जब हाथ से अपने
हमें घर वो बुला कर प्यार से पानी पिलाता है

उसे बाज़ार के रंगों से रँगने की ज़रूरत क्या
फ़क़त छूते ही मेरे जो गुलाबी होता जाता है

सियासत मुल्क़ में शायद है इक कंगाल की बेटी
हर इक बूढ़ा उसे पाने को कैसे छटपटाता है

बदल दूँगा मैं इसका रंग कह कर देखिये नेता
बुरे हालात सी हर भैंस पर उबटन लगाता है

बहुत मटका रही हो आज पतली जिस कमरिया को
उसे ही याद रख इक दिन ख़ुदा कमरा बनाता है

दबा लेते हैं दिल में चाह अब तुझसे लिपटने की
करें कितनी भी कोशिश बीच में ये पेट आता है

सुनाई ही नहीं देगा किसी को सच वहाँ *'नीरज'*
तू क्यूँ नक्कार खाने में खड़ा तूती बजाता है

ooo

केसरिया, लाल, पीला, नीला, हरा, गुलाबी
सारे लगा के देखे, तुझपे खिला गुलाबी

रहता था लाल हरदम, दुश्मन के ख़ून से जो
होली में प्यार से वो, ख़ंजर हुआ गुलाबी

काला कलूट ऐसा छिप जाए रात में जो
फागुन में सुन सखी वो, लगता पिया गुलाबी

आँखों में लाल डोरे, पैरों में हल्की थिरकन
तू पास हो तो मुझ पर, चढ़ता नशा गुलाबी

पैग़ाम पी का आया, होली पे आ रहे हैं
मन का मयूर नाचा, तन हो गया गुलाबी

कल तक सफ़ेद झक थी, जुम्मन चचा की दाढ़ी
काला किया लगा तब, है मामला गुलाबी

होली पे मिल के *'नीरज'* इक दूसरे को कर दें
केसरिया, लाल, पीला, नीला, हरा, गुलाबी

ooo

बात सचमुच में निराली हो गई
अब नसीहत यार गाली हो गई

ये असर हम पर हुआ इस दौर का
भावना दिल की मवाली हो गई

डाल दीं भूखे को जिसमें रोटियाँ
बस वही पूजा की थाली हो गई

तय किया चलना जुदा जब भीड़ से
हर नज़र देखा, सवाली हो गई

क़ैद का इतना मज़ा मत लीजिये
रो पड़ेंगे गर बहाली हो गई

थी अमावस सी हमारी ज़िन्दगी
मिल गये तुम, तो दिवाली हो गई

हाथ में क़ातिल के 'नीरज' फूल है
बात अब घबराने वाली हो गई

ooo

आँखों में तेरी अपने, कुछ ख़्वाब सजा दूँ तो?
फिर ख़्वाब वही सारे, सच कर के दिखा दूँ तो?

महकोगी गुलाबों सी, होली पे मेरी जानम
इक रंग मुहब्बत का, थोड़ा सा लगा दूँ तो?

जिस राह से गुज़रो तुम, सब फूल बिछाते हैं
उस राह पे मैं अपनी, पलकें ही बिछा दूँ तो?

कहते हैं वो बारिश में, बा-होश नहायेंगे
बादल में अगर मदिरा, चुपके से मिला दूँ तो ?

फागुन की बयारों में, कुचियाते हुए महुए
की छाँव तुझे दिल की, हर बात बता दूँ तो?

ये उसकी मुंडेरों से, आगे नहीं जाएँगे
चाहत के परिंदों को, मैं ख़ुद ही उड़ा दूँ तो?

हो जाएगा टेसू के, फूलों सा तेरा चेहरा
उस पहली छुअन की मैं, गर याद दिला दूँ तो?

उफ़! हाय हटो जाओ, कहते हुए लिपटेगी
मैं हाथ पकड़ उसका, हौले से दबा दूँ तो?

ooo

पिलायी भाँग होली में, वो प्याले याद आते हैं
गटर, पी कर गिरे जिनमें, निराले याद आते हैं

दुलत्ती मारते देखूँ, गधों को जब ख़ुशी से मैं
निकम्मे सब मेरे कमबख़्त, साले याद आते हैं

गले लगती हो जब खाकर, कभी आचार लहसुन का
तुम्हारे शह्र के गंदे, वो नाले याद आते हैं

भगा लाया तिरे घर से, बनाने को तुझे बीवी
पढ़े थे अक़्ल पर मेरी, वो ताले याद आते हैं

नमूने देखता हूँ जब अजायबघर में तो यारों
न जाने क्यूँ मुझे ससुराल वाले याद आते हैं

कभी तो पैंट फाड़ी और कभी सड़कों पे दौड़ाया
तिरी अम्मी ने जो कुत्ते थे पाले, याद आते हैं

सफेदी देख जब गोरी कहे अंकल मुझे *'नीरज'*
जवानी के दिनों के बाल काले याद आते हैं

ooo

कमीने, पाजी, हरामी, अहमक, टपोरी सारे, तेरी गली में
रकीब बन कर मुझे डराते मैं आऊँ कैसे, तेरी गली में

खड़ूस बापू, मुटल्ली अम्मा, निकम्मे भाई, छिछोरी बहनें
बजाएँ मुझको समझ नगाड़ा ये सारे मिल के, तेरी गली में

हमारी मूँछो, को काट देना, जो हमने होली, के दिन ही आके
न भाँग छानी, न गटकी दारू, न खाये गुझिये, तेरी गली में

अकड़ रहे थे ये सोच कर हम, जरा भी मजनू से कम नहीं हैं
उतर गया है, बुखार सारा, पड़े वो जूते, तेरी गली में

तमाम रस्ता कि जैसे कीचड़, कहीं पे गड्ढा कहीं पे गोबर
तेरी मुहब्बत में डूबकर हम मगर हैं आये तेरी गली में

किसी को मामा किसी को नाना किसी को चाचा किसी को ताऊ
बनाये हमने तुम्हारी ख़ातिर ये फ़र्ज़ी रिश्ते तेरी गली में

भुला दी अपनी उमर तो देखो ये हाल इसका हुआ है लोगों
पड़ा हुआ है ज़मीं पे *'नीरज'* लगा के ठुमके तेरी गली में

ooo

तरसती जिसके हों दीदार तक को आपकी आँखें
उसे छूने का आये क्षण, समझ लेना कि होली है

करें जब पाँव खुद नर्तन, समझ लेना कि होली है
हिलोरें ले रहा हो मन, समझ लेना कि होली है

कभी खोलो अचानक, आप अपने घर का दरवाजा
खड़े देहरी पे हों साजन, समझ लेना कि होली है

तरसती जिसके हों दीदार तक को आपकी आँखें
उसे छूने का आये क्षण, समझ लेना कि होली है

हमारी ज़िन्दगी यूँ तो है इक काँटों भरा जंगल
अगर लगने लगे मधुबन, समझ लेना कि होली है

बुलाये जब तुझे वो गीत गा कर ताल पर ढफ की
जिसे माना किये दुश्मन, समझ लेना कि होली है

किसी की याद से बजने लगें जब आपके दिल में
कभी घुँघरू कभी कंगन, समझ लेना कि होली है

अगर महसूस हो तुमको, कभी जब साँस लो *'नीरज'*
हवाओं में घुला चन्दन, समझ लेना की होली है

ooo

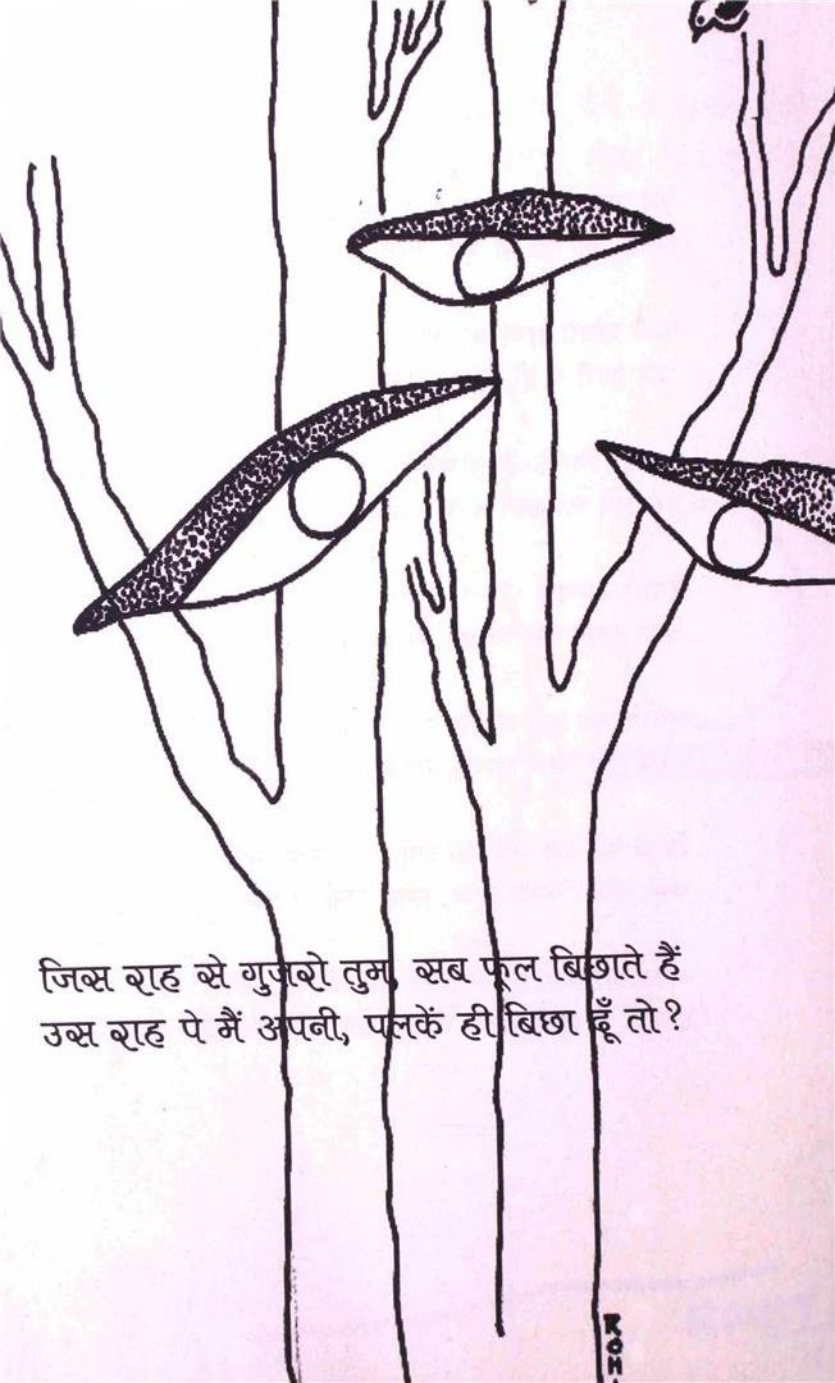

जिस राह से गुजरो तुम, सब फूल बिछाते हैं
उस राह पे मैं अपनी, पलकें ही बिछा दूँ तो?

भावना
प्रकाशन

SHIVNA PRAKASHAN
ISBN 978-93-81520-05-5
9 789381 520055
Price ₹150

ISBN: 978-93-81520-05-5
DAALI MOGRE KEE
(URDU POETRY BOOK)
by: NEERAJ GOSWAMY

कभी ऐलान ताक़त का, हमें करना ज़रूरी है
समंदर ओक में अपनी, कभी भरना ज़रूरी है

उठे सैलाब यादों का, अगर मन में कभी तेरे
दबाना मत कि उसका, आँख से झरना ज़रूरी है

मज़े में काटते थे हम गली में यार की जीवन
हमें मालूम ही कब था यहाँ मरना ज़रूरी है

किसी का ख़ौफ़ दिल पर, आज तक तारी न हो पाया
किया यूँ प्यार अपनों ने, लगा डरना ज़रूरी है

दुखाना मत किसी का दिल, ख़ुशी चाहो अगर पाना
ज़रा इस बात को बस, ध्यान में धरना ज़रूरी है

कहीं है भेद 'नीरज' आपके कहने व करने में
छिपाना आँख को सबसे, कहाँ वरना ज़रूरी है

ooo

देखने में मकाँ जो पक्का है
दर हक़ीक़त बड़ा ही कच्चा है

ज़िंदगी कैसे प्यारे जी जाये
वो ही जाने जो मन से बच्चा है

छाँव मिलती जहाँ दुपहरी में
वो ही काशी है वो ही मक्का है

जो अकेले खड़ा भी मुस्काये
वो बशर यार सबसे सच्चा है

जिसको थामा था हमने गिरते में
दे रहा वो ही हमको धक्का है

आप रब से छुपाएँगे कैसे
जो छुपाकर जहाँ से रक्खा है

जब चले राह सच की हम *'नीरज'*
हर कोई देख हक्का बक्का है

ooo

मुम्बइया ज़बान की ग़ज़ल

गर जवानी में तू थकेला है
साँस लेकर भी तू मरेला है

सच बयानी की ठान ली जबसे
हाल तबसे ही ये फटेला है

ताज़गी मन में आ न पायेगी
गर विचारों में तू सड़ेला है

हो ज़रूरत तो ठीक है प्यारे
बे ज़रूरत तू क्यों खटेला है

रात ग़म की हो बेअसर काली
चाँद आशा का गर उगेला है

लोग सीढ़ी हैं, काम में ले लो
पाठ बचपन से ये रटेला है

दिल भिखारी से कम नहीं उसका
ताज जिसके भी सर सजेला है

रोक पाओगे तुम नहीं *'नीरज'*
वो गिरेगा जो फल पकेला है

ooo

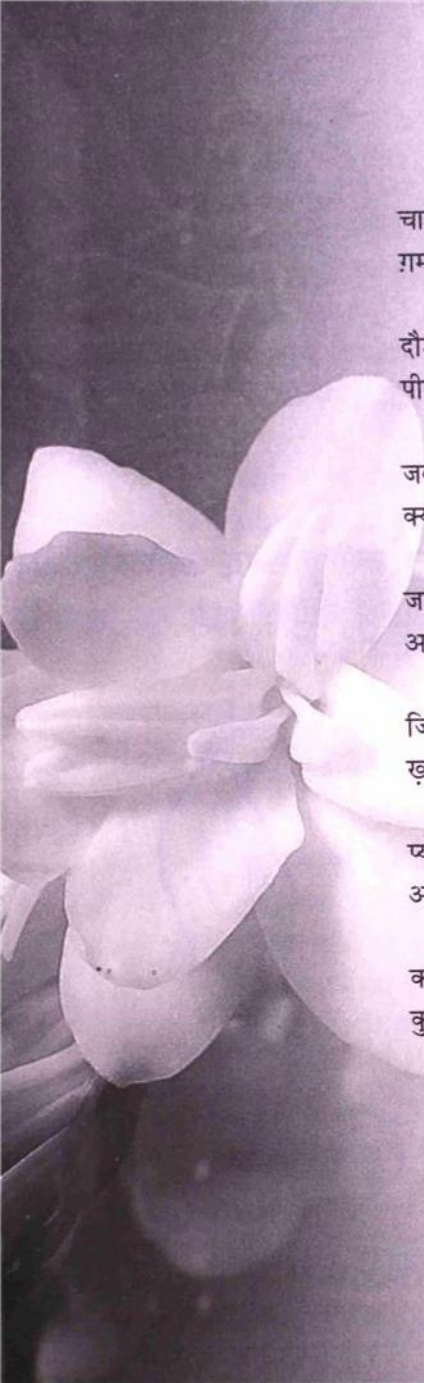

चाय की जब तेरे साथ लीं चुस्कियाँ
ग़म हवा हो गए छा गयीं मस्तियाँ

दौड़ती ज़िन्दगी को जरा रोक कर
पीसते हैं चलो ताश की गड्डियाँ

जब तलक झाँकती आँख पीछे न हो
क्या फ़रक़ बंद हैं या खुली खिड़कियाँ

जान ले लो कहा जिसने भी, उसको जब
आज़माया, लगा काटने कन्नियाँ

जिनमें पत्थर उठाने की हिम्मत नहीं
ख़्वाब में तोड़ते हैं वही मटकियाँ

प्यार के ढोंग से लाख बेहतर मुझे
आप देते रहें रात दिन झिड़कियाँ

कौन सुनता है *'नीरज'* सरल सी ग़ज़ल
कुछ धमाके करो तो बजें सीटियाँ

०००

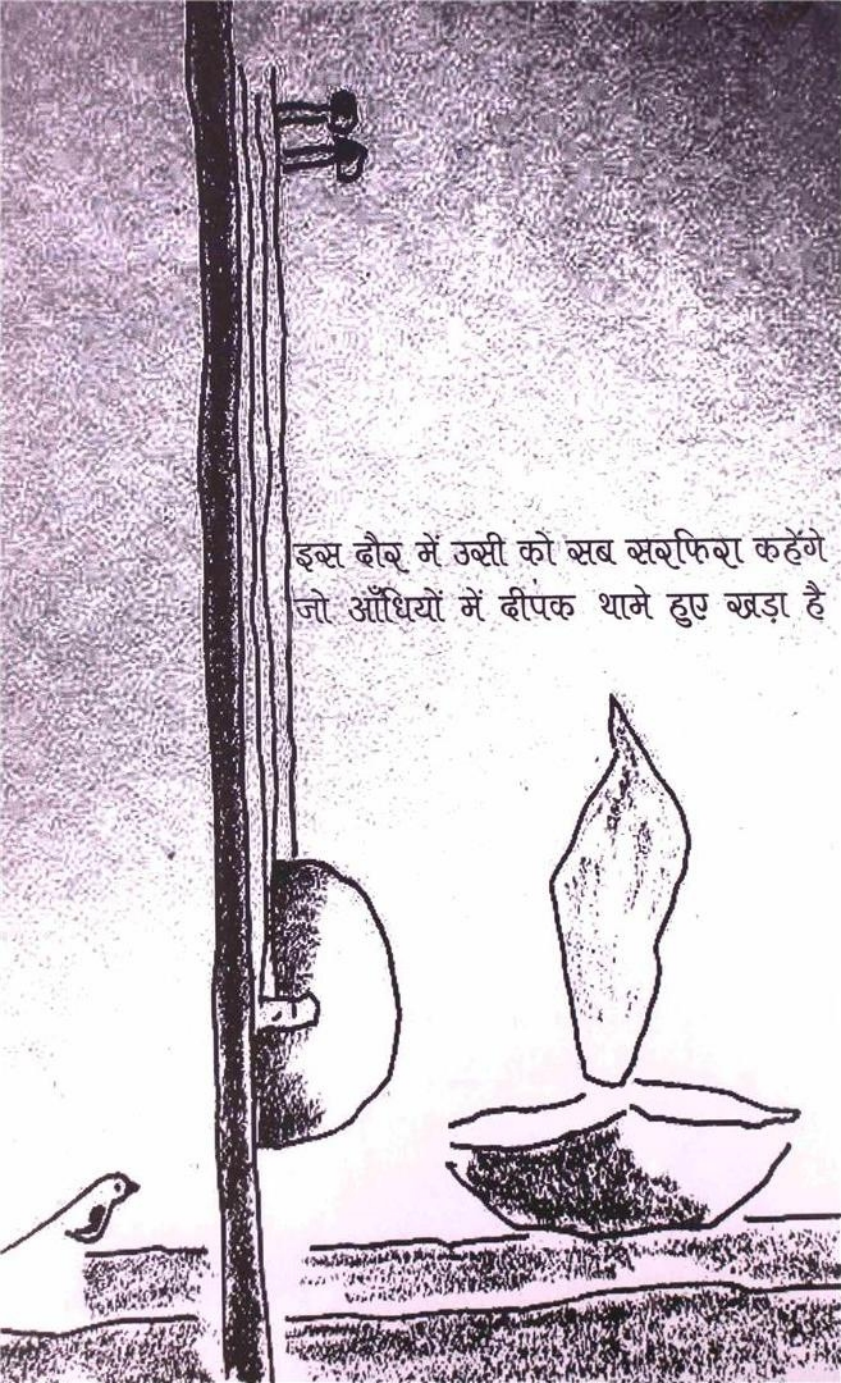
इस दौर में उसी को सब सरफिरा कहेंगे
जो आँधियों में दीपक थामे हुए खड़ा है

डाली मोगरे की

नीरज गोस्वामी

सामयिक
प्रकाशन

ये क़ैदे बा-मशक़्क़त जो तूने की अता है
मंज़ूर है मुझे पर, किस जुर्म की सज़ा है ?

ये रहनुमा किसी के दम पर खड़ा हुआ है
जिसको समझ रहे थे हर मर्ज़ की दवा है

नक़्क़ाल पा रहा है ईनाम तमगे सारे
असली अदीब देखो ताली बजा रहा है

इस दौर में उसी को सब सरफिरा कहेंगे
जो आँधियों में दीपक थामे हुए खड़ा है

रोटी नहीं हवस है, जिसकी वजह से इंसाँ
इंसानियत भुला कर वहशी बना हुआ है

मीरा कबीर तुलसी नानक फरीद बुल्ला
गाते सभी हैं इनको किसने मगर गुना है

आभास हो रहा है हलकी सी रौशनी का
उम्मीद का सितारा धुँधला कहीं उगा है

हालात देश के तुम कहते ख़राब *'नीरज'*
तुमने सुधारने को बोलो तो क्या किया है ?

ooo

मुश्किलों की यही हैं बड़ी मुश्किलें
आप जब चाहें कम हों, तभी ये बढ़ें

अब कोई दूसरा रास्ता ही नहीं
याद तुझको करें और ज़िंदा रहें

बस इसी सोच से, झूठ क़ायम रहा
बोल कर सच भला हम बुरे क्यों बनें

डालियों पे फुदकने से जो मिल गयी
उस ख़ुशी के लिए क्यूँ फ़लक पर उड़ें

हम दरिन्दे नहीं गर हैं इंसान तो
आईना देखने से बता क्यों डरें?

ज़िन्दगी ख़ूबसूरत बने इस तरह
हम कहें तुम सुनो तुम कहो हम सुनें

आके हौले से छूलें वो होंठों से गर
तो सुरीली मुरलिया से *'नीरज'* बजें

ooo

ज़िन्दगी में तब झमेला हो गया
नीम तुम, और मैं करेला हो गया

कोह सा अकड़ा खड़ा रहता था जो
वक़्त जब बदला तो ढेला हो गया

रक्स करती थीं जहाँ तन्हाइयाँ
तुम बसे तो दिल में मेला हो गया

सोचता जो कुछ अलग है भीड़ से
शख्स वो कितना अकेला हो गया

हम चले जिस ओर तनहा ही चले
वो चला जिस ओर रेला हो गया

बंद थी जब तक तो गिन्नी सा रहा
खुल गयी मुट्ठी तो धेला हो गया

ख़्वाब में जब वो दिखा *'नीरज'* मुझे
मैं अकेले से दुकेला हो गयो

ooo

तुझे किसी से प्यार हो तो हो रहे तो हो रहे
चढ़ा हुआ ख़ुमार हो तो हो रहे तो हो रहे

जहाँ पे फूल हों खिले वहाँ तलक जो ले चले
वो राह, ख़ारज़ार[1] हो तो हो रहे तो हो रहे

उजास हौसलों की साथ में लिये चले चलो
घना जो अन्धकार हो तो हो रहे तो हो रहे

बशर को क्या दिया नहीं ख़ुदा ने फिर भी वो अगर
बिना ही बात ख़्वार हो तो हो रहे तो हो रहे

मेरा मिजाज़ है कि मैं खुली हवा में साँस लूँ
किसी को नागवार हो तो हो रहे तो हो रहे

चमक है जुगनूओं में कम, मगर उधार की नहीं
तू चाँद आबदार[2] हो तो हो रहे तो हो रहे

जहाँ उसूल दाँव पर लगे वहाँ उठा धनुष
न डर जो कारज़ार[3] हो तो हो रहे तो हो रहे

फ़क़ीर हैं मगर कभी ग़ुलाम मत हमें समझ
भले तू ताजदार हो तो हो रहे तो हो रहे

ooo

1 ख़ारज़ार = काँटों भरी, 2 आबदार = चमकदार, 3 कारज़ार = युद्ध

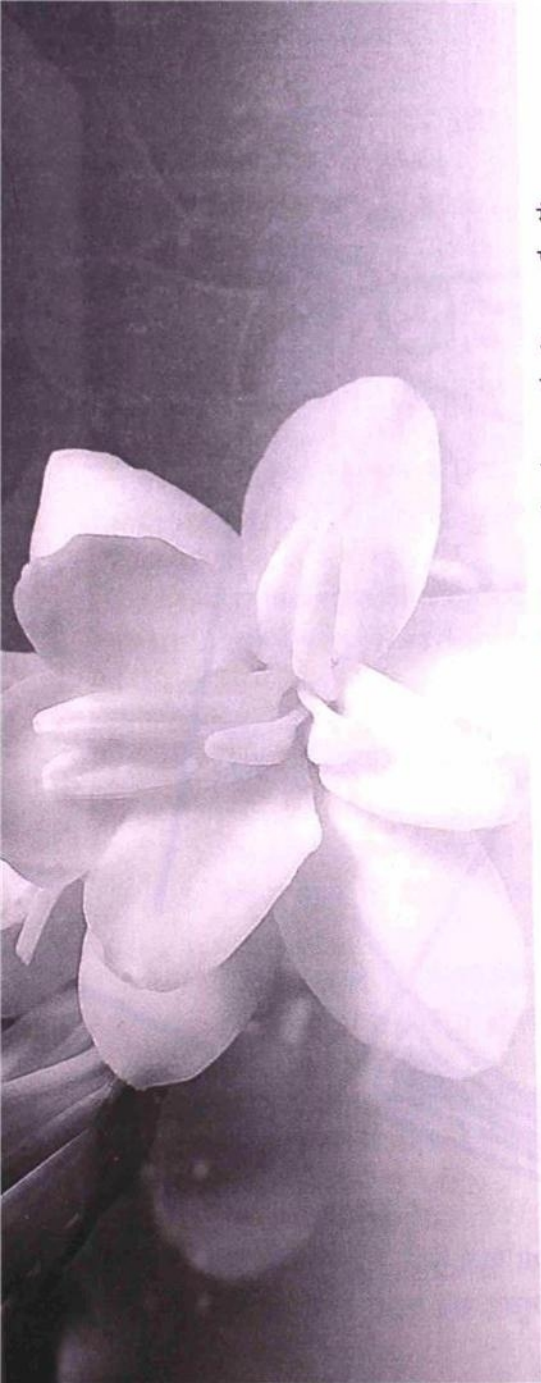

मैं राज़ी तू राज़ी है
पर ग़ुस्से में क़ाज़ी है

आँखें करती हैं बातें
मुँह करता लफ़्फ़ाज़ी है

जीतो हारो फ़र्क़ नहीं
ये तो दिल की बाज़ी है

तुम बिन मेरे इस दिल को
दुनिया से नाराज़ी है

कड़वा मीठा हम सब का
अपना अपना माज़ी है

दर्द अभी कम है *'नीरज'*
चोट अभी कुछ ताज़ी है

०००

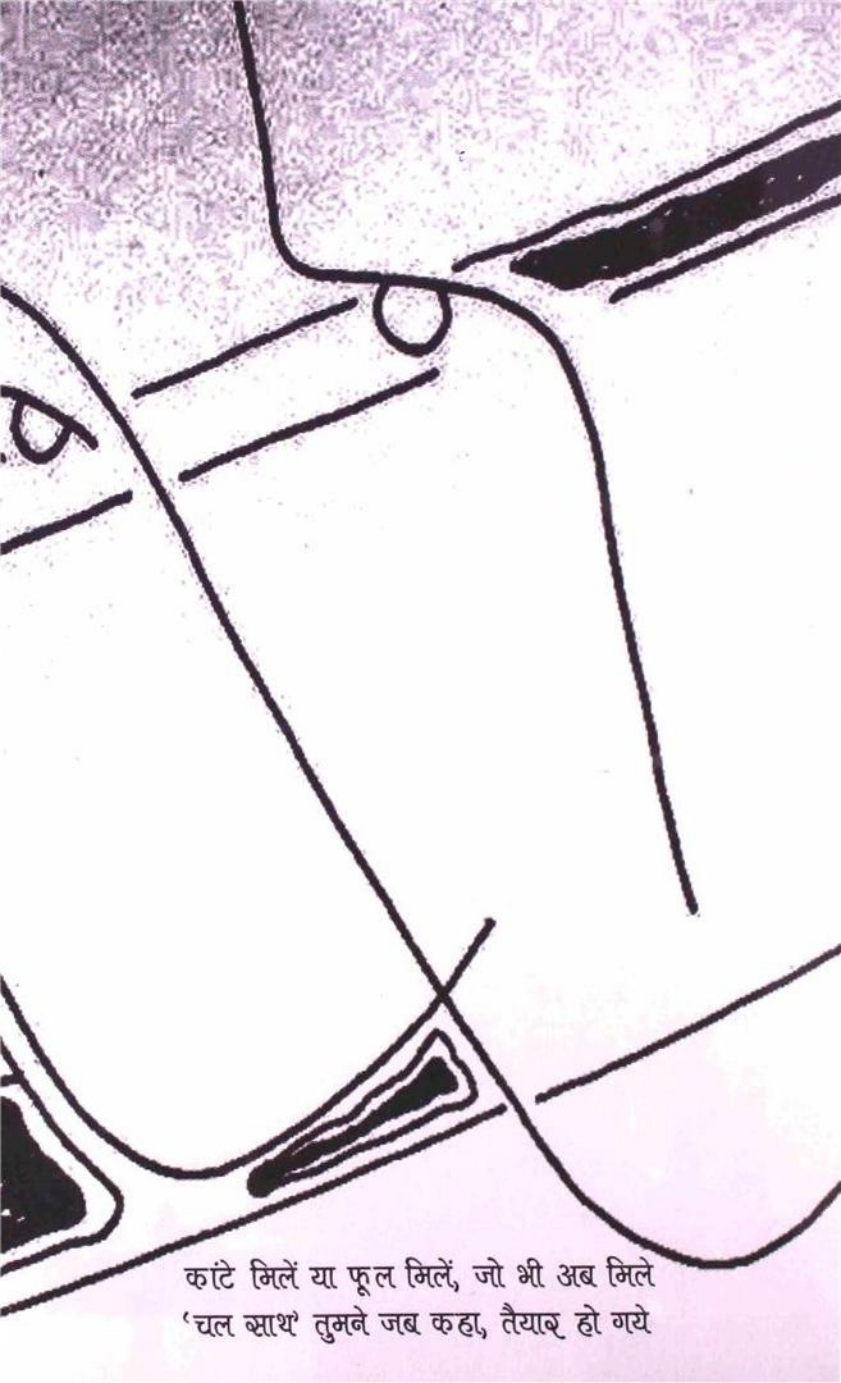

काँटे मिलें या फूल मिलें, जो भी अब मिले
'चल साथ' तुमने जब कहा, तैयार हो गये

इन्सानियत के वाक़ये दुश्वार हो गये
जज़्बात दिल से ही जुदा सरकार हो गए

कब तक रखेंगें हम भला इनको सहेज कर
रिश्ते हमारे शाम का अख़बार हो गये

हमने किये जो काम उन्हें फ़र्ज़ कह दिया
तुमने किये तो यार वो उपकार हो गये

काँटे मिलें या फूल मिलें, जो भी अब मिले
'चल साथ' तुमने जब कहा, तैयार हो गये

बाहर जो ढूँढ़ते रहे उसको, मिला नहीं
आँखें जो बन्द कर लीं तो दीदार हो गये

रौंदा जिसे भी दिल किया जब थे ग़ुरूर में
बदला समय तो देखिये लाचार हो गये

कल तक लुटाते जान थे हम जिस उसूल पर
लगने लगा क्यूँ आज वो बेकार हो गये

दो चार बातें प्यार की कर दीं कभी कहीं
'नीरज' सभी ने सोचा के बीमार हो गए

ooo

नज़ाकत है न ख़ुश्बू औ' न कोई दिलकशी ही है
गुलों के साथ फिर भी ख़ार को रब ने जगह दी है

किसी की याद चुपके से चली आती है जब दिल में
कभी घुँघरू से बजते हैं, कभी तलवार चलती है

वही करते हैं दावा आग नफ़रत की बुझाने का
कि जिनके हाथ में जलती हुई माचिस की तीली है

हटो, करने दो अपने मन की भी इन नौजवानों को
ये इनका दौर है, इनका समय है, इनकी बारी है

घुटन, तड़पन, उदासी, अश्क, रुसवाई, अकेलापन
बग़ैर इनके अधूरी इश्क़ की हर इक कहानी है

कभी बच्चों को मिल कर खिलखिलाते नाचते देखा
लगा तब ज़िंदगी ये हमने क्या से क्या बना ली है

उतर आये हैं बादल याद के आखों में यूँ *'नीरज'*
ज़मीं जो कल तलक सूखी थी अब वो भीगी भीगी है

ooo

ज़िन्दगी में जो ग़म नहीं होता
नाम रब का अहम नहीं होता

तुझ में बस तू बचा है मुझमें मैं
अब के रिश्तों में हम नहीं होता

क़त्ल अब खेल बन गया क्यूँ की
सर सज़ा में कलम नहीं होता

दोस्ती हो के दुश्मनी इसमें
यार कोई नियम नहीं होता

रोटियों के सिवा ग़रीबों का
और कुछ भी इरम[1] नहीं होता

आप मुड़ कर न देखते तो हमें
प्यार है, ये भरम नहीं होता

चीखता है वही सदा *'नीरज'*
जिसकी बातों में दम नहीं होता

ooo

[1] इरम - स्वर्ग

तीर ख़ंजर की न अब तलवार की बातें करें
ज़िन्दगी में आइये बस प्यार की बातें करें

टूटते रिश्तों के कारण जो बिखरता जा रहा
अब बचाने को उसी घर बार की बातें करें

थक चुके हैं हम बढ़ा कर यार दिल की दूरियाँ
छोड़ कर तक्रार अब मनुहार की बातें करें

दौड़ते फिरते रहें पर ये ज़रूरी है कभी
बैठ कर कुछ गीत की झंकार की बातें करें

तितलियों की बात हो या फिर गुलों की बात हो
क्या ज़रूरी है कि हरदम ख़ार की बातें करें

कोई समझा ही नहीं फ़ितरत यहाँ इन्सान की
घाव जो देते वही उपचार की बातें करें

काश *'नीरज'* हो हमारा भी जिगर इतना बड़ा
जेब ख़ाली हो मगर सत्कार की बातें करें

ooo

डाली मोगरे की
(तृतीय संस्करण)
© नीरज गोस्वामी
ISBN: 978-93-81520-05-5

पहला सजिल्द संस्करण : 2013
द्वितीय सजिल्द संस्करण : 2014
तृतीय सजिल्द संस्करण : 2016
मूल्य : 150.00 रुपये

प्रकाशक
शिवना प्रकाशन
पी. सी. लैब, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट
बस स्टैंड, सीहोर -466001(म.प्र.)
फोन : 07562405545, 07562695918
E-mail: shivna.prakashan@gmail.com
अंदर के रेखा चित्र : श्री रोहित रूसिया, छिंदवाड़ा
आवरण डिज़ाइन : सनी गोस्वामी
कम्पोज़िंग-लेआउट : शहरयार अमजद ख़ान
मुद्रक : शाइन आफ़सेट, भोपाल (म.प्र.)

Daali Mogre Ki
Urdu Poetry Book By Neeraj Goswamy
Published by: Shivna Prakashan, Price 150Rs.

दर्द दिल में मगर लब पे मुस्कान है
हौसलों की हमारे ये पहचान है

लाख कोशिश करो आ के जाती नहीं
याद इक बिन बुलाई सी महमान है

खिलखिलाता है जो आज के दौर में
इक अजूबे से कम क्या वो इंसान है

ज़र, ज़मीं, सल्तनत से ही होता नहीं
जो दे भूखे को रोटी, वो सुल्तान है

मीर, तुलसी, ज़फ़र, जोश, मीरा, कबीर
दिल ही ग़ालिब है और दिल ही रसखान है

पाँच करता है जो, दो में दो जोड़ कर
आजकल सिर्फ़ उसका ही गुणगान है

ढूँढ़ता फिर रहा फूल पर तितलियाँ
शह्र में वो नया है या नादान है

गर न समझा तो *'नीरज'* बहुत है कठिन
जान लो ज़िन्दगी को तो आसान है

ooo

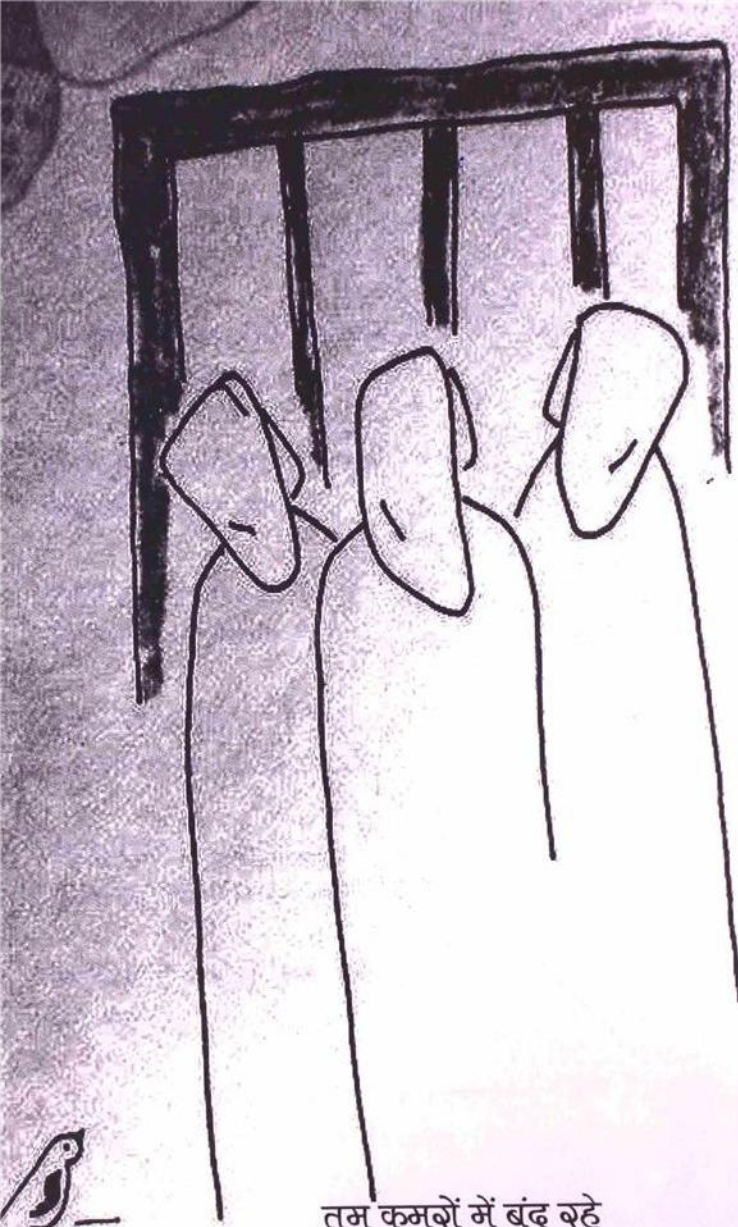

तुम कमरों में बंद रहे
धूप नहीं थी हरज़ाई

अब रिश्तों में गहराई ?
बहते पानी पर काई ?

तुम कमरों में बंद रहे
धूप नहीं थी हरज़ाई

जब अधरों से छूते तुम
लगता, मैं हूँ शहनाई

तुमसे मिल कर देर तलक
अच्छी लगती तन्हाई

बच्चों से घर चहके यूँ
ज्यूँ कोयल से अमराई

लाख बुराई हो जिसमें
ढूँढ़ो उसमें अच्छाई

तन्हा काली रातों की
बढ़ती क्यूँ उफ़ ! लम्बाई

बीती बात उधेड़ो मत
'नीरज' सीखो तुरपाई

ooo

इस दौर में इन्साँ कहीं बेहतर नहीं मिलते
रहज़न ही यहाँ मिलते हैं रहबर नहीं मिलते

अब देखकर इन ज़ख़्मों को घबराना भी कैसा
सच बोल के किस दौर में पत्थर नहीं मिलते

हर वक़्त वहाँ सहमे हुए मिलते हैं बच्चे
किलकारियाँ गूँजें जहाँ वो घर नहीं मिलते

गिनती के लिये लाखों ही मिल जायेंगे लेकिन
ख़ातिर जो अना की कटें वो सर नहीं मिलते

अंदाज़ा किसे है यहाँ तकलीफ़ का उनकी
क़ाबिल तो हैं लेकिन जिन्हें अवसर नहीं मिलते

मिल जाते हैं वो माँ की दुआओं में यक़ीनन
मंदिर में जो भगवान अब अक्सर नहीं मिलते

घर से जो चलो याद रहे इतना भी *'नीरज'*
हर राह में दिलकश ही तो मन्ज़र नहीं मिलते

ooo

मुश्किलों में मुस्कुराना सीखिये
फूल बन्जर में उगाना सीखिये

जो चले परचम उठाकर दोस्तों
साथ उसका ही निभाना सीखिये

खिड़कियों से झाँकना बेकार है
बारिशों में भीग जाना सीखिये

आँधियाँ जब दे रही हो दस्तकें
तब दिये की लौ बचाना सीखिये

ख़ामोशी से आज सुनता कौन है
शोर महफ़िल में मचाना सीखिये

डालिये दरिया में यूँ मत नेकियाँ
अब भला करके जताना सीखिये

तान के रखिये इसे हर दम मगर
सर किसी दर पे झुकाना सीखिये

भीगती *'नीरज'* किसी की याद से
आँख को सबसे छुपाना सीखिये

०००

बे सबब जो सफाई देता है
दोष उसमें दिखाई देता है

वो जकड़ता नहीं है बंधन में
प्यार सच्चा रिहाई देता है

आँखों आँखों में बात हो जब भी
अनकहा भी सुनाई देता है

यार बहरे बसे जहाँ सारे
क्यूँ वहाँ तू दुहाई देता है

तुम जो ये क़हक़हे लगाते हो
राज़ गहरा दिखाई देता है

गालियाँ खा के मुस्कुरा *'नीरज'*
कौन किसको बधाई देता है

ooo

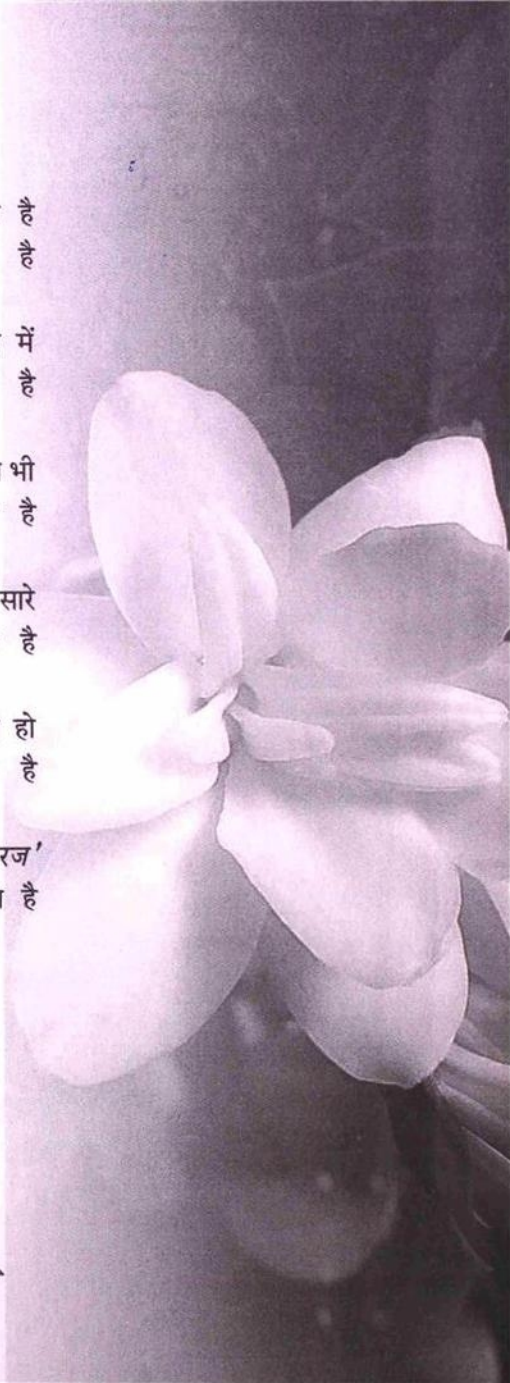

इस जहाँ में यही झमेला है
झूठ ने सच सदा धकेला है

लाख तारे हैं क़ातिलों जैसे
चाँद इन्साफ़ का अकेला है

प्यार बच्चा है थाम के चलना
भीड़ वाला जहाँ का मेला है

कोई इज़्ज़त नहीं करे प्यारे
पास तेरे अगर न धेला है

प्यार किससे करें यहाँ अब तो
हाथ में हर किसी के ढेला है

कूक कोयल की दब न जाये कहीं
शोर का हर तरफ से रेला है

ज़िन्दगी दौड़ भाग की *'नीरज'*
यूँ लगे नीम पर करेला है

ooo

लगा गलने ये चमड़े का लबादा
चलो बदलें, रफ़ू कब तक कराएँ

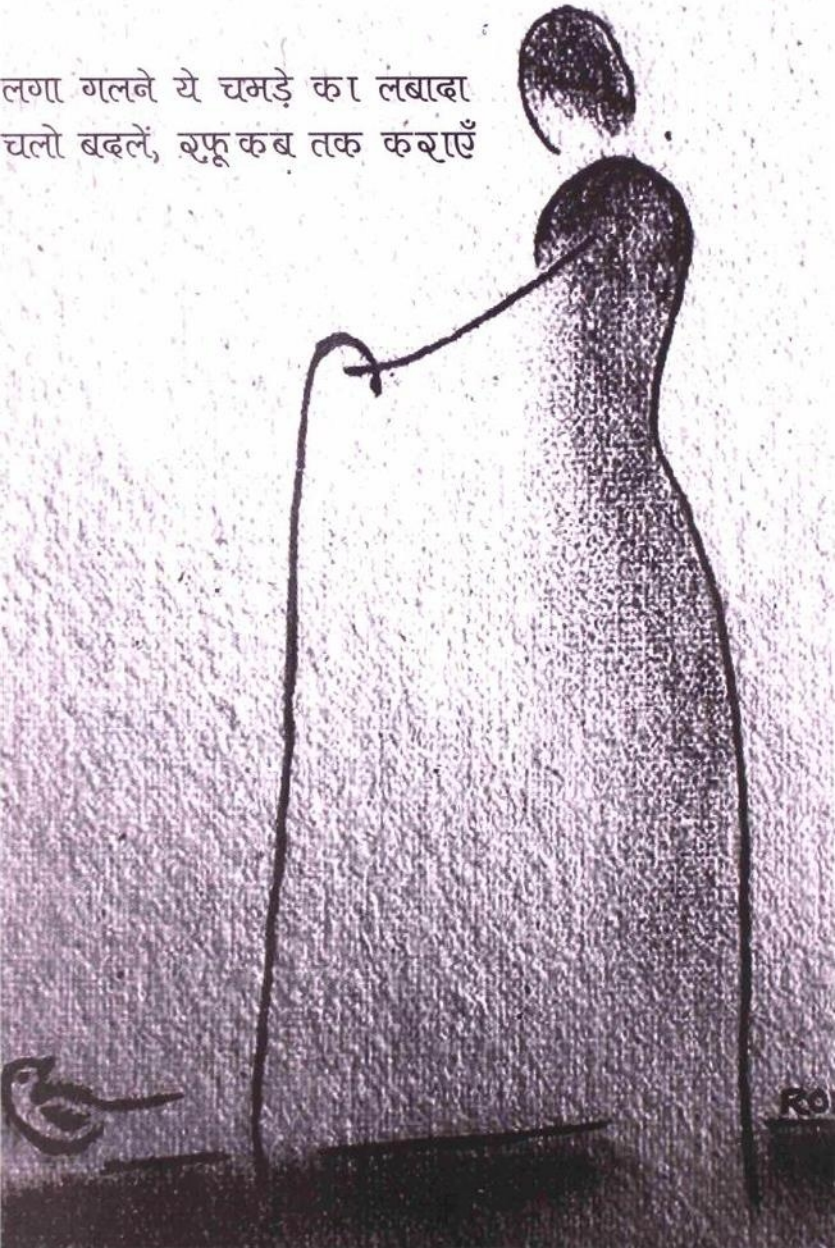

मिलेंगी तब हमें सच्ची दुआएँ
किसी के साथ जब आँसू बहाएँ

बहुत बातें छुपी हैं दिल में अपने
कभी तुम पास बैठो तो सुनाएँ

फ़क़ीरों का नहीं घर बार होता
कहाँ इक गाँव ठहरी हैं हवाएँ

हमेशा जीतता है यार सच ही
बुज़ुर्गों से सुनी ऐसी कथाएँ

बना लें दोस्त चाहे आप जितने
मगर हरगिज़ न उनको आज़माएँ

बिछुड़ कर घर से हम भटके हैं जैसे
गिरे पत्ते शजर से धूल खाएँ

लगा गलने ये चमड़े का लबादा
चलो बदलें, रफ़ू कब तक कराएँ

अजब रिश्ता है अपना तुमसे *'नीरज'*
करें जब याद तुमको मुस्कुराएँ

ooo

समझ में कुछ नहीं आता बता मैं यार क्या लिक्खूँ
ग़मों की दास्ताँ लिक्खूँ ख़ुशी की या कथा लिक्खूँ

जहाँ जाता हूँ मैं तुझको वहीं मौजूद पाता हूँ
अगर लिखना तुझे हो ख़त तेरा मैं क्या पता लिक्खूँ

गणित ये प्यार का यारों किसी के तो समझ आये
सिफ़र बचता अगर तुझको कभी ख़ुद से घटा लिक्खूँ

अगर मुजरिम बना हाकिम कहेगा वो यही सबसे
लुटेरे यार सब मेरे मैं किस किसको सज़ा लिक्खूँ

किये तूने बहुत एहसाँ कहाँ इन्कार है मुझको
गवारा पर नहीं ऐ दोस्त तुझको मैं ख़ुदा लिक्खूँ

जिसे देखूँ वही दिखता हमेशा दौड़ता पीछे
अजब ये चीज़ है दौलत न छूटे जो नशा लिक्खूँ

नज़र होती है बंद *'नीरज'* पता जब ये चला मुझको
जतन कर नाम मैं तेरा ज़माने से छुपा लिक्खूँ

ooo

समर्पण

इस किताब का सपना देखने वाली मिष्टी,
इक्षु और इष्टी की दादी के नाम...

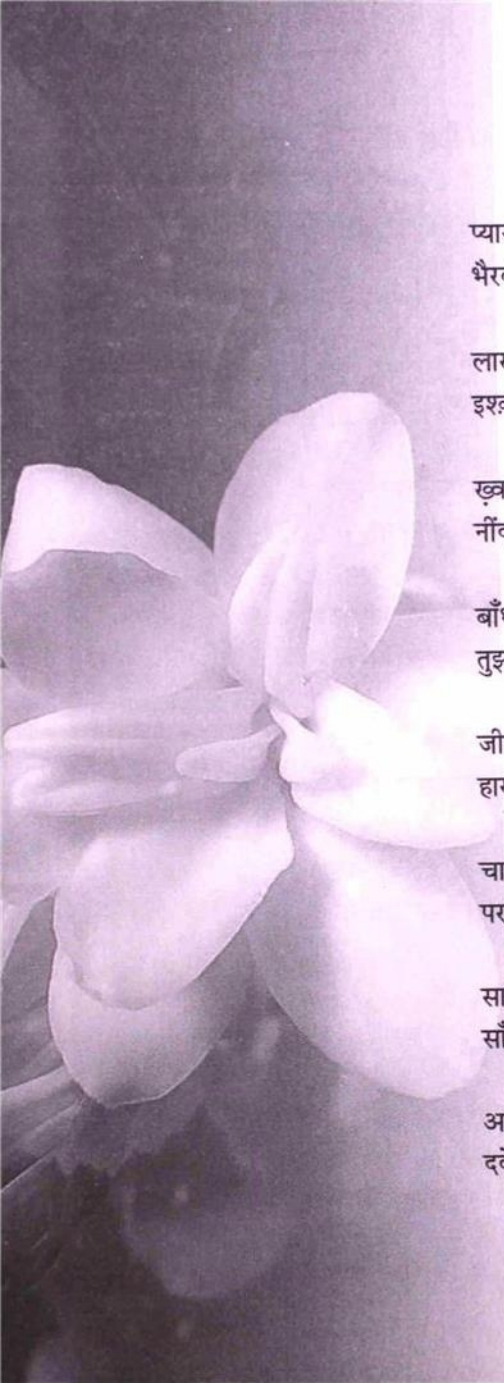

प्यार की तान जब सुनाई है
भैरवी हर किसी ने गाई है

लाख चाहो मगर नहीं छुपता
इश्क़ में बस यही बुराई है

ख़्वाब देखा है रात में तेरा
नींद में भी हुई कमाई है

बाँध रक्खा है याद ने तेरी
तुझ से कब मिल सकी रिहाई है

जीत का मोल जानिये उससे
हार जिसके नसीब आई है

चाहतें मेमने सी भोली हैं
पर ज़माना बड़ा कसाई है

साथ जब तक चले लगे अपनी
साँस होती मगर पराई है

आस छोड़ो नहीं कभी *'नीरज'*
दर्दे दिल की यही दवाई है

ooo

अगर दिल टूटने का डर सताये प्यार मत करना
नहीं मजबूत बाज़ू तो समंदर पार मत करना

नफ़ा नुकसान हर व्यापार का होता अहम हिस्सा
नफ़ा होगा सदा ये सोच कर व्यापार मत करना

क़यामत से क़यामत तक की बातें यार झूठी हैं
यहाँ पल का भरोसा भी मेरे सरकार मत करना

ग़लत है बात ये कोई अगर कहता है उल्फ़त में
कभी फ़रियाद मत करना कभी तकरार मत करना

कटा कर सर कमाई है बुज़ुर्गों ने ये आज़ादी
इसे नीलाम तुम यारों सरे बाज़ार मत करना

शराफ़त का तक़ाज़ा है तभी ख़ामोश है *'नीरज'*
फिसल जाये ज़बाँ इतना कभी लाचार मत करना

ooo

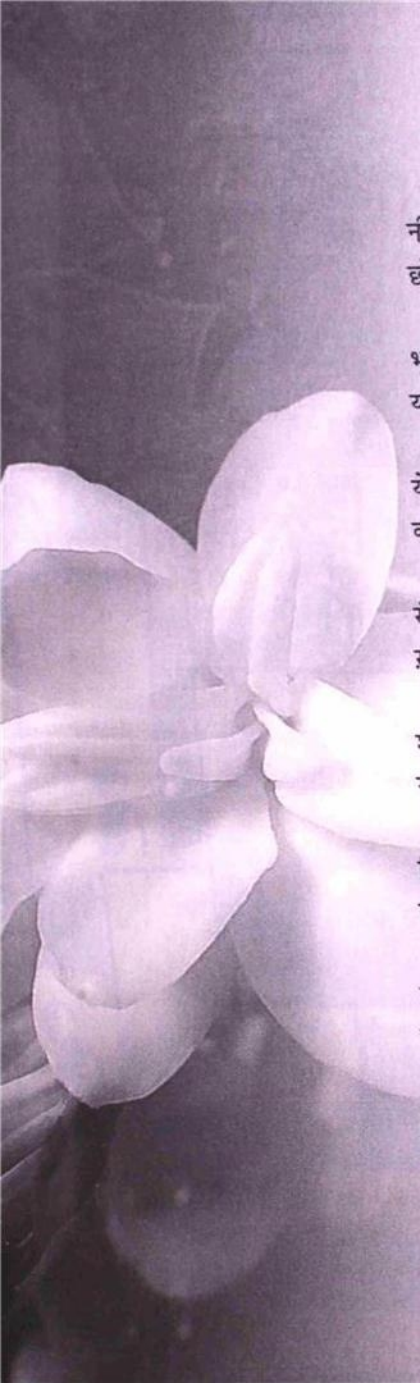

नींद गहरी में सुलाता कौन है
छोड़ कर ये जिस्म जाता कौन है

भूल जाना चाहता हूँ मैं जिसे
याद उसकी ही दिलाता कौन है

ये पता चलता नहीं है इश्क़ में
कौन पाता है लुटाता कौन है

रौंद कर गुल प्यार के इस मुल्क में
ख़ार नफ़रत के उगाता कौन है

शाम से ही आ रही हैं हिचकियाँ
गीत मेरा गुनगुनाता कौन है

किसको फ़ुर्सत आज के इस दौर में
रूठ जाने पर मनाता कौन है

राग अपने और अपनी ढफलियाँ
पीठ दूजी थपथपाता कौन है

हम किसे आवाज़ दें *'नीरज'* बता
देख कर बदहाल आता कौन है

ooo

ख़ौफ़ का ख़ंजर ज़िगर में
जैसे हो उतरा हुआ
आज का इंसान है कुछ
इस तरह सहमा हुआ

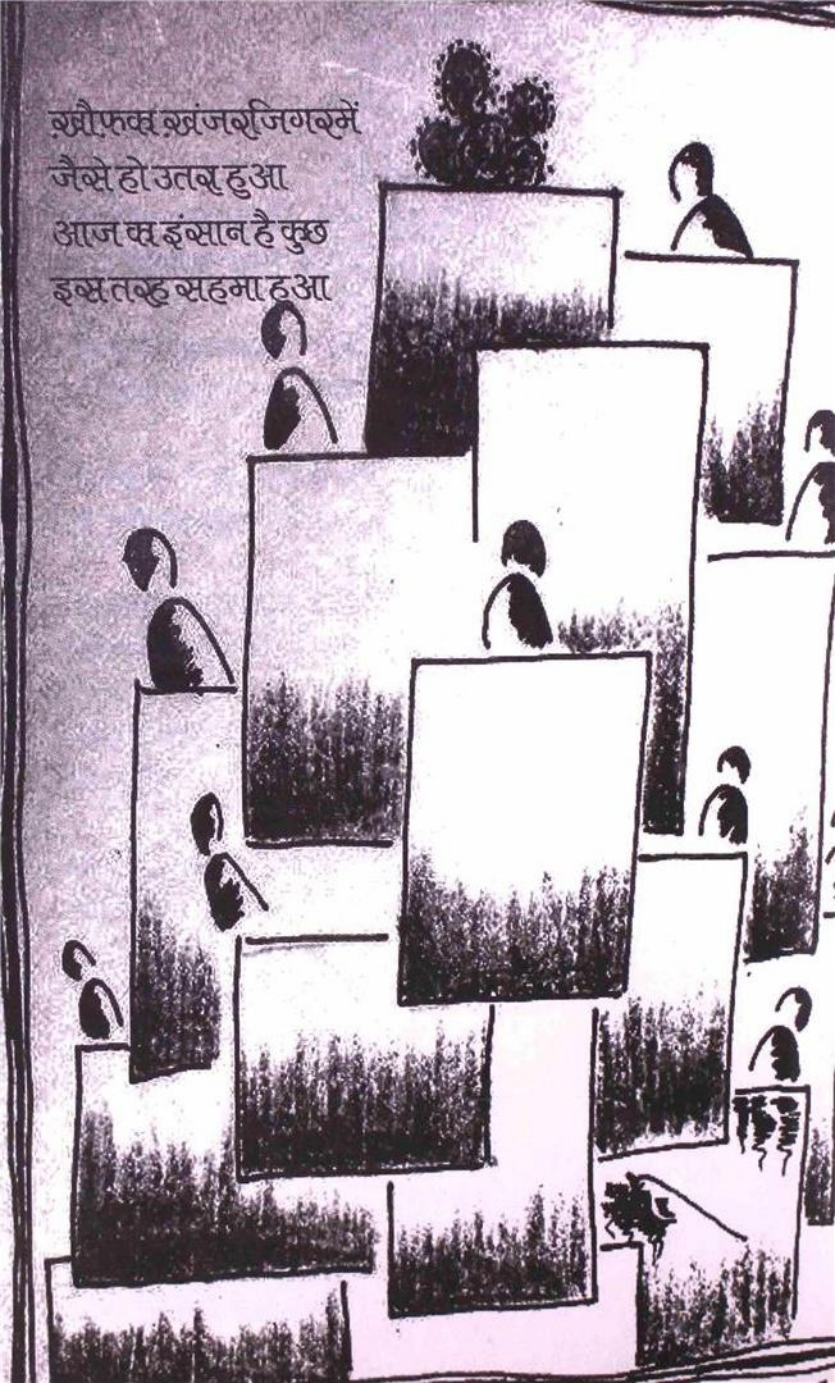

ख़ौफ़ का ख़ंजर जिगर में जैसे हो उतरा हुआ
आज का इंसान है कुछ इस तरह सहमा हुआ

चाहते हैं आप ख़ुश रहना अगर, तो लीजिये
हाथ में वो काम जो मुद्दत से है छूटा हुआ

दीनो-ईमाँ की नसीहत उस से है करना फ़ुज़ूल
जिसका दिल दो वक़्त की रोटी में है अटका हुआ

ख़ुशबू फूलों की ही तय करती है उनकी क़ीमतें
क्या कभी तुमने सुना है, ख़ार का सौदा हुआ

झूठ सीना तानकर चलता हुआ मिलता है अब
सच तो बेचारा है दुबका, काँपता डरता हुआ

अपनी बद-हाली में भी मत मुस्कुराना छोड़िये
त्यागता ख़ुशबू नहीं है फूल भी मसला हुआ

इश्क़ की रंगीनियों की बात करता था कभी
लग रहा शायर वही अब मर्सिया पढ़ता हुआ

तजरबों से जो मिला हमने लिखा *'नीरज'* वही
हम-ज़बाँ हैं आप मेरे, ये बहुत अच्छा हुआ

ooo

कब किसी के मन मुताबिक़ ही चली है ज़िन्दगी
राह तय करती है खुद जो, वो नदी है ज़िन्दगी

ये गुलाबों की तरह नाज़ुक नहीं रहती सदा
तेज़ काँटों सी भी तो चुभती कभी है ज़िन्दगी

मौत से बदतर समझ कर छोड़ देना ठीक है
ग़ैर के टुकड़ों पे तेरी गर पली है ज़िन्दगी

बस ज़रा सी सोच बदली तो मुझे ऐसा लगा
ये नहीं दुश्मन कोई सच्ची सखी है ज़िन्दगी

जंग का हिस्सा है यारों, जीतना या हारना
ख़ुश रहो गर आख़िरी दम तक लड़ी है ज़िन्दगी

मोल ही जाना नहीं इसका, लुटा देने लगे
क्या तुम्हें ख़ैरात में यारों! मिली है ज़िन्दगी

जब तलक जीना है *'नीरज'* मुस्कुराते ही रहो
क्या ख़बर हिस्से में अब कितनी बची है ज़िन्दगी

ooo

जब कुरेदोगे उसे तुम, फ़िर हरा हो जायेगा
ज़ख़्म अपनों का दिया, मुमकिन नहीं भर पायेगा

वक़्त को पहचान कर जो शख़्स चलता है नहीं
वक़्त ठोकर की ज़ुबाँ में ही उसे समझायेगा

शह्‌र अंधों का अगर हो तो भला बतलाइये
चाँद की बातें करो तो, कौन सुनने आयेगा

जिस्म की पुरपेंच गलियों में, भटकना छोड़ दो
प्यार की मंज़िल को रस्ता, यार दिल से जायेगा

बन गया इंसान वहशी, साथ में जो भीड़ के
जब कभी होगा अकेला, देखना पछ्तायेगा

बैठ कर आँसू बहाने में, बड़ी क्या बात है
बात होगी तब अगर तकलीफ़ में मुस्कायेगा

फूल हो या ख़ार अपने वास्ते है एक सा
जो अता कर दे ख़ुदा हमको सदा वो भायेगा

दिल से निकली है ग़ज़ल *'नीरज'* कभी तो देखना
झूम कर सारा ज़माना दिल से इसको गायेगा

ooo

दूर होंठों से तराने हो गये
हम भी आख़िर को सयाने हो गये

जो निशाने साधते थे कल तलक
आज वो ख़ुद ही निशाने हो गये

लूट कर जीने का आया दौर है
दान के क़िस्से, पुराने हो गये

भूलने का एक भी कारण नहीं
याद के लाखों, बहाने हो गये

आइये मिलकर चराग़ाँ फिर करें
आँधियाँ गुज़रे, ज़माने हो गये

साथ बच्चों के गुज़ारे पल थे जो
बेशक़ीमत वो ख़ज़ाने हो गये

देखकर *'नीरज'* को वो मुस्का दिये
बात इतनी थी, फ़साने हो गये

ooo

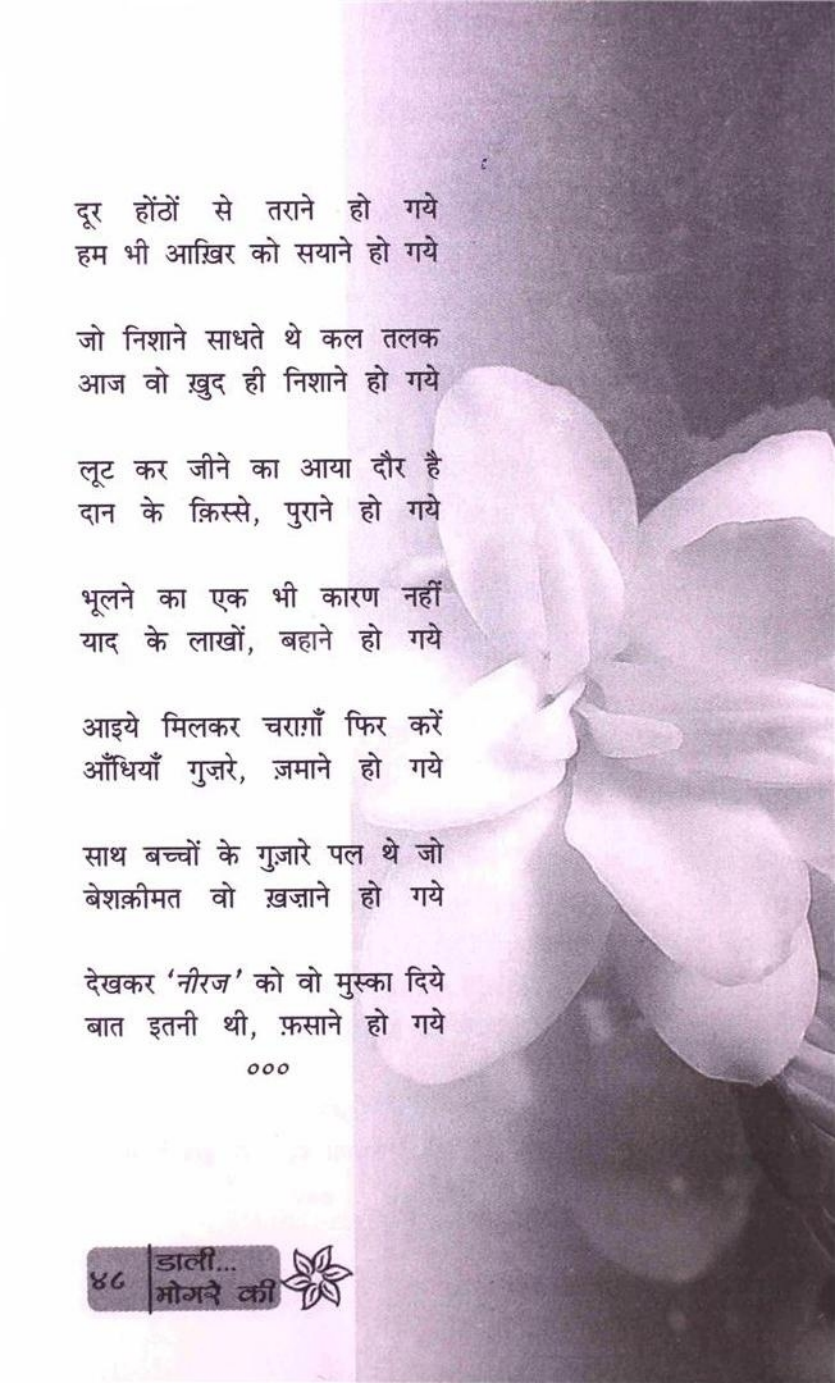

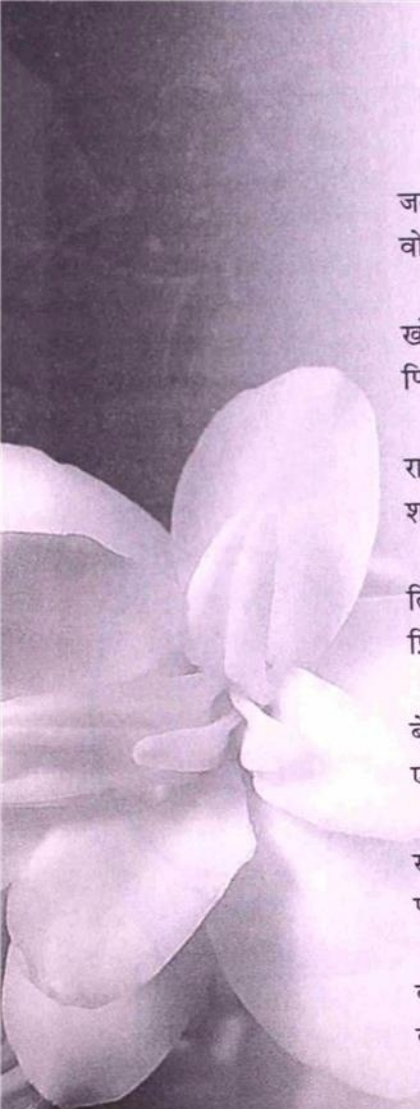

जब दिलों में रौशनी भर जायेगी
वो दिवाली भी कभी तो आयेगी

खोल कर रखिये किवाड़ों को सदा
फिर ख़ुशी वापस न जाने पायेगी

रात की रानी सी तेरी याद है
शाम होते ही मुझे महकायेगी

तिश्नगी यारों अगर मिट जाए तो
फ़िर कहाँ वो तिश्नगी कहलायेगी

बेगुनाही ही तेरी, इस दौर में
एक कारण बन, सज़ा दिलवायेगी

सोच बदलो तो तुम्हारी ज़िंदगी
फूल ख़ुशियों के सदा बरसायेगी

दर्द को महसूस शिद्दत से करो
दर्द में लज़्ज़त नज़र आ जायेगी

गुनगुनाते हैं वही *'नीरज'* ग़ज़ल
बात जो दिल की ज़बाँ पे लायेगी

ooo

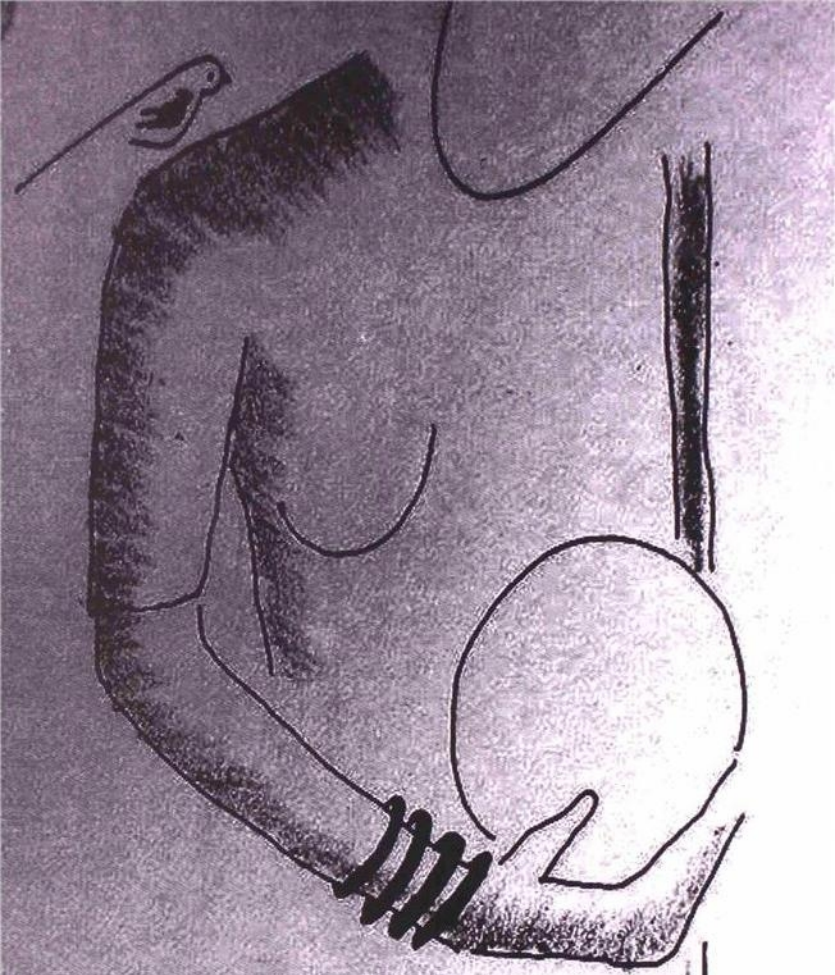

भले हो शान से बिकता बड़े होटल या ढाबों में
मगर जो माँ पकाती है, वही पकवान होता है

तर्तीब

1. समझेगा दीवाना क्या	11	19. अब रिश्तों में गहराई ?	33
2. तुम्हारे ज़हन में गर	12	20. इस दौर में इन्साँ	34
3. हो ख़फ़ा हमसे वो	13	21. मुश्किलों में	35
4. बात सचमुच में	15	22. बे सबब जो	36
5. कभी ऐलान ताक़त का	16	23. इस जहाँ में	37
6. देखने में मकाँ जो पक्का है	17	24. मिलेंगी तब	39
7. गर जवानी में तू थकेला है	18	25. समझ में कुछ नहीं आता	40
8. चाय की जब तेरे साथ	19	26. प्यार की तान	41
9. ये क़ैदे बा मशक्कत	21	27. अगर दिल टूटने का	42
10. मुश्किलों की यही हैं	22	28. नींद गहरी में	43
11. ज़िन्दगी में तब झमेला	23	29. ख़ौफ़ का ख़ंजर	45
12. तुझे किसी से प्यार हो	24	30. कब किसी के	46
13. मैं राज़ी तू राज़ी है	25	31. जब कुरेदोगे	47
14. इन्सानियत के वाक़ये	27	32. दूर होंठों से	48
15. नज़ाकत है न ख़ुश्बू	28	33. जब दिलों में रौशनी	49
16. ज़िन्दगी में जो ग़म	29	34. कभी वो देवता	51
17. तीर ख़ंजर की न	30	35. काँटों के बीच फूलों	52
18. दर्द दिल में मगर	31	36. याद हर पल तुझको	53

कभी वो देवता या फिर, कभी शैतान होता है
बदलता रंग गिरगिट से, अजब इंसान होता है

भले हो शान से बिकता बड़े होटल या ढाबों में
मगर जो माँ पकाती है, वही पकवान होता है

गुज़ारो साथ जिसके ज़िंदगी, वो भी हक़ीक़त में
हमारे वास्ते अक्सर बड़ा अनजान होता है

जहाँ दो वक़्त की रोटी, बड़ी मुश्किल से मिलती है
वहाँ ईमान का बचना, समझ वरदान होता है

उमंगें ही उमंगें हों, हो चाहत लक्ष्य पाने की
सफ़र जीवन का तब यारों बड़ा आसान होता है

न सोने से न चाँदी से, न हीरे से न मोती से
बुज़ुर्गों की दुआओं से, बशर धनवान होता है

कहीं बच्चों सी किलकारी, कहीं यादों की फुलवारी
मेरी गज़लों में बस *'नीरज'* यही सामान होता है

ooo

काँटों के बीच फूलों, के गीत गा रही है
मुझको ये ज़िंदगानी, जीना सिखा रही है

ग़द्दार हैं वतन के, दावे से कह रहा हूँ
ख़ुशबू न जिनको इसकी, मिट्टी से आ रही है

गहरे दिए हैं जब से, यारों ने ज़ख़्म मुझको
दुश्मन की याद तब से, मुझ को सता रही है

भरता कभी न देखा, कासा[1] ये हसरतों का
कोशिश में उम्र सबकी, बेकार जा रही है

करने कहाँ है देती, दिल की किसी को दुनिया
सदियों से लीक पर ही, चलना सिखा रही है

जी चाहता है सुर में, उसके मैं सुर मिला दूँ
आवाज़ कब से कोयल, पी को लगा रही है

ग़ज़लें ही मेरी साया, बन जायें काश *'नीरज'*
ये धूप ग़म की तीखी, मुझको जला रही है

ooo

1 कासा = कटोरा

याद हर पल तुझको करने, का सिला पाने लगा
मुझको आईना तेरा चेहरा, ही दिखलाने लगा

दिल की बंजर सी ज़मीं पे, जब तू बरसा प्यार से
ज़र्रा ज़र्रा खिल के इसका, झूमने गाने लगा

जिस्म के ही राज पथ पर, मैं जिसे ढूँढा सदा
दिल की पगडण्डी पे अब वो, सुख नज़र आने लगा

हसरतों की इमलियाँ, गिरने लगीं तब पेड़ से
हौसले के जब तू पत्थर, उसपे बरसाने लगा

मेरे घर से तेरे घर का, रास्ता मुश्किल तो है
पर मिलन की चाह से, आसान हो जाने लगा

बावरा सा दिल है मेरा, कितना समझाया इसे
ज़िंदगी के मायने बस, तुझ में ही पाने लगा

सोचने में वक़्त *'नीरज'* मत लगाना भूल कर
प्यार क़ातिल से भी कर, गर वो तुझे भाने लगा

ooo

ख़ार राहों के, फूलों में ढलने लगे
याद करके तुझे, हम जो चलने लगे

सब नियम क़ायदे, यार बह जायेंगे
इश्क़ का जब ये, दरिया मचलने लगे

दुश्मनों से निपटना, तो आसान था
साँप पर आस्तीनों, में पलने लगे

घोंसलों में परिंदे, जो महफ़ूज़ थे
छोड़ कर घोंसले, हाथ मलने लगे

तब समझिये कि, उसकी गली आ गई
साँस रुकने लगे, जिस्म जलने लगे

इतने मासूम हैं, हम किसे क्या कहें
फ़िर से बातों में, तेरी बहलने लगे

वक़्त का खेल देखो, तो *'नीरज'* ज़रा
प्यार जिनको था, उनको ही खलने लगे

ooo

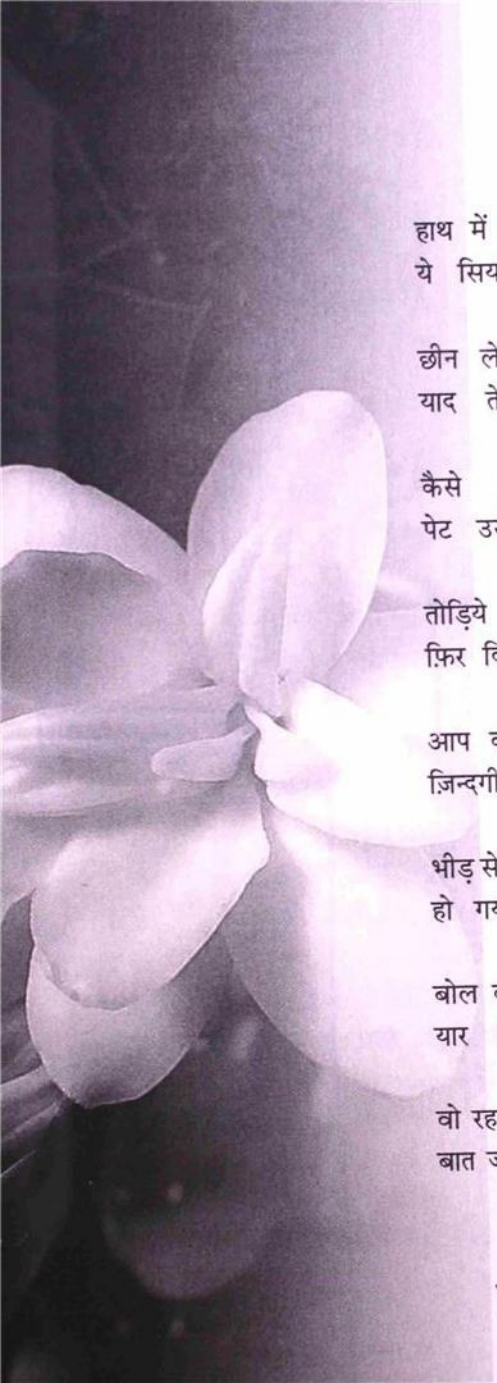

हाथ में फूल दिल में गाली है
ये सियासत बड़ी निराली है

छीन लेती है नींद आँखों से
याद तेरी सनम मवाली है

कैसे ईमानदारी याद रहे
पेट उसका जनाब ख़ाली है

तोड़िये मोह का ज़रा बंधन
फ़िर दिवाले में भी दिवाली है

आप की चाह आप की बातें
ज़िन्दगी इसमें ही निकाली है

भीड़ से जब अलग किया ख़ुद को
हो गयी हर नज़र सवाली है

बोल कर सच यही सुना सबसे
यार तेरी ज़बान काली है

वो रहा दोस्त तब तलक 'नीरज'
बात जब तक न उसकी टाली है

ooo

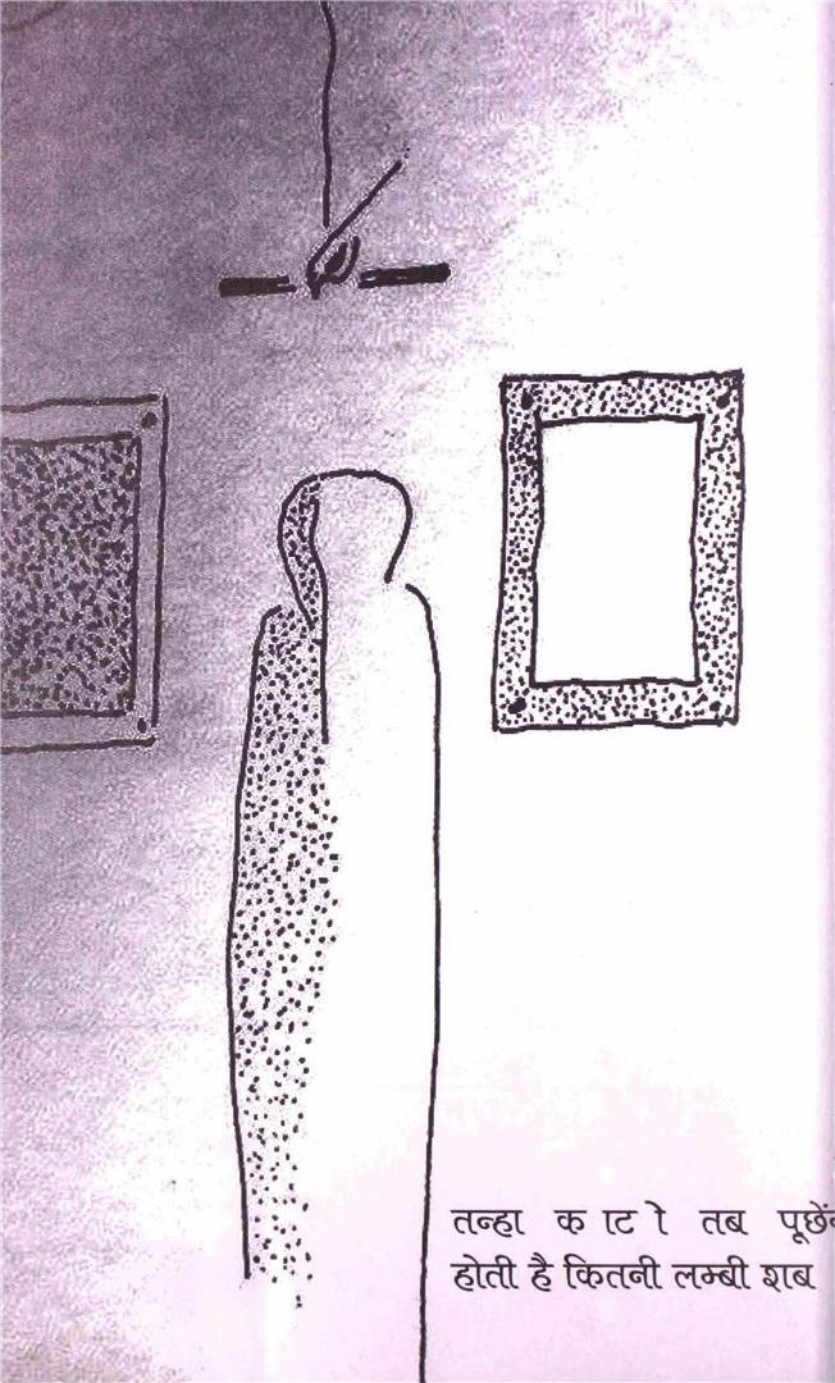

तन्हा क ट े तब पूछें
होती है कितनी लम्बी शब

कह ना पायें, जो उनके लब
वो आँखें, कह देती हैं सब

पहले तो सबका इक ही था
अब सबका अपना अपना रब

हालत तो देखो इन्साँ की
ख़ुद ही से डरता है वो अब

तन्हा काटो तब पूछेंगे
होती है कितनी लम्बी शब

ख़ुद को भी मुजरिम पाओगे
अपने भीतर, झाँकोगे जब

हरदम आँसू, मत छलकाओ
मन मर्ज़ी का, होता है कब

'नीरज' आँखें, खोलो देखो
हर सू उसके ही, हैं करतब

ooo

जी रहे उनकी बदौलत ही सभी हम शान से
जो वतन के वास्ते यारों गए हैं जान से

जीतने के गुर सिखाते हैं वही इस दौर में
दूर तक जिनका नहीं रिश्ता रहा मैदान से

आग में नफ़रत की जलने से भला क्या फ़ायदा
शौक़ जलने का अगर है तो जलो लोबान से

शानो शौकत माल दौलत चाह में शामिल नहीं
चाह है इतनी कटे ये ज़िंदगी सम्मान से

हार निश्चित है अगर तुमने समर्पण कर दिया
हौसलों की तेग़ लेकर लड़ पड़ो तूफ़ान से

तीर से तलवार से बंदूक तोपों से नहीं
दुश्मनी तो ख़त्म होगी सिर्फ़ इक मुस्कान से

ज़िंदगी की रेस में तुम दौड़ते बेशक़ रहो
पर चले मत दूर जाना ख़ुद की ही पहचान से

लोग वो *'नीरज'* हमेशा ही पसंद आये हमें
भीड़ में जो अक़्लमंदों की मिले नादान से

ooo

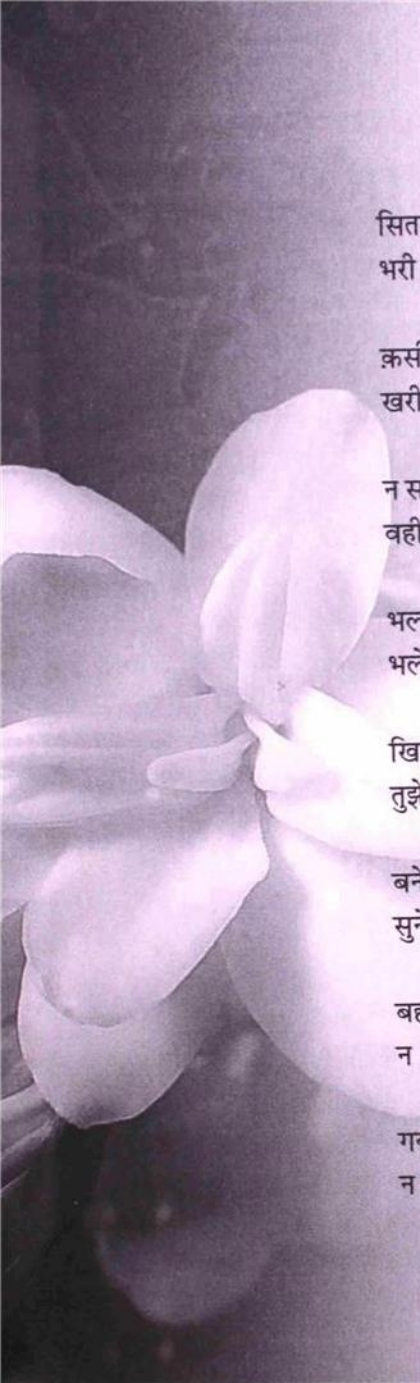

सितम जब ज़माने ने जी भर के ढाये
भरी साँस गहरी बहुत खिलखिलाये

क़सीदे पढ़े जब तलक ख़ुश रहे वो
खरी बात की तो बहुत तिलमिलाये

न समझे किसी को मुक़ाबिल जो अपने
वही देख शीशा बड़े सकपकाये

भलाई किये जा इबादत समझ कर
भले पीठ कोई नहीं थपथपाये

खिली चाँदनी या बरसती घटा में
तुझे सोच कर ये बदन थरथराये

बनेगा सफल देश का वो ही नेता
सुने गालियाँ पर सदा मुस्कुराये

बहाने बहाने बहाने बहाने
न आना था फिर भी हज़ारों बनाये

गया साल *'नीरज'* तो था हादसों का
न जाने नया साल क्या गुल खिलाये

ooo

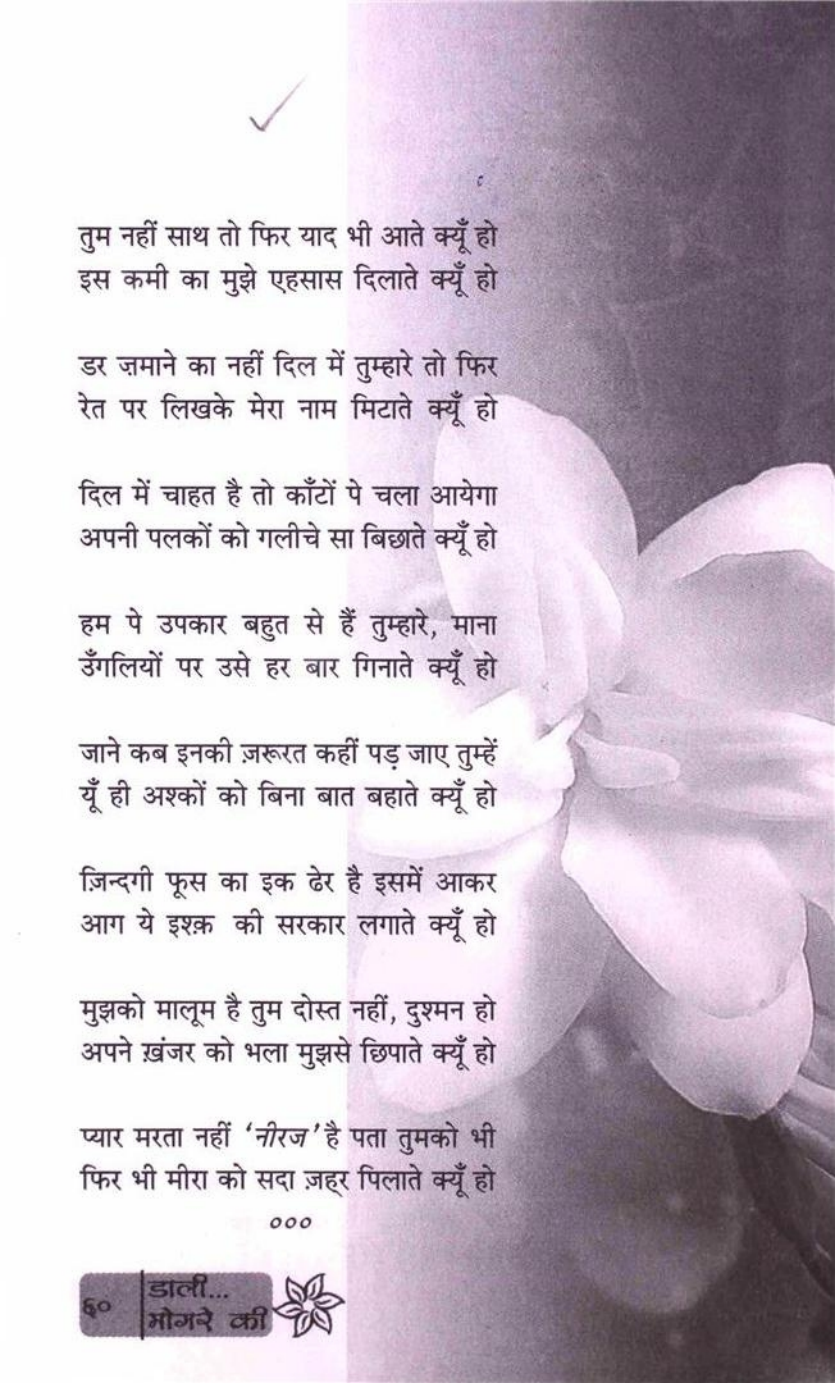

तुम नहीं साथ तो फिर याद भी आते क्यूँ हो
इस कमी का मुझे एहसास दिलाते क्यूँ हो

डर ज़माने का नहीं दिल में तुम्हारे तो फिर
रेत पर लिखके मेरा नाम मिटाते क्यूँ हो

दिल में चाहत है तो काँटों पे चला आयेगा
अपनी पलकों को गलीचे सा बिछाते क्यूँ हो

हम पे उपकार बहुत से हैं तुम्हारे, माना
उँगलियों पर उसे हर बार गिनाते क्यूँ हो

जाने कब इनकी ज़रूरत कहीं पड़ जाए तुम्हें
यूँ ही अश्कों को बिना बात बहाते क्यूँ हो

ज़िन्दगी फूस का इक ढेर है इसमें आकर
आग ये इश्क़ की सरकार लगाते क्यूँ हो

मुझको मालूम है तुम दोस्त नहीं, दुश्मन हो
अपने ख़ंजर को भला मुझसे छिपाते क्यूँ हो

प्यार मरता नहीं *'नीरज'* है पता तुमको भी
फिर भी मीरा को सदा ज़हर पिलाते क्यूँ हो

ooo

तर्तीब

37. ख़ार राहों के 54
38. हाथ में फूल 55
39. कह ना पाएँ 57
40. जी रहे उनकी बदौलत 58
41. सितम जब ज़माने ने 59
42. तुम नहीं साथ तो फिर 60
43. पहले मन में तोल मियाँ 61
44. भला करता है जो सबका 63
45. तल्ख़ियाँ दिल में 64
46. हर नदी में हो रवानी 65
47. मज़े की बात है 66
48. इधर ये जुबाँ कुछ 67
49. जब से तेरे गीत 69
50. मान लूँ मैं ये करिश्मा 70
51. बेजा क्यूँ शर्माने का 71
52. रक्खोगे बात दिल की 72
53. गर हिम्मत हो तो बदलो 73
54. हर बात पे अगर वो 75
55. ये कैसे रहनुमा 75
56. हम तो बस अटकलें 76
57. साँप से बेकार ही में 77
58. गीत बचपन के वे 78
59. मुस्कुरा कर डालिए 81
60. ज़ख़्म सबसे छिपाइये 82
61. ज़िंदगी की राह में 83
62. यूँ हसरतों का दायरा 84
63. क्यों, कैसे ये मत सोचो 85
64. चाह तुझ को नहीं है 87
65. बे-मतलब इन्सान 88
66. दीप जलते रहें 89
67. रंज़िशों को अलविदा 90
68. ख़ौफ़ का जो 91
69. उलझनें उलझनें 93
70. सब को अपना 94
71. सल्तनत ख़ुद को 95
72. तुझे दिल याद 96

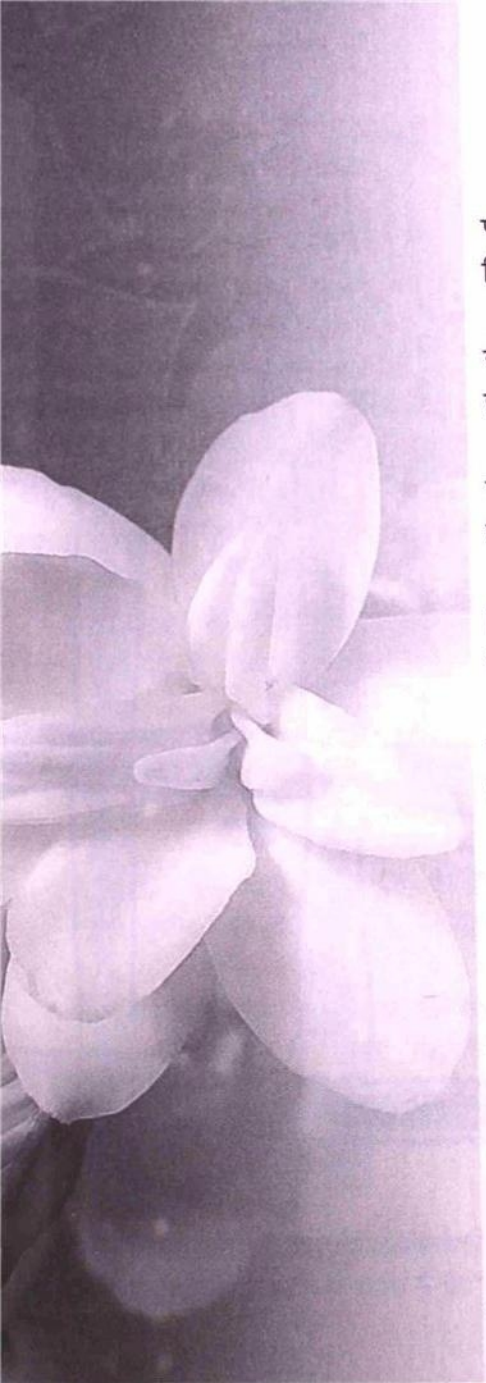

पहले मन में तोल मियाँ
फ़िर दिल की तू बोल मियाँ

जो रब दे मंजूर हमें
हम तो हैं कशकोल[1] मियाँ

चाहे कुछ मत काम करो
लेकिन पीटो ढोल मियाँ

किन रिश्तों की बात करें
सबमें दिखती पोल मियाँ

बातें रहतीं याद सदा
उनमें मिशरी घोल मियाँ

जो भी आता हाथ नहीं
लगता है अनमोल मियाँ

'नीरज' सच्चे मीत बिना
जीवन डाँवाडोल मियाँ

ooo

1 कश्कोल = भिक्षा पात्र

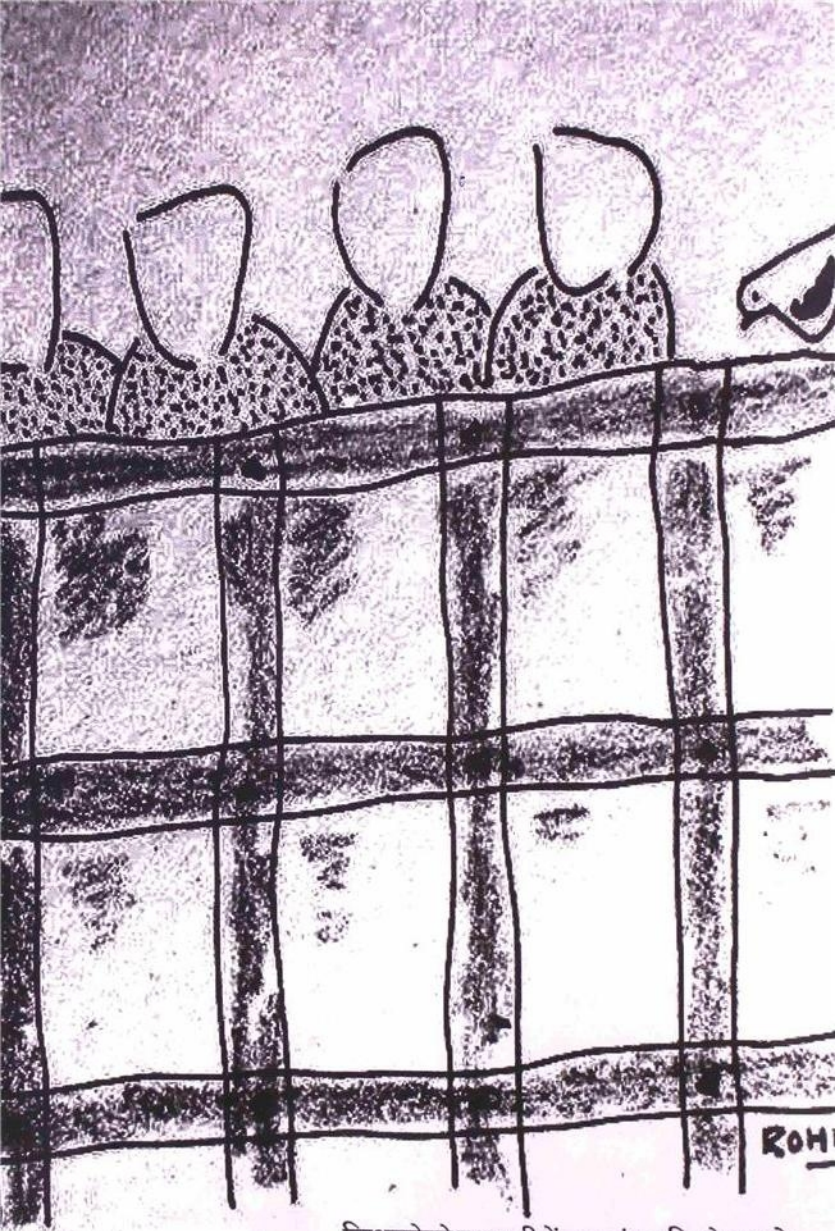

जिधर देखे उधर सीमेंट का जंगल दिखे उसके
पड़ी है सोच में कोयल, कहाँ वो बैठ कर गाये

भला करता है जो सबका, नहीं बदले में कुछ पाये,
कहाँ पेड़ों को मिलते हैं, कभी ठंडे घने साये

रखा महफ़ूज़ अपने ही, लिये तो ख़ाक है जीवन
बहुत अनमोल है मिट कर, किसी के काम गर आये

करम जिसने किया मुझ पर, यक़ीनन ग़ैर ही होगा
हुई ये सोच तब पुख़्ता, सितम अपनों ने जब ढाये

जिधर देखे उधर सीमेंट का जंगल दिखे उसको
पड़ी है सोच में कोयल, कहाँ वो बैठ कर गाये

ख़ुशी उसकी बयाँ करना, बहुत मुश्किल है लफ़्ज़ों में
अचानक से कोई दुश्मन, गले जिसको लगा जाये

तुझे दूँगा सभी कुछ आज, बोला कृष्ण ने हमसे
सुदामा की तरह चावल, अगर तू प्रेम से लाये

किया जब याद दिल से तब, यही चाहा कि वो *'नीरज'*
बहारों की तरह आये, घटाओं की तरह छाये

ooo

तल्ख़ियाँ दिल में न घोला कीजिए
गाँठ लग जाए तो खोला कीजिये

आप में कोई बुराई हो न हो
आप ख़ुद को नित टटोला कीजिये

दिल जिसे सुन कर दुखे हर एक का
सच कभी ऐसा न बोला कीजिये

प्यारी-प्यारी सी लगेगी ज़िंदगी
आप अपने दिल को भोला कीजिये

नाज़ुकी शबनम सी रखिये सोच में
जोश लेकिन अपना शोला कीजिये

प्यार की दिल में बजे जब बाँसुरी
मस्तियों में झूम डोला कीजिये

अश्क 'नीरज' जी बड़े अनमोल हैं
सिर्फ़ ख़ुश होने पे ढोला कीजिये

ooo

हर नदी में हो रवानी, भूल जा
बिन दुखों के ज़िंदगानी, भूल जा

याद करने से जिन्हें तकलीफ़ हो
वो सभी बातें पुरानी, भूल जा

रोटियाँ देकर कहा ये शहर ने
गाँव की अब रुत सुहानी, भूल जा

भीड़ है ये झूठ की इसमें तेरा
साथ देगी सच बयानी, भूल जा

जिस्म की गलियों में उसको ढूँढ अब
इश्क़ वो कल का रुहानी, भूल जा

बाल काले गर किये ये सोचकर
लौट आएगी जवानी, भूल जा

खिल रहे इसमें हैं *'नीरज'* देख तू
है मलिन पोखर का पानी, भूल जा

ooo

मज़े की बात है जिनका हमेशा ध्यान रखते हैं
वो ही अपने निशाने पर हमारी जान रखते हैं

मुहब्बत, फूल, ख़ुशियाँ, पोटली भर के दुआओं की
सदा हम साथ में अपने यही सामान रखते हैं

यही बस एक कारण है, मेरे तन मन के महकने का
जलाये दिल में तेरी याद का लोबान रखते हैं

पथिक पाते वही मंज़िल भले हों ख़ार राहों में
जो तीखे दर्द में लब पर मधुर मुस्कान रखते हैं

मिलेगी ही नहीं थोड़ी जगह दिल में कभी उनके
तिजोरी है भरी जिनकी जो झूठी शान रखते हैं

उसी की बात होती है उसी को पूजती दुनिया
जो भारी भीड़ में अपनी अलग पहचान रखते हैं

गुलाबों से मुहब्बत है जिसे उसको ख़बर कर दो
चुभा करते वो काँटे भी बहुत अरमान रखते हैं

बहारों के ही बस आशिक़ नहीं ये जान लो *'नीरज'*
ख़िज़ाओं के लिए भी दिल में हम सम्मान रखते हैं

०००

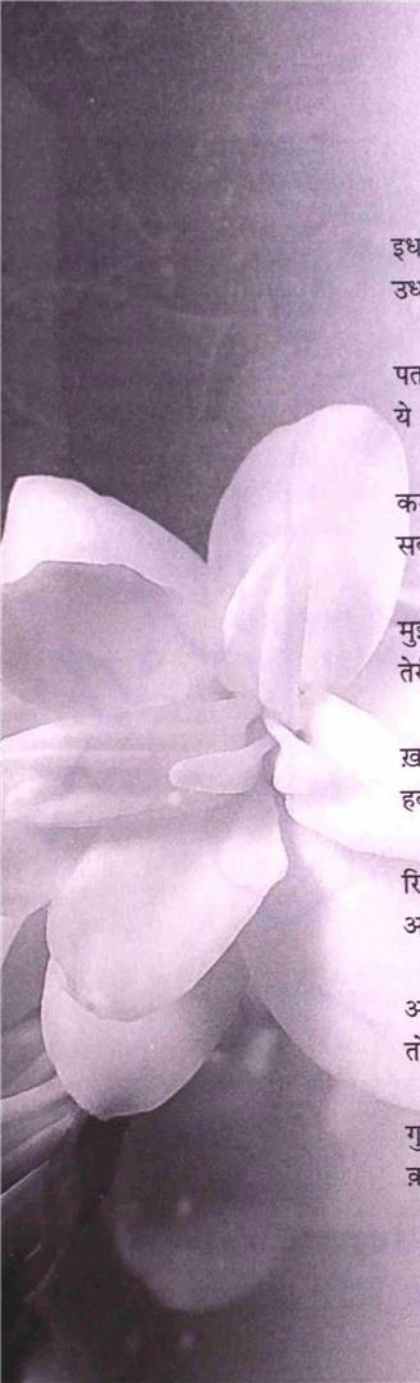

इधर ये ज़ुबाँ कुछ बताती नहीं है
उधर आँख कुछ भी छुपाती नहीं है

पता है रिहाई की दुश्वारियाँ पर
ये क़ैदे क़फ़स[1] भी तो भाती नहीं है

कमी रह गयी होगी कुछ तो कशिश में
सदा लौट कर यूँ ही आती नहीं है

मुझे रास वीरानियाँ आ गयी हैं
तेरी याद भी अब सताती नहीं है

ख़फ़ा है मेहरबान है कौन जाने
हवा जब दिये को बुझाती नहीं है

रिआया समझदार होने लगी अब
अदा हुक्मराँ की लुभाती नहीं है

अगर हो गए सोच में आप बूढ़े
तो बारिश बदन को जलाती नहीं है

गुमाँ प्यार का हो रहा तब से *'नीरज'*
क़सम जब से मेरी वो खाती नहीं है

ooo

1 क़फ़स = पिंजरा

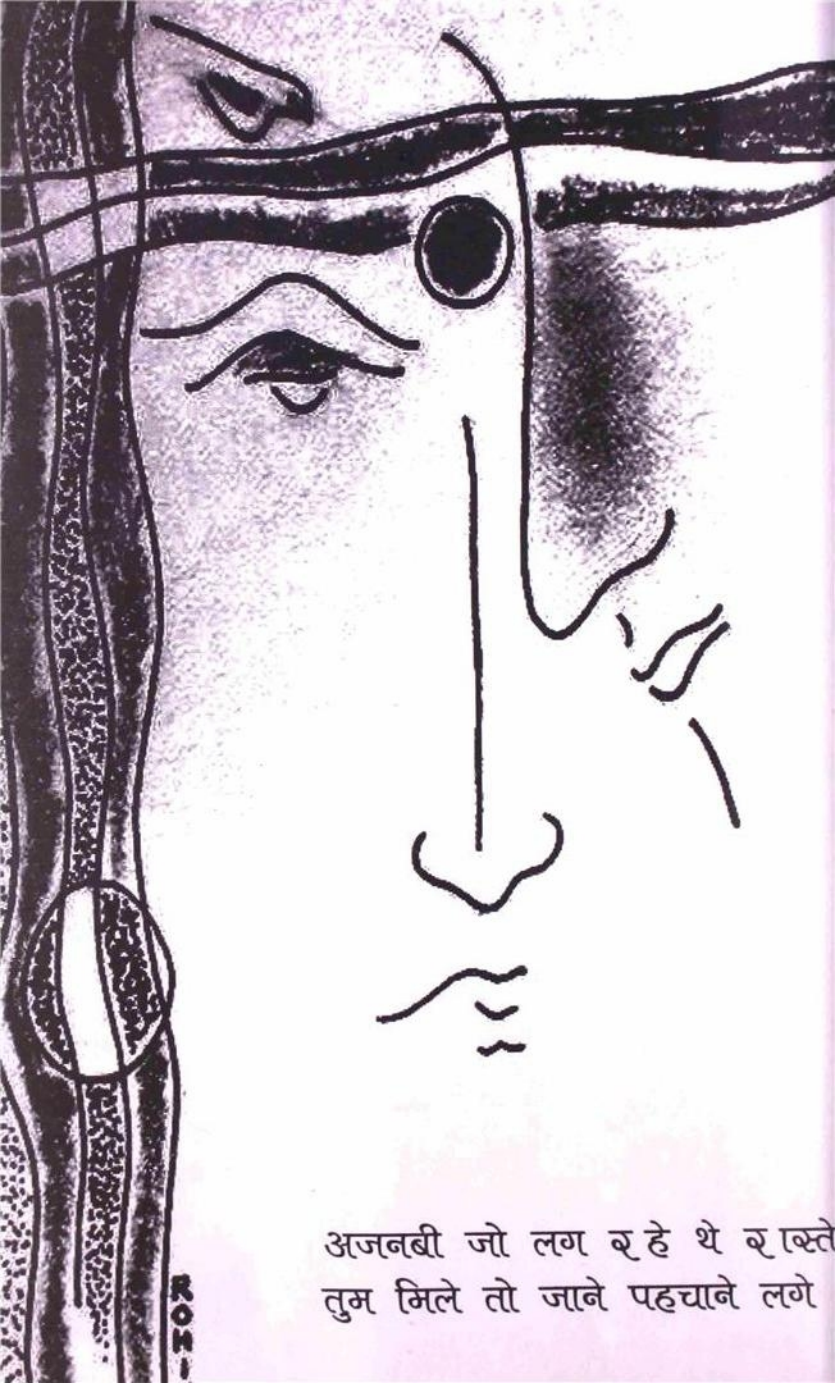

अजनबी जो लग रहे थे रास्ते
तुम मिले तो जाने पहचाने लगे

गीत तेरे जब से हम गाने लगे
हैं जुदा सबसे नज़र आने लगे

आईने में ख़ास ही कुछ बात थी
आप जिसको देख शरमाने लगे

सोच को अपनी बदल के देखिये
आपका मन जब भी मुरझाने लगे

बिन तुम्हारे ख़ैरियत की बात भी
पूछते जब लोग तो ताने लगे

अजनबी जो लग रहे थे रास्ते
तुम मिले तो जाने पहचाने लगे

यूँ दिये उसने तो थे ईनाम पर
जाने क्यों हमको वो हर्जाने लगे

साँस का चलना थी *'नीरज'* ज़िंदगी
तुम मिले तो मायने पाने लगे

ooo

मान लूँ मैं ये करिश्मा प्यार का कैसे नहीं
वो सुनाई दे रहा सब जो कहा तुमने नहीं

इश्क़ का सब से सही मैं ये सलीक़ा जानता
जान दे दो इस तरह की हो कहीं चरचे नहीं

तल्ख़ बातों को ज़ुबाँ से दूर रखना सीखिए
घाव कर जाती हैं गहरे जो कभी भरते नहीं

अब्र[1] लेकर घूमता है ढेर-सा पानी मगर
फ़ायदा कोई कहाँ गर प्यास पे बरसे नहीं

छोड़ देते मुस्कुरा कर भीड़ के संग दौड़ना
लोग ऐसे ज़िंदगी में हाथ फिर मलते नहीं

ख़ुश्बुएँ बाहर से *'नीरज'* लौट वापस जाएँगी
घर के दरवाज़े अगर तुमने खुले रक्खे नहीं

ooo

1 अब्र : बादल

तर्तीब

73. बरसती घटा में 97
74. होगी तलाशे इत्र 99
75. हाल बेताब हों 100
76. साल दर साल 101
77. आप आँखों में 102
78. साथ सच के ही 103
79. जिस शजर ने 105
80. गुफ़्तगू इस से भी 106
81. तन्हाई की रातों में 107
82. गुलों को चूम के 108
83. झूम कर आई घटा 109
84. दिल मिले दिल से 111
85. तन्हाई में गाया कर 112
86. फ़ासले मत बढ़ा 113
87. संजीदगी 114
88. दोस्त सब जान से 115
89. चाहते हैं लौ लगाना 117
90. नया गीत हो 118
91. देश के हालात 119
92. जिएँ ख़ुद के लिए 120
93. कौन कहता है छुप के 121
94. फिर परिंदा चला 123
95. ज़बान पर सभी की 124
96. नहीं है अरे ये बग़ावत 125
97. मिलेंगी तब हमें सच्ची 126
98. सीधी बातें, सच्ची बातें 127
99. हर अदा में तेरी दिलकशी 129
100. कोयल की कूक 130
101. मेरे बचपन का वो साथी 131
102. जड़ जिसने थी काटी प्यारे 132
103. मुझे क्या सोच कर 133

होली

104. हुआ जो सोच में बूढ़ा 137
105. केसरिया, लाल, पीला, 138
106. आँखों में तेरी अपने, 139
107. पिलायी भाँग होली में, 140
108. कमीने, पाजी, हरामी, 141
109. करें जब पाँव खुद नर्तन, 143

मुम्बइया ज़बान की ग़ज़ल

बेजा क्यूँ शर्माने का
अपना हक़ जतलाने का

जीना मुश्किल है तो क्या
इस डर से मर जाने का ?

जब भी जी घबराए तो
गीत लता के गाने का

सबके पास नमक है रे
अपने ज़ख़्म छुपाने का

पल दो पल के जीवन में
खिट खिट कर क्या पाने का

देश नहीं जिसको प्यारा
उसका गेम बजाने का

रब को गर पाना है तो
ख़ुद को यार मिटाने का

'नीरज' जी ख़ुश रहने को
कड़वी बात भुलाने का

०००

THIS EBOOK IS DOWNLOADED FROM
SHAAHISHAYARI.COM

LARGEST COLLECTION OF URDU
SHERS, GHAZALS, NAZMS AND EBOOKS.

रक्खोगे बात दिल की गर तुम ज़बाँ पे लाकर
जीना नहीं पड़ेगा फिर मुँह को यूँ छिपा कर

जज़्बात के ये कागज़ रखिये न यूँ खुले में
कोई हवा का झौंका ले जाएगा उड़ाकर

तुम चाहतों की डोरी इतनी भी मत बढ़ाना
घिर जाय आँधियों में दिल की पतंग जा कर

ख़ंजर बहुत है पैना यारों ये दुश्मनी का
करता उसे भी घायल जो देखता चला कर

अपने सिवा नहीं गर तुमको दिखाई देता
फिर फ़ायदा ही क्या है यूँ ज़िंदगी बिता कर

इस पाप की परत को है उम्र भर चढ़ाया
अब चाहते हटाना गंगा में बस नहा कर

बुनियाद ही नहीं है *'नीरज'* तेरे मकाँ में
कब तक इसे रखेगा गिरने से तू बचा कर

ooo

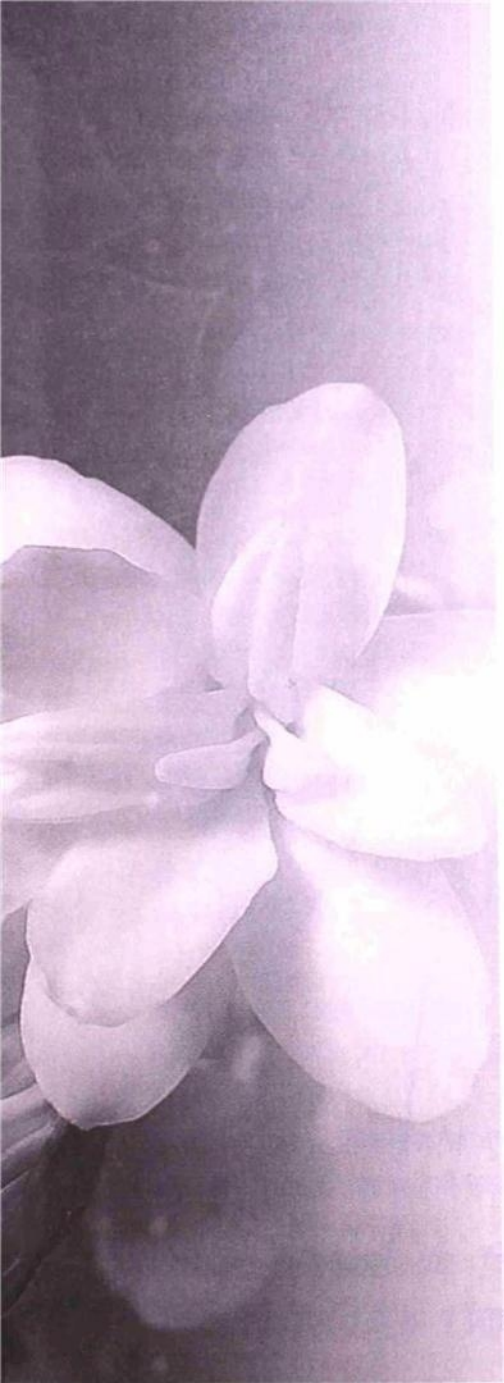

बदलो, गर हिम्मत हो तो
मत कोसो यूँ क़िस्मत को

प्यार, वफ़ा, इन्साफ़, दया
किस दुनिया में रहते हो

छोड़ो मज़हब की बातें
तुम भूखे को रोटी दो

देश जले नेता खेलें
अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो

देखो हाल सियासत का
लगती है सर्कस का शो

उसको बरकत मिलती है
बिन माँगे ही देता जो

'नीरज' नश्वर जीवन में
क्या तेरा 'ये' मेरा 'वो'

०००

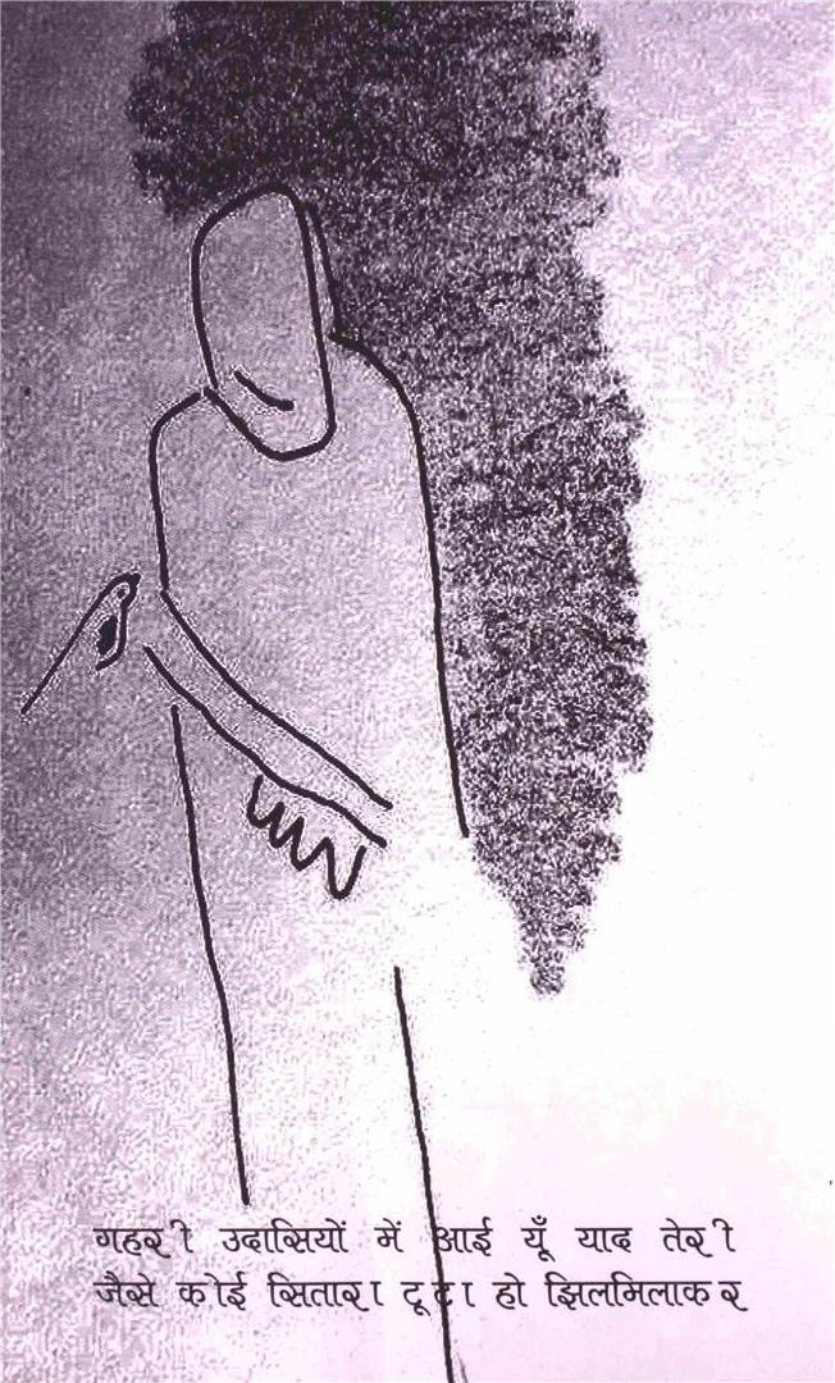

गहरी उदासियों में आई यूँ याद तेरी
जैसे कोई सितारा टूटा हो झिलमिलाकर

THIS EBOOK IS DOWNLOADED FROM
SHAAHISHAYARI.COM

LARGEST COLLECTION OF URDU
SHERS, GHAZALS, NAZMS AND EBOOKS.

हर बात पे अगर वो बैठेंगे मुँह फुला कर
रूठे हुओं को कब तक लायेंगे हम मना कर

सच बोल कर सदा यूँ दिल ख़ुश हुआ हमारा
जैसे कि कोई बच्चा हँसता हो खिलखिलाकर

काफ़ूर हो गए जो मिलने पे थे इरादे
देखा किये हम उन को बस पास में बिठा कर

अपने रक़ीब को जब देखा वहाँ तो जाना
रुसवा किया गया है हमको तो घर बुला कर

पहले दिए हज़ारों जिसने थे घाव गहरे
मरहम लगा रहा है अब वो नमक मिला कर

गहरी उदासियों में आई यूँ याद तेरी
जैसे कोई सितारा टूटा हो झिलमिलाकर

हमको यक़ीं है उसने आना नहीं है फिर भी
बैठे हुए हैं पलकों को राह में बिछा कर

गर खोट मन में तेरे बिलकुल नहीं है *'नीरज'*
फिर किस वजह से करते हो बात फुसफुसाकर

०००

ये कैसे रहनुमा तुमने चुने हैं
किसी के हाथ के जो झुनझुने हैं

तलाशो मत तपिश रिश्तों में यारों
शुकर मानो अगर वो गुनगुने हैं

बहुत काँटे चुभेंगे याद रखना
अलग रस्ते अगर तुमने चुने हैं

'दया' 'ममता' 'भलाई' और 'नेकी'
ये सारे शब्द क़िस्सों में सुने हैं

रिआया का सुनाओ दुख अभी मत
अभी मदिरा है और काजू भुने हैं

यहाँ जीने के दिन हैं चार केवल
मगर मरने के मौके सौ गुने हैं

परिंदे प्यार के उड़ने दे 'नीरज'
हटा जो जाल नफ़रत के बुने हैं

ooo

हम तो बस अटकलें लगाते हैं
कब किसे यार जान पाते हैं

आप ख़ुश हैं मेरे बग़ैर अगर
अश्क छुप-छुप के क्यूँ बहाते हैं

लाख इनका करो ख़्याल मगर
क़ैद में पंछी फड़फड़ाते हैं

नाम माँ का ज़बाँ पे आता है
दर्द में जब भी बिलबिलाते हैं

ज़िन्दगी है गुलाब की डाली
साथ फूलों के ख़ार आते हैं

चाँद आता नज़र अमावस में
आप जब ग़म में मुस्कुराते हैं

हुस्न निखरे कई गुना 'नीरज'
फूल जब ओस में नहाते हैं

ooo

साँप को बदनाम यूँ ही कर रहा है आदमी
काटने से आदमी के मर रहा है आदमी

दुश्मनी की बात करता कौन सा मज़हब बता
क़त्ल उसके नाम पे क्यूँ कर रहा है आदमी

क़ातिलों को दे चुनौती तो बचे शायद मियाँ
अब कहाँ महफ़ूज़ अपने घर रहा है आदमी

प्यार की ख़ुशबू से यारों जो महकता था चमन
अब धुआँ नफ़रत का उस में भर रहा है आदमी

मिट गया *'नीरज'* निशाँ उसका सदा के वास्ते
बिन उसूलों के कभी भी गर रहा है आदमी

ooo

आभार

ग़ज़ल का ककहरा सिखाने वाले प्राण शर्मा साहब, अनुज द्विजेन्द्र द्विज,
मयंक अवस्थी और गुरुदेव पंकज सुबीर का।

गीत बचपन के वो सुहाने से
लौटते कब हैं फिर बुलाने से

बातें सच्ची कभी-कभी यारो
झूठ लगती हैं फुसफुसाने से

हौसले क़ातिलों के बढ़ते हैं
बाँध के हाथ गिड़गिड़ाने से

रब कभी कुछ नहीं दिया करता
रात-दिन घंटियाँ बजाने से

याद एहसान कौन रखता है
फ़ायदा भूल जा गिनाने से

मायने ही न जो समझ पाए
बात बचिए उसे सुनाने से

इश्क़ भी बोझ सा लगे *'नीरज'*
हर घड़ी यार को मनाने से

०००

फूल तितली रंग ख़ुशबू जल हवा धरती गगन
सब दिया रब ने नहीं पर हम झुके आभार से

मुस्कुरा कर डालिए तो इक नज़र बस प्यार से
नर्म पड़ते देखिये दुश्मन सभी ख़ूंखार से

तौल बाज़ू, कूद जाओ इस चढ़े दरिया में तुम
क्यों खड़े हो यार तट पर ताकते लाचार से

वक़्त मत ज़ाया कभी करना पलटने में उसे
गर नहीं मिलता जो चाहा आपको सरकार से

नाम तो लेता नहीं मेरा मगर लगता है ये
रात भर आवाज़ देता है कोई उस पार से

फूल तितली रंग ख़ुशबू जल हवा धरती गगन
सब दिया रब ने नहीं पर हम झुके आभार से

जब तलक है पास क़ीमत का पता चलता नहीं
आप उनसे पूछिए जो दूर हैं परिवार से

ज़िन्दगी में यूँ सभी से ही मिली ख़ुशियाँ मगर
जो बिताये साथ तेरे दिन थे वो त्योहार से

झूठ कहने का हुनर *'नीरज'* अगर सीखा नहीं
आप सहरा में नज़र आओगे फिर गुलज़ार से

ooo

ज़ख़्म सबसे छुपाइये साहब
भीड़ में मुस्कुराइये साहब

ख़ाक मत डालिये शराफ़त पर
आप इज़्ज़त कमाइये साहब

भूख़ से बिलबिलाते लोगों को
क़ायदे मत सिखाइये साहब

ख़ार पर तितलियाँ नहीं आतीं
फूल सा मुस्कुराइये साहब

दीजिये खाद जब तलक फल दे
वरना आरी चलाइये साहब

तेज़ तपती हुई दुपहरी में
गीत बारिश के गाइये साहब

दर्द की इंतिहा परखने को
चोट अपनों से खाइये साहब

आप कहते हैं जो उसे *'नीरज'*
आचरण में भी लाइये साहब

०००

ज़िंदगी की राह में हो जायेंगी आसानियाँ
मुस्कुराएँ याद कर बचपन की वो शैतानियाँ

होशियारी भी ज़रूरी मानते हैं हम मगर
लुत्फ़ आता ज़िन्दगी में जब करें नादानियाँ

देख हालत देश की रोकर शहीदों ने कहा
क्या यही दिन देखने को हमने दीं कुर्बानियाँ

तेरी यादें तितलियाँ बन कर हैं हरदम नाचतीं
चैन लेने ही नहीं देतीं कभी मरजानियाँ

तब रहा करता था बरसों याद सबको हादसा
अब नहीं होती किसी को जान कर हैरानियाँ

जी हुज़ूरी जब तलक है तब तलक वो आपका
फेर लेता है नज़र जब भी हों ना-फ़र्मानियाँ

बरक़तें खुलकर बरसतीं उन पे हैं *'नीरज'* सदा
मानते हैं बेटियों को जो घरों की रानियाँ

ooo

यूँ हसरतों का दायरा हद से बढ़ा लिया
ख़ुशियों को ज़िन्दगी से ही अपनी घटा लिया

ख़ुद पर भरोसा था तभी, उसने ये देखिये
दीपक हवा के ठीक मुक़ाबिल जला लिया

मेहनतकशों को नींद कहीं पे जो आ गयी
बिस्तर ज़मीं को, बाँह को तकिया बना लिया

शिद्दत से है तलाश मुझे ऐसे शख़्स की
इस दौर में है जिसने भी ईमाँ बचा लिया

वो ज़िन्दगी भी ज़िन्दगी क्या बोलिये मियाँ
औरों से ज़िन्दगी में जो तुमने सदा लिया

माँ बाप को न पूछा कभी जीते जी मगर
दीवार पे उन्हीं का है फोटो सजा लिया

'नीरज' उसी के नाम से काटो ये ज़िन्दगी
इक बार जिसको आपने दिल में बसा लिया

ooo

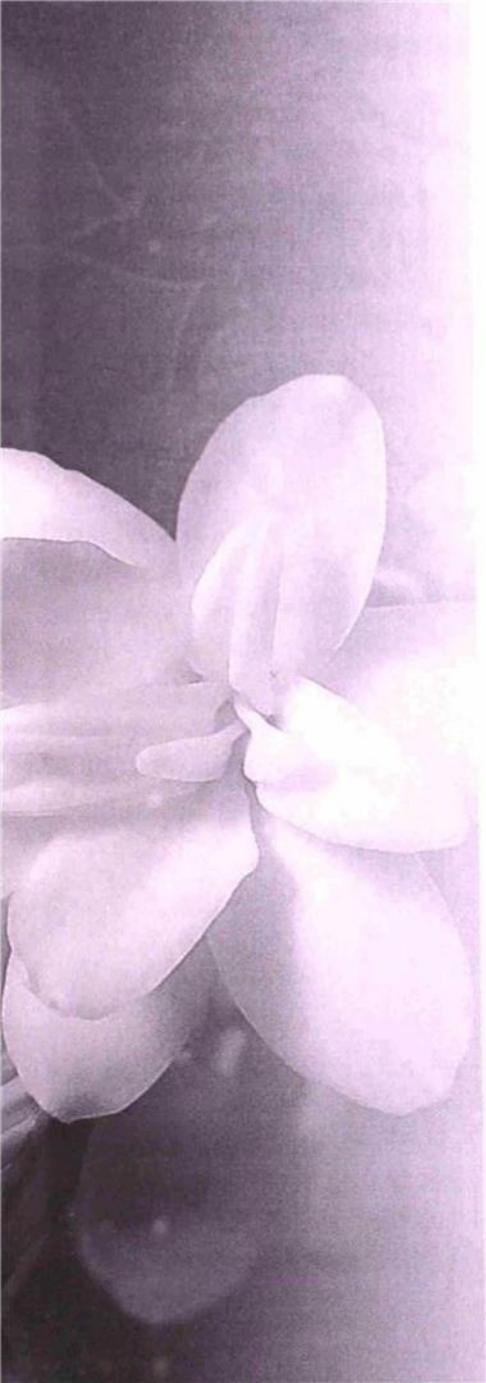

क्यों, कैसे ये मत सोचो
होता है जो होने दो

चैन चलो पाया कुछ तो
जब भी पूजा पत्थर को

प्यार मिलेगा बदले में
पहले प्यार किसी को दो

किसको देता है सब कुछ
नीली छतरी वाला वो

जो देखा, सच बोल दिया
तुम क्या नन्हे मुन्ने हो

काँटों वाली राहों में
फूलों वाले पौधे बो

याद में उसकी ऐ *'नीरज'*
रोना है तो खुलकर रो

ooo

साफ़ कह दीजिये नहीं आना
आड़ मत लीजिये बहाने की

चाह तुझ को नहीं है पाने की
ख़ासियत ये तेरे दिवाने की

ग़ैर का साथ ग़ैर के क़िस्से
ये तो हद हो गई सताने की

साथ फूलों के वो रहा जिसने
ठान ली ख़ार से निभाने की

टूट बिखरेगा दिल का हर रिश्ता
छोड़िये ज़िद ये आज़माने की

सारी ख़ुशियों को लील जाती है
होड़ सबसे अधिक कमाने की

नाचिये, थाप जब उठे दिल से
फ़िक्र मत कीजिये ज़माने की

साफ़ कह दीजिये नहीं आना
आड़ मत लीजिये बहाने की

फेंक दरवाज़े तोड़ कर *'नीरज'*
देख फिर शान आशियाने की

ooo

मुम्बइया ज़बान की ग़ज़ल

बे-मतलब इन्सान भिड़ू
होता है हलकान भिड़ू

अख्खा लाइफ़ मच मच में
काटे वो, नादान भिड़ू

प्यार अगर लफड़ा है तो
ये लफड़ा वरदान भिड़ू

कैसे हम बिन्दास रहें
ग़म लाखों, इक जान भिड़ू

बात अपुन की सिंपल है
दे, फिर ले सम्मान भिड़ू

जब जी चाहे टपका दे
रब तो है इक डान भिड़ू

फुल टू मस्ती में गा रे
तू जीवन का गान भिड़ू

सब झगड़े खल्लास करे
छोटी सी मुस्कान भिड़ू

जीवन है सूखी रोटी
तू 'मस्का-बन' मान भिड़ू

'खोखा' 'पेटी' ले डूबी
हम सब का ईमान भिड़ू

'नीरज' उसकी वाट लगा
जो दिखलाये शान भिड़ू

ooo

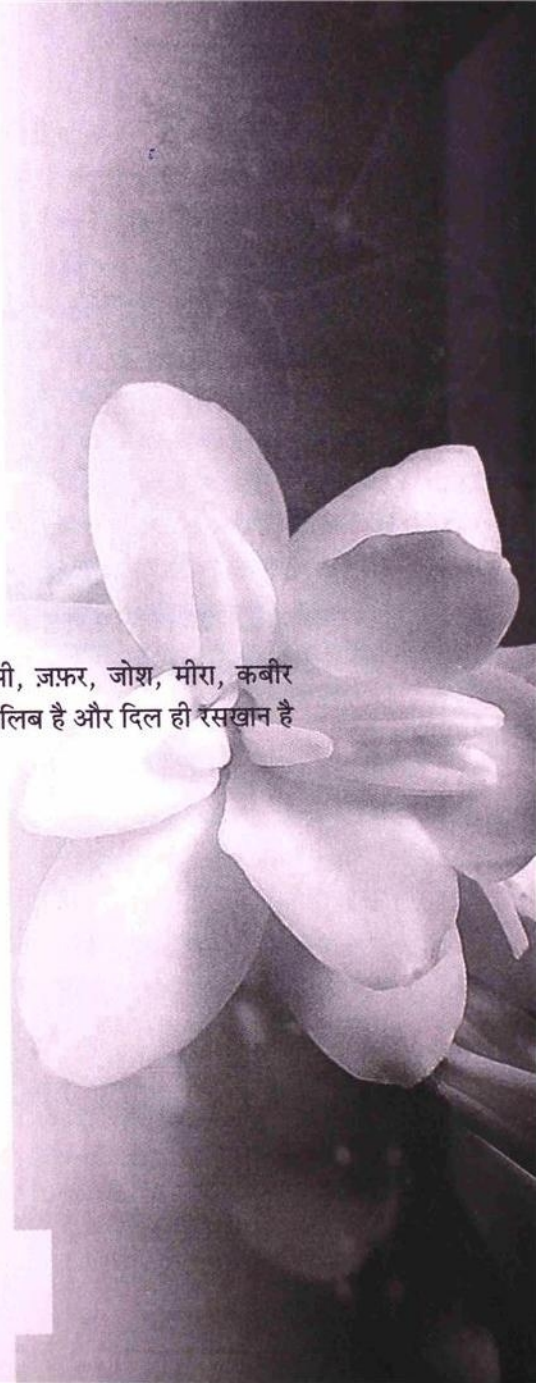

मीर, तुलसी, ज़फ़र, जोश, मीरा, कबीर
दिल ही ग़ालिब है और दिल ही रसखान है

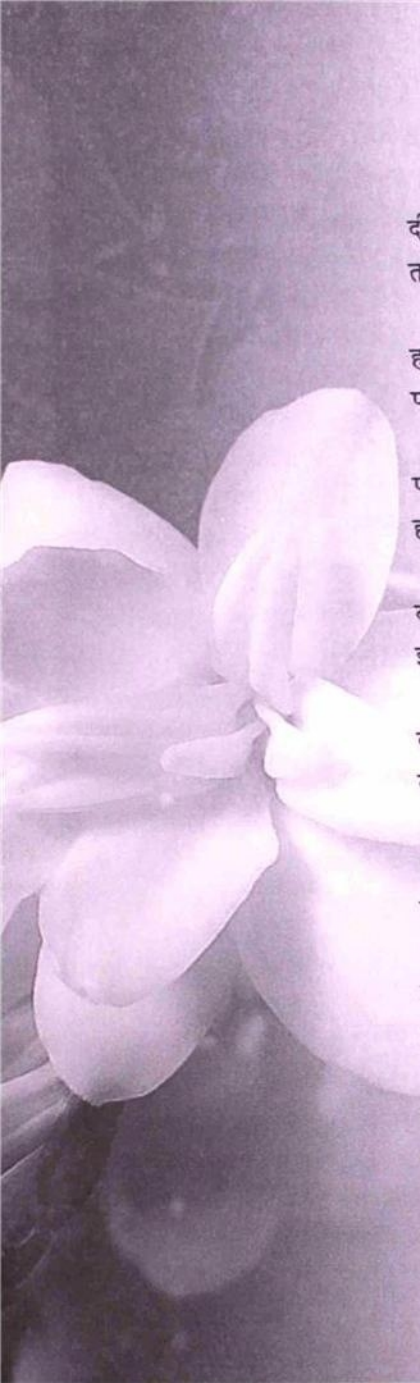

दीप जलते रहें झिलमिलाते रहें
तम सभी के दिलों से मिटाते रहें

हर अमावस दिवाली लगे आप जब
पास बैठे रहें, मुस्कुराते रहें

प्यार बासी हमारा न होगा अगर
हम बुलाते रहें वो लजाते रहें

बात सच्ची कही तो लगेगी बुरी
झूठ ये सोच कर क्यूँ सुनाते रहें

दर्द में बिलबिलाना तो आसान है
लुत्फ़ है,दर्द में खिलखिलाते रहें

भूलने की सभी को है आदत यहाँ
कर भलाई उसे मत गिनाते रहें

सच कहूँ तो सफल वो ग़ज़ल है जिसे
लोग गाते रहें गुनगुनाते रहें

हैं पुराने भी *'नीरज'* बहुत कारगर
पर तरीके नये आजमाते रहें

ooo

रंज़िशों को अलविदा की, यूँ करें तैयारियाँ
दिल के गुलशन में उगायें प्यार की फुलवारियाँ

ज़ख़्म जो देती हैं ये, ताउम्र वो भरते नहीं
ख़ंजरों से तेज़ होती हैं, ज़बाँ की आरियाँ

छत, दरो-दीवार, खिड़की, या झरोखे से नहीं
घर बुलाता है अगर, गूँजें वहाँ किलकारियाँ

चंद लम्हों बाद थक कर सुख तो पीछे रह गया
पर चलीं बरसों हमारे साथ में दुश्वारियाँ

ज़िन्दगी, आनन्द से जीना है तो फिर छोड़ दें
झूठ, ग़ुस्सा, डाह, लालच, वासना, मक्करियाँ

आप तो सो जाएँगे महफ़ूज़ बँगलों में कहीं
शहर को सुलगायेंगी अल्फ़ाज़ की चिंगारियाँ

काश इस होली में मज़्हब का ना कोई फ़र्क़ हो
रंग हों बस प्यार के, ख़ुशियों की हों पिचकारियाँ

ooo

1 अल्फ़ाज़ = शब्द

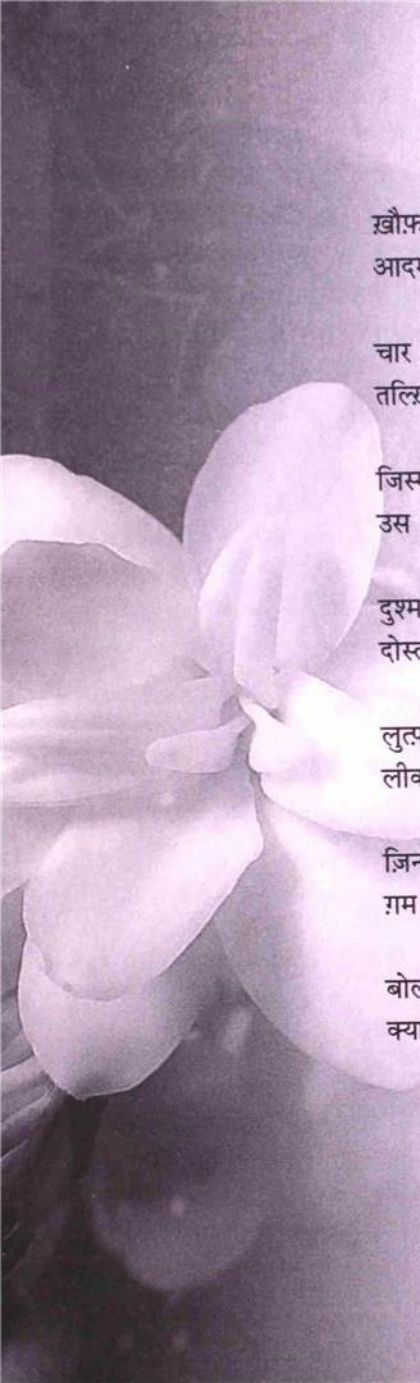

ख़ौफ़ का जो कर रहा व्यापार है
आदमी वो मानिये बीमार है

चार दिन की ज़िन्दगी में क्यूँ बता
तल्ख़ियाँ हैं, दुश्मनी, तकरार है

जिस्म से चल कर रुके, जो जिस्म पर
उस सफ़र का नाम ही, अब प्यार है

दुश्मनों से बच गए, तो क्या हुआ
दोस्तों के हाथ में तलवार है

लुत्फ़ है जब राह अपनी हो अलग
लीक पर चलना, कहाँ दुश्वार है

ज़िन्दगी भरपूर जीने के लिए
ग़म, ख़ुशी में फ़र्क़ ही बेकार है

बोल कर सच फ़िर बना *'नीरज'* बुरा
क्या करे आदत से वो लाचार है

ooo

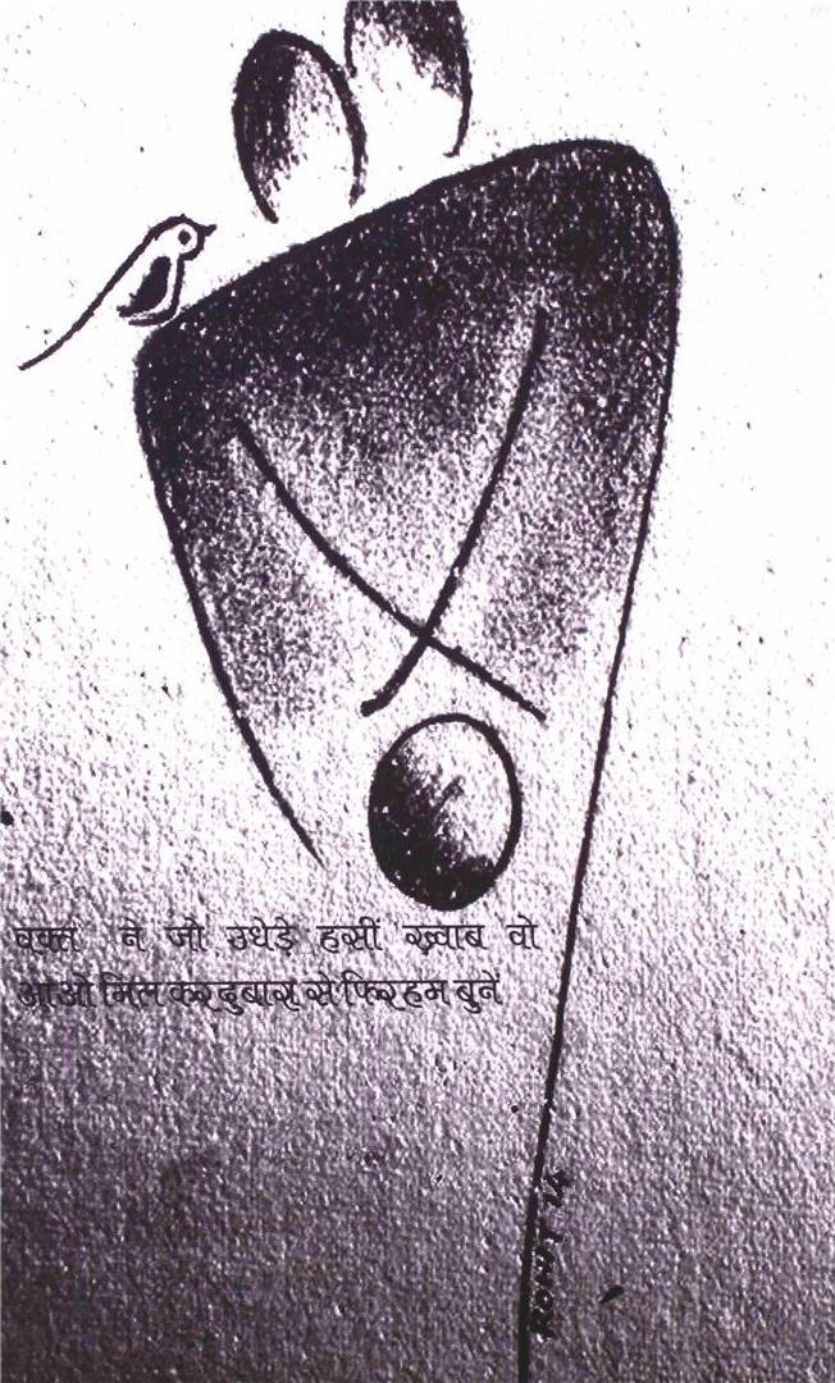
वक्त ने जो उधेड़े हसीं ख्वाब वो
आओ मिल कर दुबारा से फिर हम बुनें

उलझनें उलझनें उलझनें उलझनें
कुछ वो चुनती हमें, कुछ को हम ख़ुद चुनें

जो नचाती हमें थीं भुला सारे ग़म
याद करते ही तुझको बजी वो धुनें

पूछिये मत ख़ुशी आप उस पेड़ की
जिसकी शाख़ें परिंदों के गाने सुनें

वक़्त ने जो उधेड़े हसीं ख़्वाब वो
आओ मिल कर दुबारा से फिर हम बुनें

सिर्फ़ पढ़ने से होगा क्या हासिल भला
ज़िन्दगी में न जब तक पढ़े को गुनें

जो भी सच है कहो वो बिना ख़ौफ़ के
तन रहीं है निगाहें तो बेशक तनें

अब रिआया समझदार *'नीरज'* हुई
हुक्मराँ बंद वादों की कर ये धुनें

ooo

सब को अपना हाल सुनाना, ठीक नहीं
यूँ औरों के दर्द जगाना, ठीक नहीं

हम आँखों की भाषा भी पढ़ लेते हैं
हमको बच्चों सा फुसलाना, ठीक नहीं

ये चिंगारी दावानल बन सकती है
गर्म हवा में इसे उड़ाना, ठीक नहीं

बातों से जो मसले हल हो सकते हैं
उनके कारण बम बरसाना, ठीक नहीं

बच्चों को अपना बचपन तो जीने दो
यूँ बस्तों का बोझ बढ़ाना, ठीक नहीं

ज़िद पर अड़ने वालों को छोड़ो यारों
दीवारों से सर टकराना, ठीक नहीं

देने वाला घर बैठे भी देता है
दर-दर हाथों को फैलाना, ठीक नहीं

सोते में ही ये मुफ़लिस मुस्काता है
'नीरज' इस को अभी जगाना, ठीक नहीं

ooo

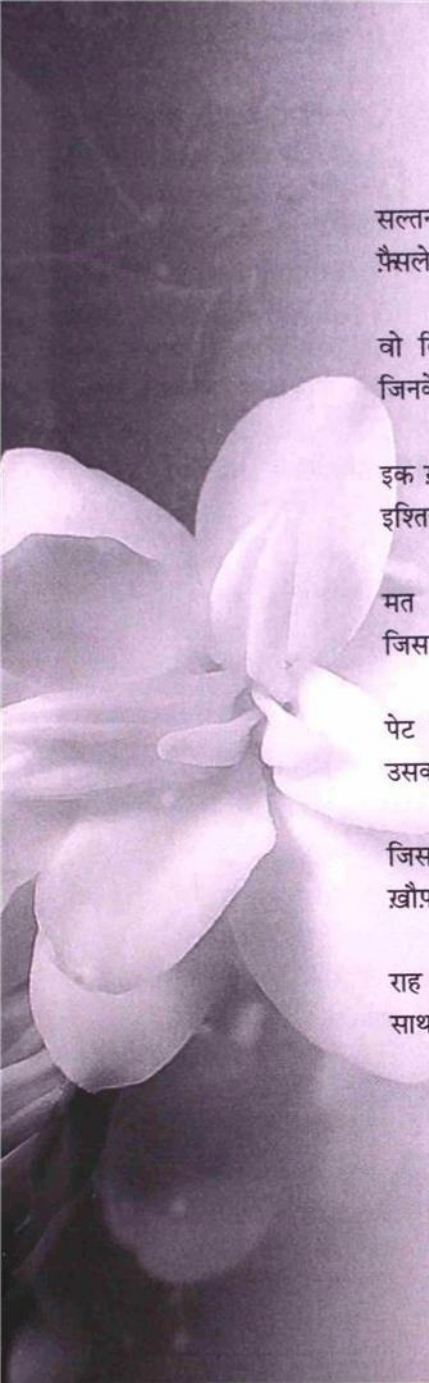

सल्तनत ख़ुद को माने, समझदार है,
फ़ैसले देख लगता है, बीमार है

वो किसी बात पर भी झगड़ते नहीं
जिनके दिल में ख़ुदा के लिए प्यार है

इक ख़बर दब गयी, सबको मालूम है,
इश्तिहारों भरा आज अख़बार है।

मत करें दोस्ती आप उस फूल से
जिसकी ख़िदमत में तैनात हर ख़ार है

पेट की आग से जन्म लेता है जो
उसकी आँखों में देखो वो अंगार है

जिसकी फ़ितरत में सच बोलना हो उसे
ख़ौफ़ कोई दिखाना ही बेकार है

राह राही की आसान हो जाएगी
साथ चलने को *'नीरज'* जो तैयार है

ooo

तुझे दिल याद करता है तो नग़मे गुनगुनाता हूँ
जुदाई के पलों की मुश्किलों को यूँ घटाता हूँ

जिसे सब ढूँढ़ते फिरते हैं मंदिर और मस्जिद में
हवाओं में उसे हरदम मैं अपने साथ पाता हूँ

अदावत से न सुलझे हैं, न सुलझेगें कभी मसले
हटा तू राह के काँटे, मैं लाकर गुल बिछाता हूँ

नहीं तहज़ीब ये सीखी कि कह दूँ झूठ को भी सच
ग़लत जो बात लगती है ग़लत ही मैं बताता हूँ

मुझे मालूम है मैं फूल हूँ झर जाऊँगा इक दिन
मगर ये हौसला मेरा है हरदम मुस्कुराता हूँ

नहीं जब छाँव मिलती है कहीं भी राह में मुझको
सफ़र में अहमियत मैं तब शजर की जान जाता हूँ

उतरता हूँ मैं *'नीरज'* बीज बन धरती के सीने में
तभी तो फस्ल बनकर झूमता हूँ लहलहाता हूँ

ooo

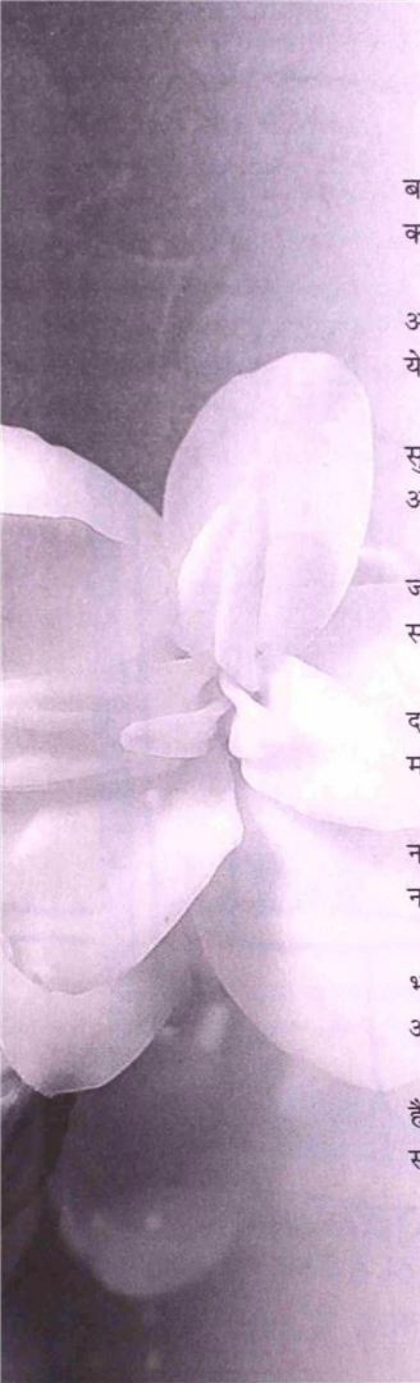

बरसती घटा में नहा कर चलें
कड़ी धूप में सर उठा कर चलें

अगर ये फ़सादों की जड़ बन गये
ये झंडे नहीं क्यों मिटा कर चलें

सुकूँ से सफ़र ज़िन्दगी का कटे
अगर बोझ सर का घटा कर चलें

जटिल है सयानों की दुनिया बहुत
सरल क्यूँ न इसको बना कर चलें

दरारें हैं रिश्तों में सबको पता
मज़ा है अगर ढँक-ढँका कर चलें

न ख़ारिज करें एक नादान को
नयी नस्ल को ये सिखा कर चलें

भले साथ अपने हो कोई नहीं
अकेले ही हम गुनगुना कर चलें

है *'नीरज'* कठिन पर असम्भव नहीं
सभी के दिलों में समा कर चलें

०००

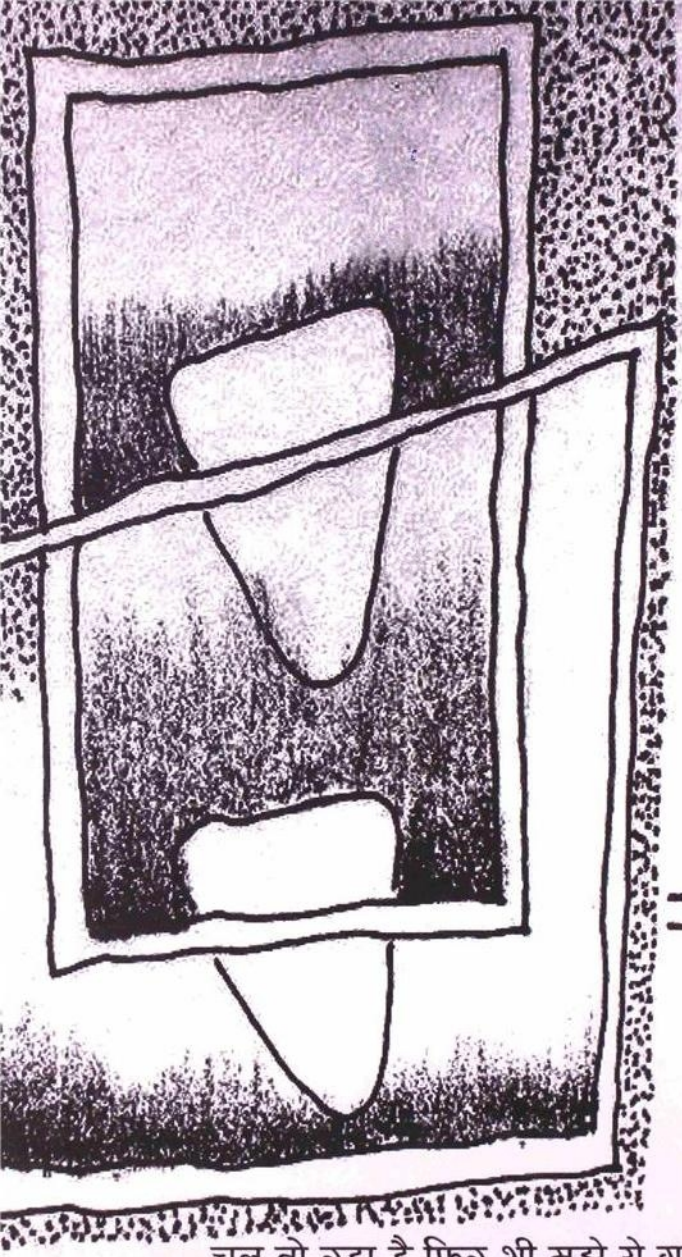

चल तो रहा है फिर भी मुझे ये गुमाँ हुआ
थम सा गया है वक़्त तेरे इन्तज़ार में